॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

1809

गयाश्राद्धपद्धति

[माहात्म्य तथा गयायात्राविधानसहित]

गयामें फल्गु-तटपर श्राद्ध

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- निवेदन	६
२- भगवान् आदिगदाधरकी स्तुति	१०
३- गया-माहात्म्य	११
[१] गयामें पिण्डदान करनेसे पुत्रकी प्राप्ति तथा पितरोंका उद्धार	१६
[२] गयाश्राद्धसे प्रेतयोनिसे मुक्ति	१७
[३] गयाके नामकरणमें गयासुरकी कथा	१७
[४] गयाके पुण्यप्रदस्थान	२०
४- गयाश्राद्धका काल	२५
५- गयायात्रासम्बन्धी जाननेयोग्य आवश्यक बातें	२६
[१] पितरोंकी प्रसन्नतासे श्राद्धकर्ताका परम कल्याण	३०
[२] यात्राकी सम्पन्नता	३०
[३] भ्रमनिवारण	३०
[४] पादगया, नाभिगया तथा कपालगयाकी यात्राका क्रम	३१

६ - प्रमाण-संग्रह ३२
७ - गयाश्राद्धकी सामग्री ४८
८ - गयायात्रांगभूतघृतश्राद्ध [गयायात्रा करनेके पूर्व घृतश्राद्धकी विधि] ५०
९ - घृतश्राद्धके अनन्तरके कृत्य एवं गयायात्राप्रारम्भ ९२
१० - गयामें श्राद्धका क्रम ९६
[१] गयातीर्थमें सत्रह दिनके श्राद्धस्थलोंकी तालिका ९८
[२] पुनःपुनातीर्थमें श्राद्ध १०१
[३] गयातीर्थमें सत्रह दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य १०२
[४] गयातीर्थमें सात दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य ११६
[५] गयातीर्थमें पाँच दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य ११९
[६] गयातीर्थमें तीन दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य १२०
[७] गयातीर्थमें एक दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य १२१
११ - तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तर्पण-प्रयोग १२२
१२ - तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्ध १३६
१३ - तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्ध १८७

१४-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध २१८
१५-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक एकपिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध २३८
१६-श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् २५१
१७-श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामावलिः २५३
१८-गदाधरस्तोत्र २५६

चित्रसूची

१-फल्गुनदीके तटपर पिण्डदान .... (रंगीन) .... आवरण-पृष्ठ
२-गयासुरकी देहपर अवस्थित भगवान् आदिगदाधर .... (रेखाचित्र) १९
२-पार्वणविधिसे किये जानेवाले गयायात्रांगभूत-घृतश्राद्धका स्वरूप (,,) ५२
३-पात्रालम्भन .... (,,) ६५, ७२, १५०, १५५, १९६
४-अंगुष्ठनिवेशन .... (,,) ६५, ७२
५-हाथमें तीर्थ .... (,,) १२३
६-प्राजापत्यतीर्थ (कायतीर्थ) .... (,,) १२४
७-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक नवदैवत्य पार्वणश्राद्धका स्वरूप .... (,,) १३८
८-भगवान् विष्णु .... (,,) २५१

निवेदन

'पुन्नामनरकात् त्रायते इति पुत्रः' नरकसे जो त्राण (रक्षा) करता है, वही पुत्र है। सामान्यतः जीवसे इस जीवनमें पाप और पुण्य दोनों होते हैं, पुण्यका फल है—स्वर्ग और पापका फल है—नरक। नरकमें पापीको घोर यातनाएँ भोगनी पड़ती हैं। स्वर्ग-नरक भोगनेके बाद जीव पुनः अपने कर्मोंके अनुसार चौरासी लाख योनियोंमें भटकने लगता है। पुण्यात्मा मनुष्ययोनि अथवा देवयोनि प्राप्त करते हैं; पापात्मा पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि तिर्यक् एवं अन्यान्य निम्न योनियाँ प्राप्त करते हैं। अतः अपने शास्त्रोंके अनुसार पुत्र-पौत्रादिका यह कर्तव्य होता है कि वे अपने माता-पिता तथा पूर्वजोंके निमित्त श्रद्धापूर्वक कुछ ऐसे शास्त्रोक्त कर्म करें, जिससे उन मृत प्राणियोंको परलोकमें अथवा अन्य योनियोंमें भी सुखकी प्राप्ति हो सके; इसलिये भारतीय संस्कृति तथा सनातनधर्ममें पितृ-ऋणसे मुक्त होनेके लिये अपने माता-पिता तथा परिवारके मृत प्राणियोंके निमित्त श्राद्ध करनेकी अनिवार्य आवश्यकता बतायी गयी है। श्राद्धकर्मको पितृ-कर्म भी कहते हैं। पितृ-कर्मसे तात्पर्य पितृ-पूजासे है।

पुत्रके लिये शास्त्रोंमें तीन बातें मुख्य रूपसे बतायी गयी हैं—

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात् । गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता॥

(श्रीमद्देवीभागवत ६।४।१५)

अर्थात्—

(१) जीवित अवस्थामें माता-पिताकी आज्ञाका पालन करना।

(२) उनकी मृत्युके अनन्तर श्रद्धापूर्वक श्राद्धमें अपनी सामर्थ्यानुसार खूब भोजन कराना।

(३) उनके निमित्त गयामें पिण्डदान करना।

—ये तीन बातें पूरी करनेवाले पुत्रका पुत्रत्व सार्थक है।

सामान्यतः कई लोग माता-पिताकी मृत्युके उपरान्त उनका और्ध्वदैहिक-संस्कार, दशगात्र तथा सपिण्डन आदि कार्य तो करते हैं, परंतु आलस्य और प्रमादवश गया जाकर पिण्डदान करनेका महत्त्व नहीं समझते। कभी-कभी कुछ लोग भयवश गया-श्राद्धके लिये जाते हैं, किसीको संतान नहीं होती है अथवा कोई बहुत विपत्ति आ जाती है, जिसके लिये उन्हें बताया जाता है कि पितृ-दोषके कारण यह सब आपत्तियाँ हैं। गयामें श्राद्ध करनेसे इनका निवारण हो सकता है; तब वे अपनी कामनाकी पूर्तिके निमित्त गयाश्राद्धके लिये जाते हैं। इस निमित्तसे भी गयामें जाकर श्राद्ध करना उत्तम है, परंतु वास्तवमें तो प्रत्येक व्यक्तिको अपने अनिवार्य कर्तव्यकी दृष्टिसे अपने माता-पिताका गया जाकर श्राद्ध करना चाहिये, जिससे स्वाभाविक रूपसे वे पितृ-दोषसे मुक्त रहेंगे।

पितृ-ऋणसे मुक्त होनेके लिये जैसे माता-पिता तथा पूर्वजोंका वार्षिक श्राद्ध आदि करना आवश्यक है, उससे कम आवश्यक गयाश्राद्ध करना नहीं है। अतः माता-पिता तथा पूर्वजोंके कल्याणके लिये गया जाकर पिण्डदान अवश्य करना चाहिये। गयामें माता-पिताके साथ अपने पितृकुल, मातृकुल, निकटतम सम्बन्धीगण, इष्ट-मित्र, पुराने सेवक तथा आश्रितजन—सबको पिण्ड देनेका विधान है। गयामें जिनके निमित्त पिण्ड प्रदान किया जाता है, उनकी तो उत्तम

गति होती ही है, स्वयं कर्ता तथा उसके सहयोगी भाई-बन्धुजनोंका भी कल्याण होता है। श्राद्धकर्ता भी पितृ-ऋणसे मुक्त हो जाता है—

'निष्कृतिः श्राद्धकर्तृणां ब्रह्मणा गीयते पुरा॥' (वायुपु० ११०।१)

इस प्रकार शास्त्रोंमें गयामें पिण्डदान करनेकी अनिवार्य तथा अतुलित महिमा बतायी गयी है।

कुछ दिनों पूर्व गीताप्रेसद्वारा 'अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश' पुस्तकका प्रकाशन किया गया था, जिसका उद्देश्य यह था कि सर्वसाधारणको शास्त्रानुसार अन्तिम समयके कृत्य, श्राद्धकी प्रक्रिया और इसके विधि-विधानकी सरल भाषामें सामान्य जानकारी हो सके, इसके साथ ही साधारण विद्वान् पण्डित भी, जो इस विधासे पूर्ण परिचित नहीं हैं, वे भी इस ग्रन्थके आधारपर आवश्यकतानुसार श्राद्धादिकृत्य करानेमें सक्षम हो जायँ।

श्रद्धालुजनोंका यह आग्रह था कि इसी प्रकारकी एक पुस्तक गयाश्राद्धपद्धतिके रूपमें गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित होनी चाहिये। भगवत्कृपासे यह कार्य सम्पन्न हो सका है।

इस पुस्तकके सम्पादनमें प्रयागके हरीराम गोपालकृष्ण सनातनधर्म संस्कृत महाविद्यालयके अवकाशप्राप्त प्राचार्य पं० श्रीरामकृष्णजी शास्त्रीका निष्कामभावसे पूर्ण योगदान प्राप्त हुआ है। इनके अथक परिश्रम एवं पूर्ण तत्परतासे ही इस रूपमें यह पुस्तक तैयार हो सकी; इसके लिये हम उनके प्रति हृदयसे आभार व्यक्त करते हैं।

इस पुस्तककी विशेषता यह है कि इसमें संकल्पयोजना तथा मन्त्रभाग संस्कृतमें पूर्णरूपसे लिखा गया है तथा क्रिया आदिका संकेत भी स्पष्टतासे सरल हिन्दी भाषामें कर दिया गया है, जिससे कार्य-सम्पादनमें किसी

प्रकारकी कठिनाईका अनुभव न हो तथा साधारण शिक्षित व्यक्ति भी इस ग्रन्थके अनुसार गयाश्राद्धका कार्य सांगोपांगरूपमें सम्पन्न कर सके।

इस ग्रन्थमें गयामाहात्म्य—महिमा, गयाश्राद्धका काल, गयायात्रासम्बन्धी जाननेयोग्य आवश्यक बातें, श्राद्धसे सम्बन्धित प्रमाणोंका संकलन, यात्राकी प्रक्रिया, गयामें होनेवाले श्राद्धका क्रम, तर्पणप्रयोग, पार्वणश्राद्ध, तीर्थश्राद्ध तथा श्राद्धकी पिण्डदानात्मक एवं एकपिण्डदानात्मक आदि प्रक्रियाओंको विधिपूर्वक सांगोपांगरूपमें प्रस्तुत करनेका प्रयास किया गया है।

श्राद्धकी क्रियाएँ इतनी सूक्ष्म हैं कि इन्हें सम्पन्न करनेमें अत्यधिक सावधानीकी आवश्यकता है। इसके लिये इससे सम्बन्धित बातोंकी जानकारी होना भी परम आवश्यक है। इस दृष्टिसे गयाश्राद्धसे सम्बन्धित आवश्यक बातें आगे लिखी जा रही हैं, जो सभीके लिये उपादेय हैं। अतः इन्हें अवश्य पढ़ना चाहिये।

आशा है सर्वसाधारण-जन इस पुस्तकसे लाभान्वित होंगे।

इस घोर कलिकालमें कर्मोंके लोप होनेसे यदि इस ग्रन्थके द्वारा भगवत्कृपासे किंचित् रक्षा हो सकी तथा सर्वसाधारण-जनोंके कल्याणमें यह निमित्त बन सका तो प्रस्तुत प्रकाशन सार्थक होगा।

—राधेश्याम खेमका

भगवान् आदिगदाधरकी स्तुति

अव्यक्तरूपो यो देवो मुण्डपृष्ठाद्रिरूपतः। फल्गुतीर्थादिरूपेण नमाम्यादिगदाधरम्॥
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपेण पदरूपेण संस्थितः। मुखादिलिङ्गरूपेण नमाम्यादिगदाधरम्॥
शिलायां देवरूपिण्यां स्थितं ब्रह्मादिभिः सुरैः। पूजितं सत्कृतं देवैस्तं नमामि गदाधरम्॥
यं च दृष्ट्वा ततः स्पृष्ट्वा पूजयित्वा प्रणम्य च। श्राद्धादौ ब्रह्मलोकाप्तिर्नमाम्यादिगदाधरम्॥
महदादेश्च जगतो व्यक्तस्यैकं हि कारणम्। अव्यक्तज्ञानरूपं तं नमाम्यादिगदाधरम्॥
देहेन्द्रियमनोबुद्धिप्राणाहङ्कारवर्जितम्। जाग्रत्स्वप्नविनिर्मुक्तं नमाम्यादिगदाधरम्॥
नित्यानित्यविनिर्मुक्तं सत्यमानन्दमव्ययम्। तुरीयं ज्योतिरात्मानं नमाम्यादिगदाधरम्॥

जो अव्यक्तस्वरूप भगवान् [व्यक्तस्वरूप धारणकर] मुण्डपृष्ठपर्वत एवं फल्गुतीर्थप्रभृति अन्यान्य तीर्थोंके स्वरूपमें विराजमान हैं, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। जो व्यक्ताव्यक्त-स्वरूप धारणकर चरण, मुखादि चिह्नोंके रूपमें विराजमान हैं, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। जो देवस्वरूपिणी शिलापर ब्रह्मा आदि त्रिदेवों एवं देवगणोंद्वारा पूजित तथा सत्कृत होकर अवस्थित हैं, उन गदाधरको नमस्कार है। श्राद्ध आदि कर्मोंमें जिनका दर्शन, स्पर्श, पूजन एवं प्रणाम करके प्राणी ब्रह्मलोकको प्राप्त करता है, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। महदादि व्यक्तजगत्के जो एकमात्र कारणस्वरूप हैं, अव्यक्त एवं ज्ञानस्वरूप हैं, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। जो शरीर, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्राण एवं अहंकारसे विवर्जित एवं जागरण तथा स्वप्नसे विहीन हैं, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। जो नित्य एवं अनित्यके प्रपंचोंसे रहित, सत्स्वरूप, आनन्दस्वरूप, अव्यय, तुरीय, आत्मरूप एवं ज्योतिस्वरूप हैं, उन आदिगदाधरको नमस्कार है। ***(वायुपुराण अ० १०९)***

गया-माहात्म्य

पिण्डदान तथा श्राद्धादिके लिये तीर्थोंमें गयाधामका विशेष महत्त्व है। गयाकी प्रसिद्धि पितृतीर्थके रूपमें सर्वविश्रुत है। श्रद्धालुजन अन्य तीर्थोंकी यात्रा स्नान-दान, देवदर्शन, पुण्यार्जन आदिकी दृष्टिसे भी करते हैं, किंतु गयाजीमें तो विशेषरूपसे श्राद्धादि कर्म सम्पन्न करनेके लिये ही प्रायः यात्री जाते हैं। शास्त्रोंने यह बताया है कि यहाँ पितर नित्य निवास करते हैं और यह तीर्थ पितरोंको अत्यन्त प्रिय है—'**पितृणां चातिवल्लभम्।**' (कूर्मपु० उ०वि० ३४।७)

पितृगण कहते हैं कि जो पुत्र गयायात्रा करेगा, वह हम सबको इस दुःख-संसारसे तार देगा। इतना ही नहीं, इस तीर्थमें अपने पैरोंसे भी जलका स्पर्शकर पुत्र हमें क्या नहीं दे देगा—'**गयां यास्यति यः पुत्रः स नस्त्राता भविष्यति। पद्भ्यामपि जलं स्पृष्ट्वा सोऽस्मभ्यं किं न दास्यति॥**' (वायुपु० १०५।९)

मनुष्यको बहुत-से पुत्रोंकी इसीलिये कामना करनी चाहिये कि उनमेंसे कोई एक भी गया हो आये अथवा अश्वमेधयज्ञ करे अथवा पितरोंकी सद्गतिके लिये नीलवृषभका उत्सर्ग करे—

एष्टव्याः बहवः पुत्रा यद्येकोऽपि गयां व्रजेत्। यजेत वाश्वमेधेन नीलं वा वृषमुत्सृजेत्॥

(वायुपु० १०५।१०, पद्मपु० स्वर्गखण्ड ३८।१७, वाल्मीकीय रामायण २।१०७।१३)

यहाँतक कहा गया है कि श्राद्ध करनेकी दृष्टिसे पुत्रको गयामें आया देखकर पितृगण अत्यन्त प्रसन्न होकर उत्सव मनाते हैं—'**गयाप्राप्तं सुतं दृष्ट्वा पितॄणामुत्सवो भवेत्।**' (वायुपु० १०५।९)

वास्तवमें पुत्रकी यथार्थता तो गयातीर्थमें जाकर उनके उद्धारके लिये श्राद्धादि कर्म करनेसे ही है—

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्। गयायां पिण्डदानाच्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता॥

(श्रीमद्देवीभा० ६।४।१५)

अर्थात् जीवितावस्थामें माता-पिताकी आज्ञाका पालन करने, श्राद्धमें खूब भोजन कराने और गयातीर्थमें पिण्डदान करनेवाले पुत्रका पुत्रत्व सार्थक है। जो व्यक्ति गया जानेमें समर्थ होते हुए भी नहीं जाता है, उसके पितर सोचते हैं कि उनका अर्थात् पितरोंका लालन-पालन आदि परिश्रम व्यर्थ है—

'गयाभिगमनं कर्तुं यः शक्तो नाभिगच्छति। शोचन्ति पितरस्तेषां वृथा तस्य परिश्रमः॥'

गयामें ऐसा कोई स्थान नहीं है, जो तीर्थ न हो। वहाँ सभी तीर्थोंका सांनिध्य है। इसलिये वह सर्वश्रेष्ठ तीर्थ है—

गयायां न हि तत्स्थानं यत्र तीर्थं न विद्यते। सांनिध्यं सर्वतीर्थानां गयातीर्थं ततो वरम्॥

(वायुपु० १०५।४६)

पूर्वजोंको तारनेवाले सभी देवता, सर्वाक्षरमय ओंकार तथा सभी देवताओंसहित भगवान् विष्णु यहाँ आदिगदाधर नामसे निवास करते हैं। यहीं वह धर्मशिला भी है, जो प्रेतयोनिसे मुक्ति दिलानेवाली है। अन्तःसलिला फल्गुनदी यहीं बहती है। विष्णुपदतीर्थमें भगवान् आदिगदाधरके पवित्र चरण विद्यमान हैं। यहाँका श्राद्ध पितरोंके उद्धारके लिये सर्वोपरि साधन है। यहाँ वह अक्षयवट है, जो सभी प्रकारके मनोरथोंको पूर्ण करनेवाला है और सभी सत्कर्मानुष्ठानोंके फलको अक्षय बना देनेवाला है। गयाधाम पूर्वजोंके उद्धारके लिये सर्वश्रेष्ठ स्थान है। ब्रह्मज्ञान, गयाश्राद्ध, गोशालामें मृत्युलाभ तथा कुरुक्षेत्रमें निवास—ये चार कर्म पुरुषोंके लिये मोक्षदायक हैं, किंतु वेदव्यासजी बताते हैं कि इनमें भी पुत्रद्वारा गयामें जाकर *श्राद्धादि कर्म करनेका विशेष*

महत्त्व है—

ब्रह्मज्ञानं गयाश्राद्धं गोगृहे मरणं तथा। वासः पुंसां कुरुक्षेत्रे मुक्तिरेषा चतुर्विधा॥
ब्रह्मज्ञानेन किं कार्यं गोगृहे मरणेन किम्। वासेन किं कुरुक्षेत्रे यदि पुंसो गयां व्रजेत्॥

(वायुपु० १०५।१६-१७)

यह बताया गया है कि गयाके लिये घरसे प्रस्थानमात्र कर देनेसे कर्ताका वह गमनरूपी प्रत्येक पद पितरोंके लिये स्वर्गगमनकी सीढ़ी बन जाता है—

'गृहाच्चलितमात्रेण गयायां गमनं प्रति। स्वर्गारोहणसोपानं पितॄणां च पदे पदे॥' (वायुपु० १०५।३१)

ब्रह्माजीने तो यहाँतक भी बताया है कि गयाश्राद्ध करनेसे पितरोंका उद्धार तो हो ही जाता है, श्राद्धकर्ताका भी परम कल्याण हो जाता है—**'निष्कृतिः श्राद्धकर्तॄणां ब्रह्मणा गीयते पुरा॥'** (वायुपु० ११०।१)

गयामें आदिगदाधरदेवका ध्यान करते हुए श्राद्ध एवं पिण्डदानादि करनेवाला अपने सौ कुलोंका उद्धारकर समस्त पितृगणोंको ब्रह्मलोककी प्राप्ति कराता है—

आद्यं गदाधरं ध्यायन् श्राद्धपिण्डादिदानतः। कुलानां शतमुद्धृत्य ब्रह्मलोकं नयेत्पितॄन्॥

(वायुपु० ११२।५९)

अग्निपुराणमें बताया गया है कि गयामें साक्षात् विष्णु ही पितृदेवके रूपमें विराजमान हैं, उन भगवान् कमलनयनका दर्शन करके मानव तीनों ऋणोंसे मुक्त हो जाता है—

गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः ॥ तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते वै ऋणत्रयात्।

(अग्निपु० ११६।१०-११)

किसी प्रसंगवश भी गयामें पहुँचकर कोई श्राद्ध करता है, तो वह अपने पितरोंको तार देता है और स्वयं भी परम गति प्राप्त करता है—

गयां प्राप्यानुषङ्गेण यदि श्राद्धं समाचरेत्। तारिताः पितरस्तेन स याति परमां गतिम्॥

पितृतीर्थ गयाकी इससे अधिक महिमा और विशेषता क्या हो सकती है कि कोई भी श्राद्धादि कर्म चाहे घरमें, गोशालामें, चाहे प्रयाग, काशी, पुष्कर, नैमिषारण्य, मातृतीर्थ सिद्धपुर अथवा गंगा आदि पुण्यतोया नदियोंके तटपर ही क्यों न हो रहा हो, सर्वत्र और सभी श्राद्धोंको प्रारम्भ करनेके पूर्व गयाधाम और भगवान् गदाधरका स्मरणकर उनका पूजन किया जाता है और यह समझा जाता है कि यह श्राद्ध फलावाप्तिमें गयामें किये गये श्राद्धके बराबर ही है। श्राद्धके प्रारम्भमें की जानेवाली स्मरण-प्रार्थनाका मन्त्र इस प्रकार है—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्।

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः।

अपना औरस पुत्र हो अथवा किसी अन्यका पुत्र हो, जब कभी गयाक्षेत्रकी पवित्र भूमिपर जिस-जिसके नामसे पिण्डदान करता है, उस-उसको वह पिण्ड शाश्वत ब्रह्मपदको प्राप्त कराता है। गयातीर्थमें जिस किसीके द्वारा भी जिस किसीका नाम-गोत्रका उच्चारणकर यदि पिण्ड दिया जाता है तो वह उसे परम गति प्राप्त करा देता है—

आत्मजोऽप्यन्यजो वापि गयाभूमौ यदा तदा। यन्नाम्ना पातयेत्पिण्डं तन्नयेद् ब्रह्मशाश्वतम्॥

नामगोत्रे समुच्चार्य पिण्डपातनमिष्यते। येन केनापि कस्मैचित् स याति परमां गतिम्॥

(वायुपु० १०५। १४-१५)

वे मनुष्य धन्य हैं, जो गयामें पिण्डदान करते हैं। वे दोनों (माता-पिता)-के कुलकी सात पीढ़ियोंका उद्धारकर स्वयं भी परमगति प्राप्त करते हैं—

धन्यास्तु खलु ते मर्त्या गयायां पिण्डदायिनः। कुलान्युभयतः सप्त समुद्धृत्याप्नुयात् परम्॥

(कूर्मपु०उ०वि० ३४। १५)

गयाजीमें पितरोंके साथ ही अपने लिये भी तिलके बिना पिण्डदान करनेका विधान है—

'पिण्डं दद्याच्च पित्रादेरात्मनोऽपि तिलैर्विना॥' (वायु० १०५। १२)

दण्डी-संन्यासी यदि गयाधाम पहुँच जाते हैं तो विष्णुपदमें दण्डका स्पर्श करा देनेसे पितरोंके साथ उनकी भी मुक्ति हो जाती है—

दण्डं प्रदर्शयेद् भिक्षुर्गयां गत्वा न पिण्डदः। दण्डं न्यस्य विष्णुपदे पितृभिः सह मुच्यते॥

(वायुपु० १०५। २६)

गरुडपुराणमें यह कहा गया है कि जिसने गरुडपुराण नहीं सुना और गया जाकर अपने पितरोंका श्राद्ध नहीं किया, वह पुत्र कैसे कहला सकता है और वह कैसे ऋणत्रय (देव-ऋण, ऋषि-ऋण तथा पितृ-ऋण)-से मुक्त हो सकता है—

न श्रुतं गारुडं येन गयाश्राद्धं च नो कृतम्। स कथं कथ्यते पुत्रः कथं मुच्येद् ऋणत्रयात्॥

(गयाश्राद्धमंजरीमें गरुडपुराणका वचन)

[१] गयामें पिण्डदान करनेसे पुत्रकी प्राप्ति तथा पितरोंका उद्धार

गयामें पिण्डदान करनेकी महिमाके सम्बन्धमें एक आख्यान प्राप्त होता है, जो इस प्रकार है—विशाला नगरीमें विशाल नामके एक राजा हुए। उन्हें कोई सन्तान नहीं थी। दुःखित राजाने ब्राह्मणोंसे पूछा कि मुझे पुत्रादिकी प्राप्ति किस प्रकार होगी? ब्राह्मणोंने कहा—राजन्! गयामें पिण्डदान करनेसे आपको सन्ततिकी प्राप्ति होगी। राजाने गया जाकर गयाशिरमें पिण्डदान किया तो उन्हें पुत्रकी प्राप्ति हुई। पिण्डदानके अनन्तर राजाको आकाशमें रक्तवर्ण, श्वेतवर्ण तथा कृष्णवर्णवाले तीन पुरुष दिखायी दिये। राजाने उनसे पूछा—आप लोग कौन हैं? इसपर श्वेतवर्णवाले पुरुषने कहा—मैं तुम्हारा पिता हूँ, इन्द्रलोकसे यहाँ आया हूँ। पुत्र! ये रक्तवर्णवाले हमारे पिता हैं, जो ब्रह्महत्याके पापका कष्ट भोग रहे हैं और ये तीसरे कृष्णवर्णवाले हमारे पितामह हैं, इन्होंने बहुत ऋषियोंका वध किया है—ये दोनों अवीची नामक नरकमें दुःख भोग रहे हैं। हे शत्रुकुलनाशक! 'मैं अपने पिता, पितामह एवं प्रपितामह लोगोंको सन्तुष्ट कर रहा हूँ'—ऐसा संकल्पकर हमारे निमित्त तुमने जो जलदान किया है, उसीके प्रभावसे हम तीनों ही एक साथ मुक्त हो गये हैं। हे श्रेष्ठ पुत्र! तुमने हम सबको दुःखसे उबार लिया, अब हमलोग परम सन्तुष्ट होकर उत्तम स्वर्ग जा रहे हैं—**मुक्तिः कृता त्वया पुत्र व्रजामः स्वर्गमुत्तमम्।** (वायुपु० ११२।१३)

पितरोंने यह भी बताया कि पुत्रोंको इसी प्रकार अपने पितरोंकी मुक्तिके लिये उपाय करना चाहिये—**एवं पुत्रैः पितॄणां च कर्तव्या मुक्तिरुत्तमा॥** (वायुपु० ११२।१३)

पितरोंसे आशीर्वाद प्राप्तकर अन्तमें राजा विशालने वैकुण्ठलोक प्राप्त किया।

[२] गयाश्राद्धसे प्रेतयोनिसे मुक्ति

वायुपुराण आदि कई पुराणोंमें आया है कि किसी प्रेतने एक वैश्यसे कहा कि 'आप मेरे नामसे गयाशिरमें पिण्डदान कर दें, इससे हमारी प्रेतयोनिसे मुक्ति हो जायगी। मेरा सम्पूर्ण धन आप ले लें और उसे लेकर मेरे उद्देश्यसे गयाश्राद्ध कर दें। इसके बदलेमें मैं अपनी सम्पत्तिका छठा अंश आपको पारिश्रमिकके रूपमें दे रहा हूँ। मैं आपको अपना नाम-गोत्रादि भी बता रहा हूँ।' प्रेतके अनुरोधपर उस वणिक्ने गयाकी यात्रा की और गयाशिरमें जाकर उस प्रेतके निमित्त पिण्ड प्रदान किया और उसके बाद अपने पितरोंका भी पिण्डदान किया। पिण्डदानके प्रभावसे वह प्रेत प्रेतयोनिसे मुक्त हो गया—'**प्रेतः प्रेतत्वनिर्मुक्तः**' (वायुपु० ११२।२०)। इसलिये कहा गया है कि गयाशिरमें जाकर जिन-जिनके नामसे मनुष्य पिण्डदान करता है, वे यदि नरकमें हैं तो स्वर्ग पहुँच जाते हैं और स्वर्गमें हैं तो मुक्ति प्राप्त करते हैं—

गयाशिरसि यः पिण्डान्येषां नाम्ना तु निर्वपेत्। नरकस्था दिवं यान्ति स्वर्गस्था मोक्षमाप्नुयुः॥

(वायुपु० १११।७४)

[३] गयाके नामकरणमें गयासुरकी कथा

पुराणोंमें गयासुरकी कथा विस्तारसे आयी है और यह बताया गया है कि गयासुरके नामपर ही इस तीर्थका 'गया' नाम पड़ा। कथाके अनुसार प्राचीनकालमें 'गय' नामक एक असुर था, वह भगवान् विष्णुका परम भक्त था। उसने कोलाहल नामक पर्वतपर हजारों वर्षोंतक तप किया और अपने तपोबलके प्रभावसे वह देवताओंके लिये भी अजेय हो गया। चिन्तित

हो देवगण भगवान् विष्णुके पास पहुँचे। भगवान् विष्णुने कहा—सभी देवता गयासुरके पास चलें। वहाँ पहुँचनेपर विष्णुजीने उससे कठिन तपका कारण पूछा और वर माँगनेके लिये कहा—इसपर गयासुरने कहा—देव! वह सभी देवताओं, ऋषियों, मुनियोंसे भी अधिक पवित्र हो जाय। सभीने 'तथास्तु' कहा। गयासुर प्रसन्न हो तपसे विरत हो गया। वरदानके प्रभावसे गयासुरकी देह अत्यन्त पवित्र हो गयी, जो भी उसे देखता अथवा उसकी देहका स्पर्श करता, स्वर्ग चला जाता। यह देख ब्रह्माजी बड़े चिन्तित हो गये। उनका विधान तथा मर्यादा टूटने लगी। तब भगवान् विष्णुने ब्रह्माजीसे कहा—आप गयासुरके पास जाकर यज्ञ करनेके लिये यज्ञभूमिके रूपमें उसका पवित्र शरीर माँग लें। ब्रह्माजी गयासुरके पास गये। उनका दर्शनकर गयासुर बोला—ब्रह्मन्! आज मेरा जन्म सफल हुआ। आपके दर्शनसे मैं कृतार्थ हुआ, आप मेरे अतिथि बने, यह मेरे लिये सौभाग्यकी बात है, आप अपने आनेका प्रयोजन बतायें। तब ब्रह्माजीने कहा—महाभाग गयासुर! समस्त पृथ्वीमें भ्रमणकर मैंने जिन-जिन तीर्थोंको देखा है, यज्ञके लिये वे तुम्हारी देहसे कम ही पवित्र हैं। अतः तुम्हारी देहके समान अन्य कोई पवित्रतम स्थान नहीं है। भगवान् विष्णुके वरसे तुम्हारी देह सर्वाधिक पावन हो गयी है, अतः मुझे यज्ञ करनेके लिये तुम अपने शरीरका दान कर दो। गयासुर बोला—हे देवदेवेश! आप हमारे शरीरके लिये प्रार्थना कर रहे हैं, यह हमारा धन्यभाग है, आप जैसे चाहें वैसे यज्ञ करें, यह शरीर तो आपकी ही रचना है। यह कहते हुए गयासुरने सहर्ष अपनी देह समर्पित कर दी। विराट् शरीरवाला गयासुर उत्तरकी ओर सिर तथा दक्षिणकी ओर पैर करके वहीं भूमिपर सो गया। ब्रह्माजीने यज्ञकी सारी सामग्रियाँ तैयार कीं और उसकी देहके ऊपर यज्ञानुष्ठान होने लगा, किंतु गयासुरका शरीर हिलने लगा। ब्रह्माजीने धर्मसे कहकर पवित्र धर्मशिला उसके शरीरपर रखवायी, फिर भी शरीर हिलता रहा। तब ब्रह्माजीने तथा देवताओंने अपनी

अभीष्ट सिद्धि न होते देख भगवान् विष्णुका आवाहन किया। गदाधर भगवान् विष्णु अपने लोकसे तत्क्षण वहाँ पहुँच गये और वे उसके ऊपर स्थित हो गये तथा उन्होंने अपनी गदाके द्वारा गयासुरको स्थिर कर दिया। उस समय गयासुरने वरदान माँगते हुए कहा कि जबतक पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा, तारे आदि रहें; तबतक ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर आदि सभी देवता इस तीर्थपर निवास करें। यह तीर्थ उसके नामपर प्रसिद्ध हो तथा सभी तीर्थ यहाँ निवास करें। सभी देव व्यक्त तथा अव्यक्त (पदचिह्न)-के रूपमें यहाँ विद्यमान रहें और यहाँ किये गये श्राद्ध तथा पिण्डदानसे पितरोंका तो उद्धार हो ही श्राद्धकर्ताका भी कल्याण हो।

गयासुरका वचन सुनकर विष्णु आदि देवताओंने कहा—तुमने जो कुछ भी माँगा है, वह सब निश्चित रूपसे पूर्ण होगा—

गयासुरवचः श्रुत्वा प्रोचुर्विष्ण्वादयः सुराः।
त्वया यत्प्रार्थितं सर्वं तद्भविष्यत्यसंशयम्॥

(वायुपु० १०६।७१)

गयनामक असुरकी पूरी देह जो लगभग १० मील विस्तृत है, परम पवित्र है। उसपर कहीं भी पिण्डदान करनेसे पितर प्रेतयोनि तथा नरकसे छूटकर अक्षय तृप्ति प्राप्त करते हैं।

तभीसे गयातीर्थ देवतीर्थ तथा पितृतीर्थके रूपमें विख्यात हुआ।

[४] गयाके पुण्यप्रद स्थान

सम्पूर्ण गयाक्षेत्रमें पितरोंके कल्याणकी कामनासे सभी तीर्थ तथा देवता प्रतिष्ठित हैं। स्वयं पितृगण भी यहाँ निवास करते हैं। यहाँ भगवान् विष्णु आदिगदाधरके नामसे विराजते हैं। यहाँके कुछ प्रमुख स्थान इस प्रकार हैं—फल्गुतीर्थ, विष्णुपद, गदाधर, गयाशिर, मुण्डपृष्ठ, आदिगया, धौतपाद, सूर्यकुण्ड, जिह्वालोल, सीताकुण्ड, रामगया, उत्तरमानस, रामशिला, काकबलि, प्रेतशिला, ब्रह्मकुण्ड, वैतरणी, भीमगया, भस्मकूट, गोप्रचार, ब्रह्मसरोवर, अक्षयवट, गदालोल, मंगलागौरी, आकाशगंगा, गायत्रीदेवी, संकटादेवी, प्रपितामहेश्वर, ब्रह्मयोनि, सरस्वती और सावित्रीकुण्ड, मतंगवापी, धर्मारण्य, बोधगया आदि।

गयायात्रीको प्रतिदिन प्रातः फल्गुनदीमें स्नान, तर्पण आदिके अनन्तर भगवान् गदाधरका पूजन एवं विष्णुपदका दर्शन करके अन्य तीर्थोंमें श्राद्धादि कार्य सम्पन्न करना चाहिये।

यहाँके कुछ प्रमुख तीर्थोंका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१-फल्गुतीर्थ

फल्गु गयाका प्रथम तीर्थ है। गया पहुँचकर सर्वप्रथम फल्गुतीर्थमें ही श्राद्ध सम्पन्न होता है। गयाके तीर्थोंमें फल्गुका विशेष महत्त्व है। इसे गयाका शिरोभाग तथा आभ्यन्तर तीर्थ कहा गया है। फल्गुतीर्थमें स्नान करके भगवान् गदाधरका दर्शन करनेसे सभी पुण्यफलोंकी प्राप्ति होती है। भूतलपर समुद्रपर्यन्त जितने भी तीर्थ और सरोवर हैं, वे सब प्रतिदिन एक बार फल्गुतीर्थमें आया करते हैं। तीर्थराज फल्गुतीर्थमें जो श्रद्धाके साथ स्नान करता है, उसका वह स्नान पितरोंको ब्रह्मलोककी प्राप्ति करानेवाला

तथा अपने लिये भोग और मोक्षकी सिद्धि करनेवाला होता है (अग्निपुराण अ० ११५।२५—३०)। फल्गु अमृतकी धारा बहाती है। यहाँ पितरोंके उद्देश्यसे किया हुआ दान अक्षय होता है। गया जानेपर प्रतिदिन फल्गुमें स्नानकर अन्य पदोंमें श्राद्धादिकी विधि है।

नारदपुराणमें बताया गया है कि फल्गुतीर्थमें श्राद्ध करनेसे पितरोंकी तथा श्राद्धकर्ताकी भी मुक्ति होती है। पूर्वकालमें ब्रह्माजीकी प्रार्थनासे भगवान् विष्णु स्वयं फल्गुरूपसे प्रकट हुए थे। समस्त लोकोंमें जो सम्पूर्ण तीर्थ हैं, वे सब फल्गुतीर्थमें स्नान करनेके लिये आते हैं। गंगाजी भगवान् विष्णुका चरणोदक हैं और फल्गुरूपमें साक्षात् भगवान् आदिगदाधर प्रकट हुए हैं। वे स्वयं ही द्रव (जल)-रूपमें विराजमान हैं, फल्गुमें स्नान करते समय निम्न मन्त्रका उच्चारण करना चाहिये—

फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमद्य वै। पितृणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥

२-धर्मशिला (प्रेतशिला)

धर्मशिलाके माहात्म्यमें एक कथानक इस प्रकार प्राप्त होता है—प्राचीनकालमें धर्मकी पुत्री धर्मव्रता नामक एक सुलक्षणा कन्या उत्पन्न हुई। वह इतने दिव्य गुणोंसे सम्पन्न थी कि बहुत ढूँढ़नेपर भी पिताको उसके अनुरूप कोई योग्य वर नहीं मिला। तब पिता धर्मने उससे कहा—बेटी! अपने अनुरूप पति प्राप्त करनेके लिये तपस्या करो। पिताकी आज्ञासे धर्मव्रता कठिन तपमें संलग्न हो गयी। उसकी तपस्यासे प्रसन्न हो ब्रह्माजीके मानसपुत्र महर्षि मरीचि वहाँ आये और उन्होंने उसके गुणोंकी प्रशंसा करते हुए उसे पत्नीरूपमें स्वीकार किया। मरीचिने धर्मके पास आकर कन्याकी याचना की और धर्मने सहर्ष स्वीकारकर धर्मव्रता उन्हें सौंप दी। धर्मव्रता महर्षिके आश्रममें आकर उनकी सेवा-शुश्रूषा करने लगी। एक दिन जब धर्मव्रता अपने पति महर्षि

मरीचिके चरण दबा रही थी, उसी समय वहाँ ब्रह्माजी पधारे। 'ये मेरे श्वशुर हैं'—यह जानकर धर्मव्रताने उठकर उनका स्वागत किया, किंतु महर्षि मरीचिने इसे पतिसेवा-त्यागरूप अपराध माना और पत्नीको शिला होनेका शाप दे दिया—'**शापदग्धा शिला भव**' (वायुपु० १०७। २७)। इसके पश्चात् धर्मव्रताने हजारों वर्षोंतक कठोर तप किया। उसके तपसे प्रसन्न हो भगवान् नारायण तथा देवता उसके पास आये और उन्होंने वर माँगनेको कहा। इसपर धर्मव्रताने कहा—

देववृन्द! मैं निखिल ब्रह्माण्डमें परम पावन शिलाके रूपमें प्रादुर्भूत होऊँ। जितने भी नद, नदी, सरोवर, तीर्थ एवं देवादि हैं, उन सबसे अधिक पवित्रता मुझमें निवास हो, यही नहीं जितने भी ऋषि, मुनि एवं प्रमुख देवगण हैं, उन सबसे अधिक पवित्रता मुझमें हो। समस्त त्रैलोक्यमें जितने भी व्यक्ताव्यक्त लिंगादि हैं, वे सब तीर्थरूप धारणकर मेरे शिलारूपी शरीरमें निवास करें।[१]

धर्मव्रताने आगे कहा—शिलापर स्थित तीर्थोंमें स्नान एवं तर्पणकर जिनका पिण्डदानात्मक श्राद्ध हो, वे ब्रह्मलोकको प्राप्त करें। जिस प्रकार भगवान् विष्णुकी पूजा कर लेनेपर सभी प्रकारके यज्ञ पूर्ण हो जाते हैं, उसी प्रकार यहाँ श्राद्ध, तर्पण एवं स्नान करनेसे अक्षय फलकी प्राप्ति हो।[२]

---

१. मह्यं वरं प्रयच्छध्वं एवंविधमनुत्तमम्॥
शिलाऽहं हि भविष्यामि ब्रह्माण्डे पावनी शुभा। नदीनदसरस्तीर्थदेवादिभ्योऽतिपावनी ॥
ऋष्यादिभ्यो मुनिभ्यश्च मुख्यदेवेभ्य एव च। त्रैलोक्ये यानि लिङ्गानि व्यक्ताव्यक्तात्मकान्यपि॥
तानि तिष्ठन्तु मद्देहे तीर्थरूपेण सर्वदा॥ (वायुपु० १०७। ४२—४४)

२. शिलास्थितेषु तीर्थेषु स्नात्वा कृत्वाथ तर्पणम्। श्राद्धं सपिण्डकं येषां ब्रह्मलोकं प्रयान्तु ते॥
यथार्चिते हरौ सर्वे यज्ञाः पूर्णा भवन्ति हि। तथा श्राद्धं तर्पणं च स्नानं चाक्षयमस्त्विह॥ (वायुपु० १०७। ४६, ४९)

पतिपरायणा धर्मव्रताके उन पवित्र वचनोंको सुनकर देवताओंने कहा—धर्मव्रते! तुम्हारी अभिलाषाएँ पूर्ण होंगी—इसमें संदेहकी आवश्यकता नहीं है। गयासुरके सिरपर जब तुम स्थिर होगी, तब चरणादि रूपसे हम सभी तुम्हारे शरीरपर स्थिर होंगे—

त्वया यत्प्रार्थितं सर्वं तद्भविष्यत्यसंशयम्॥

गयासुरस्य शिरसि भविष्यसि यदा स्थिरा। तदा पादादिरूपेण स्थास्यामस्त्वयि सुस्थिराः॥

(वायुपु० १०७।५७-५८)

ऐसा वरदान देकर देवता अन्तर्धान हो गये।

३-अक्षयवट

गयाजीमें अक्षयवटके नीचे पितरोंके निमित्त किया गया श्राद्ध तथा ब्राह्मण-भोजन अक्षय फलदायी और सभी पापोंका विनाश करनेवाला होता है—

पित्रादीनामक्षयाय सर्वपापक्षयाय च। श्राद्धं वटतले कुर्याद् ब्राह्मणानां च भोजनम्॥

(अग्निपु० ११५।७१)

पितरोंको अक्षय ब्रह्मलोकप्राप्तिकी कामनासे निम्न मन्त्रसे अक्षयवटका पूजन एवं नमस्कार करना चाहिये—

संसारवृक्षशस्त्रायाशेषपापक्षयाय च। अक्षय्यब्रह्मदात्रे च नमोऽक्षय्यवटाय च॥

(नारदपु० उत्तर० ४७।७)

जो संसाररूपी वृक्षका उच्छेद करनेके लिये शस्त्रस्वरूप हैं, जो समस्त पापोंका नाश तथा अक्षय ब्रह्मलोक प्रदान करनेवाले

हैं, उन अक्षयवटस्वरूप श्रीहरिको नमस्कार है।

अक्षयवटके नीचे शय्यादानकी भी विधि है। अक्षयवटतीर्थमें अन्नद्वारा विधिपूर्वक श्राद्ध करनेवाला अपने पितृगणोंको अक्षय एवं सनातन ब्रह्मलोक पहुँचाता है। वटवृक्षके समीप शाक अथवा जलद्वारा भी यदि एक विप्रको भोजन करा दिया जाय तो उसे कोटि ब्राह्मणोंको भोजन कराया हुआ समझना चाहिये—

कृते श्राद्धेऽक्षयवटे अन्नेनैव प्रयत्नतः। पितॄन्नयेद् ब्रह्मलोकमक्षयं तु सनातनम्॥
वटवृक्षसमीपे तु शाकेनाप्युदकेन वा। एकस्मिन् भोजिते विप्रे कोटिर्भवन्ति भोजिताः॥

(वायुपु० १११।८०-८१)

गयाश्राद्धका काल

सामान्यतः श्राद्धके लिये जो वर्जनीय काल हैं, उनमें भी गयाश्राद्धकी अवश्यकर्तव्यताके बोधक वचन शास्त्रोंमें प्राप्त होते हैं। इसी दृष्टिसे कहा गया है कि **'गयायां सर्वकालेषु पिण्डं दद्याद् विचक्षणः।'** (वायुपु० १०५।१८) अर्थात् गयामें सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है। गयाश्राद्धके लिये समयका कोई प्रतिबन्ध नहीं है, चाहे अधिमास हो, गुरु-शुक्र अस्त हों, जन्ममास या जन्मदिन हो, बृहस्पति सिंह राशिमें स्थित हों—सभी समय श्राद्ध किया जा सकता है—**'अधिमासे जन्मदिने चास्तेऽपि गुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गयाश्राद्धं सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ। चन्द्रसूर्यग्रहे चैव मृतानां पिण्डकर्मसु॥'** (वायुपु० १०५।१८-१९) गयाधाममें पिण्डदान बहुत दुर्लभ माना गया है। मीन, मेष, कन्या, धनु एवं वृष राशिपर जब सूर्य हों, उस समय गयातीर्थ परम दुर्लभ है। ऋषिगण सर्वदा यह कहते आये हैं कि तीनों लोकोंमें गयाका पिण्डदान परम दुर्लभ है। मकर राशिपर जब चन्द्रमा और सूर्य स्थित हों, उस समय तीनों लोकोंमें गयाश्राद्ध अत्यन्त दुर्लभ माना गया है—

मीने मेषे स्थिते सूर्ये कन्यायां कार्मुके घटे। गयायां दुर्लभं लोके वदन्ति ऋषयः सदा॥
दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्॥
मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः। दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयाश्राद्धं सुदुर्लभम्॥ (वायुपु० १०५।४७-४८)

ऐसे ही संक्राति आदि में विशेषरूपसे गयामें श्राद्ध करना चाहिये—

गयाश्राद्धं प्रकुर्वीत संक्रान्त्यादौ विशेषतः॥

त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें पद्मपुराणके वचनसे बताया गया है कि गयाकी यात्रा अधिमासमें, जन्मनक्षत्रमें तथा गुरु, शुक्रके अस्त होनेपर भी की जा सकती है—**अधिमासे च जन्मर्क्षे अस्ते च गुरुशुक्रयोः। तीर्थयात्रा न कर्तव्या गयां गोदावरीं विना॥**

गयायात्रासम्बन्धी जाननेयोग्य आवश्यक बातें

श्रीगयाधामकी यात्रा एक विशिष्ट महोत्सव है। यह यात्रा पितरोंके कल्याणके लिये की जाती है। श्रीगयातीर्थके यात्रार्थीको चाहिये कि तीर्थयात्राका अधिकारी बननेके लिये वह सर्वप्रथम किसी दैवज्ञसे गयायात्राका मुहूर्त ज्ञात कर ले तथा यात्रा प्रारम्भ करनेके तीन दिन पूर्व अत्यन्त संयम-नियमपूर्वक रहे। प्रथम दिन एक समय भोजन करना चाहिये तथा दूसरे दिन हविष्यान्न (चावल, गेहूँ, जौ, मूँग, तिल आदि पवित्र अन्न तथा दूध, दही, घी आदि गव्य पदार्थ) ग्रहण करना चाहिये और तीसरे दिन उपवास करना चाहिये। चौथे दिन प्रातः स्नान-सन्ध्यादि नित्यकर्म करके पूजाकी सामग्री एकत्रितकर आसनपर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन-प्राणायाम करके गयायात्राकी निर्विघ्न-परिपूर्णताकी सिद्धिके लिये स्वस्ति-पुण्याहवाचनपूर्वक गणेशाम्बिका तथा अपने इष्टदेवताका स्मरण-पूजन करना चाहिये।

पूजनके अनन्तर घरमें गयातीर्थयात्रांगभूत पार्वणविधिसे प्रचुर घृतमिश्रित हविष्यान्नसे घृतश्राद्ध करना चाहिये। इससे कार्यारम्भ* (यात्रारम्भ) हो जाता है। इसके बाद यदि कोई जननाशौच या मरणाशौच आ जाता है तो अशौच प्रवृत्त नहीं होता—

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। प्रारब्धे सूतकं न स्यात् अनारब्धे तु सूतकम्॥

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें विष्णुपुराणका वचन)

घृतश्राद्धके अनन्तर ब्राह्मणोंका पूजन करना चाहिये और उनसे तथा गुरुजनों एवं मित्रोंसे गयायात्राके लिये आज्ञा प्राप्तकर गयायात्राका संकल्प करना चाहिये। किसी दोनेमें धुले हुए चावलमें पंचगव्य मिलाकर रख ले और गीत-वाद्यके साथ उन्हीं

---

* **प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः। नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया॥** *(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें विष्णुपुराणका वचन)*

अक्षतोंको छींटते हुए ईशानकोणसे ईशानकोणतक गाँवकी प्रदक्षिणा करनी चाहिये—'**ग्रामप्रदक्षिणा कार्या गीतवाद्यसमन्वितः।**' ग्रामकी प्रदक्षिणा असम्भव हो तो घरकी ही प्रदक्षिणा करनी चाहिये अथवा अपने ही स्थानपर प्रदक्षिणा कर ले।

तदनन्तर अन्य अक्षतोंको लेकर पितरोंका आवाहन करना चाहिये। पितरोंके आवाहनके मन्त्र आगे प्रयोग पृ०-सं०९३में दिये गये हैं। पितरोंके आवाहित किये हुए अक्षतोंको बाँधकर या सच्छिद्र गरीगोलेमें रखकर गयायात्रामें साथ ले जाना चाहिये और गयाकूपमें अथवा धर्मारण्यमें डाल देना चाहिये।

पितरोंके आवाहनके बाद एक या तीन ब्राह्मणोंको भोजन कराना चाहिये या निष्क्रय-द्रव्य देना चाहिये और घरसे प्रस्थान करना चाहिये। श्राद्धसे बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्नको साथमें ले ले। कुछ दूर जाकर किसी देवालय, धर्मशाला आदिमें टिक जाय। यहाँ साथमें लाये हुए श्राद्धसे बचे हुए घृतबहुल हविष्यान्नसे पारणा करे। अगले दिन नित्यकर्म करके पुनः तीर्थयात्राका वेष धारण करना चाहिये। काषाय वस्त्र धारण कर ले अथवा वस्त्रका एक कोना गैरिक रंगसे रँग लेना चाहिये। ये वस्त्र केवल यात्रामें ही धारण करने चाहिये। अन्य कार्योंमें श्वेत वस्त्र धारण करे।

वायुपुराणमें यात्राका नियम बताया गया है कि विधिपूर्वक श्राद्ध सम्पन्नकर जो व्यक्ति गयायात्राके लिये उद्यत हो, उसे चाहिये कि सर्वप्रथम श्राद्धकर काषाय वस्त्र धारणकर अपने ग्रामकी प्रदक्षिणा करे, फिर दूसरे ग्राममें जाकर श्राद्धसे शेष अन्नका भक्षण करे। दानादि न लेते हुए प्रतिदिन यात्रा करे। प्रतिग्रहसे बचते हुए संतुष्टचित्त होकर इन्द्रियोंको वशमें करके पवित्र मन एवं शरीरसे अहंकारादिको छोड़कर जो गयाकी यात्रा करता है, वह तीर्थका वास्तविक फल प्राप्त करता है—

उद्यतश्चेद् गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः। विधाय कार्पटीवेषं कृत्वा ग्रामप्रदक्षिणम्॥
ततो ग्रामान्तरं गत्वा श्राद्धशेषस्य भोजनम्। ततः प्रतिदिनं गच्छेत् प्रतिग्रहविवर्जितः॥

प्रतिग्रहादुपावृत्तः सन्तुष्टो नियतः शुचिः। अहंकारविमुक्तो यः स तीर्थफलमश्नुते॥

(वायुपु० ११०।२—४)

गयायात्रीको चाहिये कि वह—

(१) यात्राके समय दूसरेका कुछ न खाय।

(२) दान भी न ले।

(३) एक समय भोजन करे।

(४) यात्राके समय भगवान् दामोदर, गदाधर, फल्गुगंगाका स्मरण करता रहे।

(५) असत्यभाषण, कटुभाषण न करे और किसीकी निन्दा न करे।

(६) छल, कपट, चोरी, धोखा और विश्वासघात न करे।

(७) रास्तेमें कोई तीर्थ पड़ जाय तो यथासम्भव वहाँ पार्वणविधिसे अथवा तीर्थश्राद्धविधिसे श्राद्ध करते हुए आगे बढ़े। कुछ लोग काशीमें पिशाचमोचनमें त्रिपिण्डी श्राद्ध करके यात्रा करते हैं तथा कुछ लोग प्रयागमें त्रिवेणीसंगमपर श्राद्धकर प्रस्थान करते हैं।

(८) गयायात्रीको अपने अन्य सम्बन्धियों तथा सम्पर्कियोंके नाम, गोत्र इत्यादि भी लिखकर ले जाने चाहिये ताकि वह वहाँ उनके नामसे तर्पण एवं पिण्डदान कर सके।

(९) मार्गमें पुनःपुना तीर्थमें पहुँचकर तीर्थको प्रणाम करे तथा निम्न मन्त्रोंसे पितरोंका आवाहन करना चाहिये—

पुनःपुनेति विख्याता पितृणां तीर्थमुत्तमम्। *अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनःपुनाम्॥*

पुनःपुनामें श्राद्धकर गया पहुँचे। गया पहुँचकर सवारीसे उतरकर कुछ दूर पैदल चलना चाहिये। तदनन्तर गयाधामको '**ॐ गयायै नमः, ॐ गदाधराय नमः**' कहकर साष्टांग प्रणाम करना चाहिये।

वायुपुराणने बताया है कि तीर्थमें श्राद्ध करनेवाले पुरुषोंको काम, क्रोध तथा लोभको छोड़कर सारी क्रियाएँ करनी चाहिये। ब्रह्मचर्यव्रत धारणकर एक समय भोजन करना चाहिये। पृथ्वीपर शयन करना चाहिये। सत्य वचन बोलना चाहिये तथा मन एवं शरीरसे पवित्र रहना चाहिये। सभी जीवोंके कल्याणसाधनमें निरत रहना चाहिये। जो इन नियमोंका पालन करता है, वह तीर्थका वास्तविक फल प्राप्त करता है।

तीर्थश्राद्धं प्रयच्छद्भिः पुरुषैः फलकाङ्क्षिभिः। कामं क्रोधं तथा लोभं त्यक्त्वा कार्या क्रियानिशम्॥
ब्रह्मचर्यैकभोजी च भूशायी सत्यवाक्शुचिः। सर्वभूतहिते रक्तः स तीर्थफलमश्नुते॥

जिसके हाथ-पैर एवं मन संयत रहते हैं; विद्या, तप एवं कीर्तिकी बहुलता रहती है, वह वास्तविक तीर्थफलका उपभोग करता है—

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चादि सुसंयतम्। विद्या तपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते॥

(वायुपु० ११०।५)

इस प्रकार गया पहुँचनेपर फल्गु, विष्णुपद, अक्षयवट आदि सभी तीर्थोंमें स्नान, तर्पण, श्राद्ध, देवपूजन करना चाहिये। गयामें सत्रह दिन (तीन पक्ष), सात दिन, पाँच दिन अथवा तीन दिनतक श्राद्ध करनेकी व्यवस्था शास्त्रने दी है। सबसे अन्तमें गायत्रीघाटपर दही, अक्षतका पिण्ड देकर गयाश्राद्ध पूर्ण किया जाता है।

[१] पितरोंकी प्रसन्नतासे श्राद्धकर्ताका परम कल्याण

पितर अत्यन्त दयालु तथा कृपालु होते हैं। वे अपने पुत्र-पौत्रादिकोंसे पिण्डदान तथा तर्पणकी आकांक्षा रखते हैं। श्राद्धादि क्रियाओंद्वारा पितरोंको परम प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि होती है। प्रसन्न होकर वे पितृगण श्राद्धकर्ताको दीर्घ आयु, सन्तति, धन-धान्य, विद्या, राज्य, सुख, यश, कीर्ति, पुष्टि, बल, पशु, श्री, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं (मार्कण्डेयपुराण, याज्ञ०स्मृति आ०गण० २७०, यमस्मृति, श्राद्धप्रकाश)।

(क) **आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः॥**

(ख) **आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥**

[२] यात्राकी सम्पन्नता

इस प्रकार विधिपूर्वक अत्यन्त श्रद्धासे पितरोंके कल्याणकी कामनासे गया-यात्रा सम्पन्नकर वहाँसे वापस घर आना चाहिये। घर आनेपर यात्रा प्रारम्भ करनेके समान ही गणपत्यादि देवपूजन, ब्राह्मणभोजन तथा दानादि करे। गयायात्राके उपरान्त यथासम्भव श्रीमद्भागवत अथवा श्रीमद्देवीभागवतकथाका पारायण भी करना चाहिये।

[३] भ्रम-निवारण

कुछ लोगोंमें यह भ्रम व्याप्त है कि गयाश्राद्धके बाद वार्षिक क्षयाह (सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट)-श्राद्ध तथा पितृपक्षका महालयादिश्राद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं है, परंतु यह बात निराधार है। गयाश्राद्ध करनेके बाद भी घरमें किये जानेवाले नियमित पिण्डदानात्मक आदि सभी प्रकारके श्राद्ध करते रहने चाहिये।

[४] पादगया, नाभिगया तथा कपालगयाकी यात्राका क्रम

मुख्यरूपसे जो 'गया' के नामसे प्रसिद्ध है, उसे शास्त्रोंमें 'पादगया' के नामसे कहा गया है। यह गया बिहारप्रदेशमें अवस्थित है, जहाँ कई वेदियोंमें कई दिनोंमें श्राद्ध सम्पन्न किया जाता है।

इसके अतिरिक्त नैमिषारण्यके चक्रपुष्करिणीतीर्थको नाभिगया कहा गया है, जहाँ कभी भी एक दिन पार्वण अथवा तीर्थश्राद्धकी विधिसे श्राद्ध करनेका विधान है। यह श्राद्ध गयाश्राद्धके पूर्व अथवा बादमें कभी भी किया जा सकता है।

बदरीनारायणतीर्थमें स्थित ब्रह्मकपालीमें भी पिण्डदानात्मक श्राद्ध करनेका विधान है, ब्रह्मकपालीको कपालगया भी कहते हैं। गयामें पिण्डदान करनेके बाद ही यहाँ पिण्डदान करना चाहिये, कारण सनत्कुमारसंहितामें यह वचन आया है—

शिरःकपालं यत्रैतत्पपात ब्रह्मणः पुरा। तत्रैव बदरीक्षेत्रे पिण्डं दातुं प्रभुः पुमान्॥
मोहाद् गयायां दद्याद्यः स पितॄन् पातयेत् स्वकान्। लभते च ततः शापं नारदैतन्मयोदितम्॥

प्राचीन कालमें जहाँ ब्रह्माका शिरःकपाल गिरा था, वहीं बदरीक्षेत्रमें जो पुरुष पिण्डदान करनेमें समर्थ हुआ यदि वह मोहके वशीभूत होकर गयामें पिण्डदान करता है तो वह अपने पितरोंका अधःपतन करा देता है और उनसे शापित होता है अर्थात् पितर उसका अनिष्ट-चिन्तन करते हैं। हे नारद! मैंने आपसे यह कह दिया।

इसलिये ब्रह्मकपालीमें पिण्डदान करनेके बाद गयामें पिण्डदानात्मक श्राद्धका निषेध है। पितृपक्षके महालय आदि श्राद्ध पिण्डदानकी अपेक्षा ब्राह्मणभोजनात्मक एवं आमान्नदानात्मक ही करने चाहिये। पिण्डदानरहित पार्वण तथा एकोद्दिष्टश्राद्ध भी किया जा सकता है।*

---

* गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित 'अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश' पुस्तकमें पिण्डदानरहित पार्वणश्राद्धकी विधि दी गयी है।

प्रमाण-संग्रह

(१) तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्धमें निषिद्ध कर्म

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्ध सामान्य पार्वणश्राद्धसे भिन्न है। इसमें अर्घ, आवाहन, अंगुष्ठनिवेशन, तृप्तिप्रश्न और विकिरदान—इन पाँच विधियोंका निषेध है—

अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें पद्मपुराणका वचन)

(२) तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्धमें निषिद्ध कर्म

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्धमें पार्वणश्राद्ध तथा एकोद्दिष्टश्राद्धसे भिन्नता है। इसमें विश्वेदेवकी स्थापना नहीं की जाती। दिग्बन्ध, आवाहन, अर्घ, कूष्माण्ड ऋचाका जप, अंगुष्ठनिवेशन, अग्नौकरण, पितृसूक्तका पाठ, विकिरदान तथा विसर्जन नहीं किया जाता—

(क) अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें पद्मपुराणका वचन)

(ख) नावाहनं न दिग्बन्धो न दोषो दृष्टिसम्भवः। सकारुण्येन कर्तव्यं तीर्थश्राद्धं विचक्षणैः॥

(वायुपु० १०५। ३८)

(ग) श्राद्धं च तत्र कर्तव्यमर्घ्यावाहनवर्जितम्। (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें देवीपुराणका वचन)

(घ) आवाहनं विसृष्टिश्च तत्र तेषां न विद्यते। (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें भविष्यपुराणका वचन)

(ङ) अग्नौकरणं तीर्थश्राद्धे न कार्यम्। (स्मृतिरत्नावली)

(च) वृद्धिश्राद्धे गयाश्राद्धे प्रीतिश्राद्धे तथैव च। सपिण्डीकरणश्राद्धे न जपेत्पितृसूक्तकम्॥ (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह)

(३) तीर्थश्राद्धमें नवदैवत्यश्राद्धकी विधि

(क) महालय, गयाश्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध तथा अन्वष्टका [चार अष्टकाओंके बाद आनेवाली नवमी तिथियाँ]-श्राद्धमें नवदैवत्य तथा शेष सर्वत्र षड्दैवत्यश्राद्ध करना चाहिये—

महालये गयाश्राद्धे वृद्धावन्वष्टकासु च। नवदैवत्यमत्र स्यात् शेषं षाट्पौरुषं विदुः॥ (विष्णुध०पु०)

(ख) चारों अष्टकाओं पौषकृष्ण अष्टमी (ऐन्द्री), माघकृष्ण अष्टमी (वैश्वदेवी), फाल्गुनकृष्ण अष्टमी (प्राजापत्या) तथा चैत्रकृष्ण अष्टमी (पित्र्या), वृद्धिश्राद्ध, गयामें तथा मृत्युतिथिपर माताका श्राद्ध पृथक् करना चाहिये; अन्यत्र माताका श्राद्ध पतिके साथ करना चाहिये—

अष्टकासु च वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि। मातुः श्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह॥

(वायुपु० ११०।१७)

(४) षड्दैवत्यश्राद्धमें पिण्डदानकी व्यवस्था

षड्दैवत्यश्राद्धमें माता, पितामही तथा प्रपितामही अपने-अपने पतिके साथ ही पिण्डभाग प्राप्त करती हैं—

स्वेन भर्ता समं श्राद्धं माता भुङ्क्ते सुधासमम्। पितामही च स्वेनैव तथैव प्रपितामही॥

(निर्णयसिन्धु तृ०पू०में कात्यायनका वचन)

(५) गयायात्रांगभूतघृतश्राद्ध

गयायात्राके प्रसंगमें '**उद्यतश्चेद् गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः**' इत्यादि वायु आदि पुराणोंके वचनोंसे यह परिलक्षित है कि गयायात्रासे पूर्व अपने घरपर विधिपूर्वक श्राद्ध करना चाहिये, किंतु कौन-सा श्राद्ध करना चाहिये—यह इस वचनमें स्पष्ट नहीं है, गौडीयश्राद्धप्रकाशमें इस वचनमें उद्धृत श्राद्ध पदका '**मातृपूर्वं नवदैवतम्**' अर्थ किया गया है। मातृपूर्वक नवदैवत्यश्राद्ध नान्दीश्राद्ध है। स्मृतिरत्नावली तथा मदनपारिजात आदि निबन्धग्रन्थोंमें इसी 'श्राद्ध' पदका अर्थ '**घृतप्रधानद्रव्यकम्**' किया गया है और इसका तात्पर्य 'घृतश्राद्ध' से है। इस घृतश्राद्धको पार्वणश्राद्धकी विधिसे करनेकी व्यवस्था त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहकारने बतायी है। पार्वणश्राद्धमें षड्दैवत्य, नवदैवत्य तथा द्वादशदैवत्यश्राद्धकी तीनों विधियाँ हैं। विष्णुपुराणके '**श्राद्धं कृत्वा तु सर्पिषा**' इस वचनसे '**सर्पिषा**' पदमें करणतृतीया विभक्तिके द्वारा निरपेक्षसाधनताका बोध होता है अर्थात् साधनके रूपमें यहाँ घृतकी ही प्रधानता है। इस कारण इसे घृतश्राद्धकी संज्ञा दी गयी है। घृतश्राद्धका तात्पर्य घृतप्रचुरश्राद्ध है।

अतः यह श्राद्ध पार्वणश्राद्धकी विधिसे घृतबहुल हविष्यान्नके द्वारा किया जाना चाहिये। इस श्राद्धमें घृतद्रव्यका प्राधान्य होनेके कारण इसे 'घृतश्राद्ध' कहते हैं। गयायात्राके प्रसंगमें इसी घृतश्राद्धको आभ्युदयिक (नान्दी) श्राद्ध माना गया है।

यात्राके अंगके रूपमें किया जानेवाला यह श्राद्ध यात्राके आरम्भ होनेके पूर्व ही घरपर किया जाता है। इस श्राद्धके सम्पन्न होनेपर गयायात्रामें अन्तःपाती-अशौच अर्थात् मध्यमें अशौच आ जानेपर उसकी प्रवृत्ति नहीं होती अर्थात् स्वतः निवृत्ति मान ली जाती है।

(६) सात गोत्र तथा सात गोत्रोंके एक सौ एक कुलपुरुष

पिता, माता, भार्या (पत्नी), भगिनी (बहन), दुहिता (कन्या) तथा पिता एवं *माताकी बहन (बुआ तथा मौसी)—ये सात*

गोत्र कहलाते हैं—

पिता माता च भार्या च भगिनी दुहिता तथा। पितृमातृश्वसा चैव सप्तगोत्राणि वै विदुः॥ (धर्मसिन्धु)

पितापक्षके तत्त्व अर्थात् चौबीस पुरुष (सांख्यशास्त्रमें परिगणित प्रकृति, महत् तथा अहंकार आदि चौबीस तत्त्व), माताके बीस, पत्नीके नृप अर्थात् सोलह (महाभारतके द्रोणपर्वमें सोलह प्रसिद्ध राजाओंका वर्णन आया है, यहाँ नृप कहनेसे सोलह संख्याका ग्रहण है), बहनोईके बारह, दामादके ग्यारह, फूफाके दस, मौसाके आठ—ये एक सौ एक कुल कहलाते हैं—

तत्त्वानि विंशति नृपा द्वादशैकादशा दश। अष्टाविति च गोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतम्॥ (निर्णयसिन्धु)

(७) उत्तरीय वस्त्रकी अनिवार्यता

स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध तथा भोजन आदिमें द्विजको अधोवस्त्र तथा उत्तरीय वस्त्रके रूपमें गमछा आदि अवश्य धारण करना चाहिये—

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्यात् श्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

(८) कच्छविहीन (लाँगसे रहित) धोतीका निषेध

कच्छ (लाँग)-से रहित, बिना उत्तरीय वस्त्र (गमछा, दुपट्टा आदि) धारण किये, नग्न तथा अवस्त्र—अप्रशस्त (अर्थात् काला, नीला अथवा बिना धुला हुआ) वस्त्र पहनकर श्रौत एवं स्मार्तकर्म नहीं करना चाहिये—

विकच्छोऽनुत्तरीयश्च नग्नश्चावस्त्र एव च। श्रौतस्मार्ते नैव कुर्यात्। (धर्मसिन्धु)

(९) तीर्थमें श्राद्धसे पूर्व तर्पणकी करणीयता

तीर्थमें श्राद्ध करनेसे पूर्व श्राद्धांग तर्पण करनेकी विधि है। तर्पण करके श्राद्ध करना चाहिये। तीर्थमें समयपर अथवा असमय—किसी भी समय पितृतर्पणपूर्वक श्राद्ध किया जा सकता है। इसलिये तीर्थमें पहुँचकर स्नान, तर्पण तथा पिण्डदान करनेमें विलम्ब नहीं करना चाहिये—

काले वाप्यथवाऽकाले तीर्थश्राद्धं सदा नरैः। प्राप्तैरेव सदा कार्यं पितृतर्पणपूर्वकम्॥
तीर्थमेव समासाद्य सद्यो रात्रावपि क्षणम्। स्नानञ्च तर्पणं श्राद्धं कुर्याच्चैव विधानतः॥
पिण्डदानं ततः शस्तं पितृणाञ्चैव दुर्लभम्। विलम्बं नैव कुर्वीत न च विघ्नं समाचरेत्॥

(श्राद्धकल्पलता; सदाचाररत्नाकरमें हारीतका वचन तथा देवीपुराणका वचन)

(१०) ताताम्बादि पितृ-परिगणन

धर्मशास्त्रोंमें श्राद्ध तथा तर्पणके लिये विभिन्न गोत्रवाले पितरों (तातामबादि बान्धवों)-की गणना इस प्रकार की गयी है—

ताताम्बात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयं सस्त्रि स्त्रीतनयादि तातजननीस्वभ्रातरः तत्स्त्रियः।
ताताम्बाऽऽत्मभगिन्यपत्यधवयुग् जायापिता सद्गुरुः शिष्याप्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे॥

(१) पिता, (२) पितामह (दादा), (३) प्रपितामह (परदादा), (४) माता, (५) पितामही (दादी), (६) प्रपितामही (परदादी), (७) विमाता (सौतेली माँ), (८) मातामह (नाना), (९) प्रमातामह (परनाना), (१०) वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना), (११) मातामही (नानी), (१२) प्रमातामही (परनानी), (१३) वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी), (१४) स्त्री

(पत्नी), (१५) पुत्र (पुत्री), (१६) चाचा, (१७) चाची, (१८) चाचाका पुत्र (चचेरा भाई), (१९) मामा, (२०) मामी, (२१) मामाका पुत्र (ममेरा भाई), (२२) अपना भाई, (२३) भाभी, (२४) भाईका पुत्र (भतीजा), (२५) फूफा, (२६) फूआ, (२७) फूआका पुत्र, (२८) मौसा, (२९) मौसी, (३०) मौसाका पुत्र, (३१) अपनी बहन, (३२) बहनोई, (३३) बहनका पुत्र—भानजा,(३४) श्वशुर, (३५) सासु, (३६) सद्‌गुरु, (३७) गुरुपत्नी, (३८) शिष्य, (३९) संरक्षक, (४०) मित्र तथा (४१) भृत्य (सेवक)।

(११) तर्पणमें कुशके प्रयोगकी विधि

कुशके अग्रभागसे देवताओंका, मध्यभागसे ऋषियोंका और मूल तथा अग्रभागसे पितरोंका तर्पण करना चाहिये—

अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः। पितॄँस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्॥

(१२) [क] श्राद्धमें लोहेके पात्रका सर्वथा निषेध

पितृकार्य-सम्बन्धी अन्नका परिपाक लोहेके पात्रमें सर्वथा निषिद्ध है। लोहेके दर्शनमात्रसे पितर वापस लौट जाते हैं। पितृकार्यमें कृष्णवर्णके लोहेकी विशेष रूपसे निन्दा की गयी है। केवल शाक तथा फलों आदिके काटनेमें भोजनालयमें उनका प्रयोग विहित है—

न कदाचित् पचेदन्नमयःस्थालीषु पैतृकम्। अयसो दर्शनादेव पितरो विद्रवन्ति हि॥

कालायसं विशेषेण निन्दन्ति पितृकर्मणि। फलानां चैव शाकानां छेदनार्थानि यानि तु॥

महानसेऽपि शस्तानि तेषामेव हि संनिधिः। (चमत्कारखण्ड, श्राद्धकल्पलता)

[ख] श्राद्धमें आवाहनका द्रव्य

जौ (यव)-से देवताओंका और अपसव्य होकर तिलोंसे पितरोंका आवाहन करना चाहिये—

'आवाहयेद् यवैर्देवान् अपसव्यं तिलैः पितॄन्।' (वीरमित्रोदय श्राद्धप्रकाशमें भविष्यपुराणका वचन)

(१३) पिण्डका द्रव्य

यदि खीरसे पिण्डदान करना हो तो श्राद्धदेशके ईशानकोणमें पिण्डदानके लिये पाक तैयार कर ले। पिण्डके लिये गाढ़ी खीर बनानी चाहिये। खीरके अभाव (विकल्प)-में जौके आटे, जौके सत्तू, खोए अथवा पिष्टक (तिलकुट), तण्डुल (चावल), फल, मूल (आलू, शकरकन्द), तिलकल्क (तिलका लड्डू), घृतमिश्रित गुड़खण्ड, दही, ऊर्ज (द्रव्यविशेष), मधु, घृतमिश्रित पिण्याक (तिलकी खली)-से पिण्डदान किया जा सकता है। इनका पिण्डके रूपमें श्राद्धमें प्रयोग करनेसे पितरोंको अक्षयतृप्ति प्राप्त होती है। (इनमेंसे जो सामग्री उपलब्ध हो, उससे पिण्डदान किया जा सकता है।)

पायसेनापि चरुणा सक्तुना पिष्टकेन वा। तण्डुलैः फलमूलाद्यैर्गयायां पिण्डपातनम्॥

तिलकल्केन खण्डेन गुडेन सघृतेन वा। केवलेनैव दध्ना वा ऊर्जेन मधुनाथवा॥

पिण्याकं सघृतं खण्डं पितृभ्योऽक्षयमित्युत।

(वायुपु० १०५। ३३—३५)

(१४) आचमनके अनन्तर भी पवित्रीका त्याग अपेक्षित नहीं

पवित्री धारणकर आचमन करना चाहिये। आचमन करनेसे पवित्री त्याज्य नहीं होती। भोजनके अनन्तर पवित्री जूठी हो जाती है। उसका त्याग कर देना चाहिये—

सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन)

(१५) दीपककी दिशा

देवोंके निमित्त तथा द्विजके घरमें दीपकका मुख पूर्व या उत्तर और पितरोंके निमित्त दक्षिण करना चाहिये—

प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥

(निर्णयसिन्धु)

(१६) नीवीबन्धन

श्राद्धमें रक्षाके लिये पानके पत्ते अथवा किसी पत्रपुटकपर तिल तथा कुशत्रयसे नीवीबन्धन किया जाता है। पितृकार्यमें दक्षिण कटिभागमें तथा देवकार्यमें वाम कटिभागमें नीवीबन्धन होता है—

पितृणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह॥

तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा।

(१७) श्राद्धमें पितृगायत्रीका पाठ

जिस प्रकार सन्ध्योपासनामें ब्रह्मगायत्रीका त्रिकाल जप आवश्यक है, उसी प्रकार श्राद्धमें पितरोंके गायत्रीमन्त्रका जप आवश्यक है। श्राद्धके प्रारम्भ, मध्य तथा अन्तमें निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार जप करना चाहिये—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आद्यावसाने श्राद्धस्य त्रिरावृत्त्या जपेत् सदा। पिण्डनिर्वपणे वाऽपि जपेदेवं समाहितः॥

(ब्रह्मपु० २२०। १४३-१४४)

(१८) विभक्तिनिर्णय

अक्षय्योदकदान तथा आसनदानमें षष्ठी, आवाहनमें द्वितीया, अन्नदानमें चतुर्थी विभक्ति तथा शेष स्थलोंपर सम्बोधन बताया गया है—

अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी स्याच्छेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥ (निर्णयसिन्धु)

(१९) स्वाहा-स्वधा कहाँ नहीं होगा?

आसन, आवाहन, अर्घ, अक्षय्योदकदान तथा अवनेजनक्रिया—इनके संकल्पकी वाक्ययोजनामें '**स्वधा**' पदका प्रयोग नहीं करना चाहिये। उसके स्थानपर '**नमः**' या '**अस्तु**' का प्रयोग करना चाहिये—

आसनाह्वानयोरर्घ्ये तथाक्षय्येऽवनेजने। क्षणे स्वाहास्वधावाणीं न कुर्यादब्रवीन्मनुः॥

(श्राद्धकाशिकामें धर्मप्रदीप)

(२०) एकतन्त्रका निषेध

अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—

अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥

(कात्यायनस्मृति २४। १५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

(२१) श्राद्धोंमें विकिरदानकी दिशा

आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्धमें पूर्वमें, पार्वणश्राद्धमें नैर्ऋत्यमें, सांवत्सरिकश्राद्धमें *अग्निकोणमें तथा प्रेतश्राद्धमें दक्षिण दिशामें*

विकिरदान करना चाहिये—

आभ्युदयिके तु पूर्वे नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा। अग्निकोणे क्षयाहे स्यात् प्रेतश्राद्धे च दक्षिणे॥

(२२) पितृकार्यमें पातितवामजानु

पितृकार्यमें बाँया घुटना तथा देवकार्यमें दाहिना घुटना जमीनपर लगाना चाहिये—

दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥

(श्राद्धकाशिकामें धर्मप्रदीप)

(२३) अग्नौकरण किसमें करें

अग्नौकरणके सम्बन्धमें वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें प्राप्त वचनके अग्न्यभावपदका अर्थ अग्न्याधानाभाव है। जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें—

'अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।' (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें मत्स्यपुराणका वचन)

(२४) देवपात्रालम्भन तथा पितृपात्रालम्भन

देवताओंका पात्रालम्भन उत्तान बायें हाथपर उत्तान दाहिना हाथ स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये तथा पितरोंका पात्रालम्भन अनुत्तान दाहिने हाथपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर करना चाहिये—

(क) पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते। (यम) **एवमेव हेमाद्रिमदनरत्नप्रभृतयः।**

(ख) दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥

दक्षिणोपरि वामञ्च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधि॥

(श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(२५) अंगुष्ठनिवेशन

(क) उत्तान हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

(२६) मण्डलकरण

देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—**(क) दैवे चतुरस्त्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

(२७) भोजनपात्रोंसे तिलादिका अपसारण

पितरोंके भोजनपात्रोंसे परोसनेके पूर्व तिल आदिको हटा लेना चाहिये। ऐसा न करनेसे अर्थात् अन्नपात्रोंमें तिल देखकर पितर निराश होकर वापस लौट जाते हैं—

अन्नपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥

(२८) कुशास्तरणसे पूर्व अवनेजन-दानका विधान

कई प्रयोगपद्धतियोंमें कुशास्तरणके बाद अवनेजन प्रदान करनेकी व्यवस्था दी गयी है, परंतु श्राद्धके आधारभूत ग्रन्थ पारस्करगृह्यसूत्र तथा उसके भाष्यकारोंके निम्न वचनोंके अनुसार कुशास्तरणके पूर्व वेदीके मध्य खींची गयी रेखापर अवनेजन देनेका विधान है—

'दर्भेषु त्रींस्त्रीन् पिण्डानवनेज्य दद्यात्' (पारस्करगृह्यसूत्रपरिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका ३)

अवनेजन देकर दर्भोंके ऊपर पिण्डदान करे।

उपर्युक्त पारस्करगृह्यसूत्रपर कर्काचार्यजीका भाष्य इस प्रकार है—**'पिण्डपितृयज्ञवदुपचार इति सूत्रितत्वात्।'**

'पिण्डपितृयज्ञवदुपचारः पित्र्ये' (श्राद्धकाशिका २। २ तथा पा०गृ० परिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका २)—इस सूत्रके अनुसार पिण्डपितृयज्ञमें जिस प्रक्रियाका आश्रयण किया गया है, उसी तरह अन्य श्राद्धोंमें भी किया जाय। दर्शपौर्णमासमें पितृयज्ञका प्रकरण है, जिसमें पहले अवनेजन करके बादमें कुशास्तरणकी विधि है।

गदाधरभाष्य—अत्राह याज्ञवल्क्यः—सर्वमन्नमुपादाय सतिलं दक्षिणामुखः। उच्छिष्टसन्निधौ पिण्डान् दद्याद्वै पितृयज्ञवत्॥

अत्र पदार्थक्रमः—उल्लेखनम्, उदकालम्भः, उल्मुकनिधानम्, अवनेजनम्, सकृदाच्छिन्नास्तरणम्, पिण्डदानम्।

अर्थात् उच्छिष्टकी सन्निधिमें दक्षिणाभिमुख होकर सभी अन्नोंको लेकर सतिलपितृयज्ञवत् पिण्ड प्रदान करना चाहिये। यहाँ पदार्थक्रम निम्नलिखित है—(१) उल्लेखन (रेखाकरण), (२) उदकालम्भन, (३) उल्मुकसंस्थापन (अंगारभ्रामण), (४) अवनेजन, (५) कुशास्तरण तथा (६) पिण्डदान।

(२९) पिण्ड शब्दकी नपुंसकलिंगता

हेमाद्रि (चतुर्वर्गचिन्तामणि)-में लौगाक्षिके वचनके अनुसार 'पिण्ड' शब्द नपुंसकलिंगमें प्रयुक्त हुआ है, यथा—

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तेभ्यः पिण्डं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥

(गौडीयश्राद्धप्रकाश)

(३०) लेपभागकी व्यवस्था

चौथी पीढ़ीसे सातवीं पीढ़ीतकके सपिण्ड पितरोंकी तृप्ति आदिके लिये लेपभाग प्रदान करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें इस प्रकार दी गयी है—

(क) **लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥** (मत्स्यपु० १८।२९)

(ख) **उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥**

(पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्र-कण्डिका ३)

(ग) **दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥** (ब्रह्मोक्त)

(३१) ऊह-विचार

श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें '**अत्र पितरो मादयध्वम्०**', '**नमो वः पितरः०**', '**अघोराः पितरः०**', '....**स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्**' आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके लिंग-वचन तथा सम्बन्ध आदिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें '**पितरः०**' इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है। वैदिक मन्त्रोंमें *आनुपूर्वी नियत होनेके*

कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा और उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें '**वैदिकाः खल्वपि**'—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने '**वेदे त्वानुपूर्वीनियमाद्वाक्यान्युदाहरति**'—ऐसा लिखा है। इसके अतिरिक्त ऊह न करनेके विषयमें निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

(क) **अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥ '....याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।'** (जैमिनीय न्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) **'....एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः। तथा 'पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्' इति प्रतिषेधादपि नोहः। तथा अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु 'एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः' इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।'** (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

(३२) सामान्य पिण्डदानकी विधि

तीर्थमें श्राद्ध एवं पिण्डदानके अनन्तर सर्वसामान्यके लिये दो पिण्ड बनाकर पृथक्-पृथक् सामान्य पिण्ड भी देनेकी शास्त्रकी विधि है—

एकं पिण्डमुपादाय संस्कृत्य च यथाविधि। ज्ञातिवर्गस्य कृत्स्नस्य सामान्यमिति निर्वपेत्॥

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें देवलका वचन)

(३३) श्राद्ध आदिके मध्यमें आनेवाले अशौचकी अप्रवृत्तिका विचार

व्रत, यज्ञ, विवाह, श्राद्ध, होम, अर्चन तथा जपके प्रारम्भ हो जानेपर अन्तःपाती-अशौच अर्थात् इनके बीचमें आनेवाले

अशौचका इन क्रियाओंपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इन कर्मोंके आरम्भ होनेके पूर्व यदि अशौच हो जाय तो वे कर्म बाधित हो जाते हैं अर्थात् नहीं किये जा सकते—

व्रतयज्ञविवाहेषु श्राद्धे होमेऽर्चने जपे। प्रारब्धे सूतकं न स्यादनारब्धे तु सूतकम्॥

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें विष्णुपुराणका वचन)

(३४) कर्मोंके आरम्भपर विचार

व्रत आदि विभिन्न कर्मानुष्ठानोंके आरम्भके सम्बन्धमें इस प्रकार निर्णय है—यज्ञमें आचार्य आदि ब्राह्मणोंका वरण, व्रत तथा दीर्घकालतक चलनेवाले यज्ञोंमें संकल्प, विवाह आदिमें नान्दीश्राद्ध और श्राद्धमें पाकनिर्माणको आरम्भ माना जाता है—

प्रारम्भो वरणं यज्ञे सङ्कल्पो व्रतसत्रयोः। नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया॥

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें विष्णुपुराणका वचन)

(३५) पिण्ड-प्रतिपत्ति (विसर्जन)

श्राद्ध पूर्ण हो जानेके अनन्तर पिण्डोंको पवित्र जलमें विसर्जित कर दे अथवा ब्राह्मण, अग्नि, अज या गायको प्रदान करे—

ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

(३६) विश्वेदेवों तथा पितरोंके विसर्जनका क्रम

पितरोंका आवाहन विश्वेदेवोंके बाद होता है, किंतु विसर्जन पहले होता है, इसके विपरीत विश्वेदेवोंका आवाहन पहले

और विसर्जन बादमें होता है—

पश्चाद्विसर्जयेद् देवान् पूर्वं पैतामहान् द्विजान्। मातामहानामप्येवं सह देवैः क्रमः स्मृतः॥

(श्राद्धचिन्तामणिमें विष्णुधर्मोत्तरका वचन)

(३७) दीपनिर्वापणकी प्रक्रिया

दीपकको बुझानेसे पुरुषोंकी तथा कूष्माण्डच्छेदनसे स्त्रियोंकी वंशहानि होती है, अतः दीपकको जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर बुझाना चाहिये—

दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

(३८) पितरोंकी प्रसन्नतासे श्राद्धकर्ताका परम कल्याण

पितर अत्यन्त दयालु तथा कृपालु होते हैं। वे अपने पुत्र-पौत्रादिकोंसे पिण्डदान तथा तर्पणकी आकांक्षा रखते हैं। श्राद्धादि क्रियाओंद्वारा पितरोंको परम प्रसन्नता तथा संतुष्टि होती है। प्रसन्न होकर वे पितृगण श्राद्धकर्ताको दीर्घ आयु, संतति, धन-धान्य, विद्या, राज्य, सुख, यश, कीर्ति, पुष्टि, बल, पशु, श्री, स्वर्ग एवं मोक्ष प्रदान करते हैं (मार्कण्डेयपुराण, याज्ञ०स्मृति आ०गण० २७०, यमस्मृति, श्राद्धप्रकाश)।

(क) आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं पितरः श्राद्धतर्पिताः॥

(ख) आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून् सौख्यं धनं धान्यं प्राप्नुयात् पितृपूजनात्॥

गयाश्राद्धकी सामग्री

यहाँ सत्रह दिनों (तीन पक्ष)-की दृष्टिसे श्राद्धकी सामान्य सामग्री लिखी गयी है। अपनी आर्थिक स्थितिके अनुसार न्यूनाधिक (कम-ज्यादा) कर लेना चाहिये।

(१) श्वेत चन्दन मुट्ठा—१, (२) चन्दन घिसनेके लिये चकला—१, (३) रोली—१०० ग्राम, (४) चावल पूजाके लिये—१ किलो, (५) अबीर बुक्का—२५ ग्राम, (६) धूप—दस पैकेट, (७) लौंग—१०० ग्राम, (८) इलायची—१०० ग्राम, (९) कपूर—१०० ग्राम, (१०) गोघृत अथवा शुद्ध घृत—१ किलो, (११) शहद—१ किलो, (१२) सिन्दूर पुड़िया—३, (१३) सुपाड़ी पूजाके लिये—२ किलो, (१४) कच्चा सूत—१०० ग्राम, (१५) नारा (मौली)—१ रील, (१६) काला तिल—१ किलो, (१७) यव (जौ)—१/२ किलो, (१८) कुश—२ हजार (२ किलो), (१९) देशी शर्करा—१ किलो, (२०) जौका आटा या जौका सत्तू—१०-२० किलो (पिण्डके लिये), (२१) जौका सत्तू—१/२ किलो *(यदि प्रथम पार्वणश्राद्धमें खीरका पिण्ड देना हो तो चावल, दुग्ध, शर्करा तथा पात्रादिकी व्यवस्था कर लेनी चाहिये।)*, (२२) पलाशकी दोनिया अथवा हाथसे बने मिट्टीके दीये—५००, (२३) रूई—१०० ग्राम, रूईकी बनी फूलबत्ती—३००, (२४) दियासलाई—१ दर्जन, (२५) तिलका शुद्ध तेल—१/२ किलो (दीपकके लिये), (२६) पीली सरसों—२०० ग्राम, (२७) जनेऊ जोड़ा—२००, (२८) आसन ऊनके—४, (२९) पंचरत्नकी पुड़िया, (३०) सुहाग-पिटारी, (३१) अँगूठी, (३२) इत्रकी शीशी, (३३) पलाशका पत्तल—५० (गयामें अप्राप्य), (३४) धोती एवं गमछा* (३५) विश्वेदेवोंकी दक्षिणाके लिये स्वर्णखण्ड अथवा स्वर्णनिष्क्रय द्रव्य (सामर्थ्यानुसार), (३६) पितरोंकी दक्षिणाके लिये रजतखण्ड

---

* जो लोग पार्वणश्राद्धमें धोती-गमछा देना चाहें, वे श्राद्धके बाद ब्राह्मणोंको वितरण कर दें।

अथवा रजतनिष्क्रयद्रव्य (सामर्थ्यानुसार), (३७) अन्तिम दिन अक्षयवटपर ब्राह्मणके लिये वरण-सामग्री (धोती, गमछा, चादर आदि)।

गयामें प्रतिदिन मँगानेवाली सामग्री—(१) नैवेद्यके लिये पेड़ा अथवा मेवा-मिसरी आदि, (२) फल (केला छोड़कर), (३) पान छुट्टा, (४) दूध, (५) सफेद पुष्प, (६) सफेद पुष्पकी माला, (७) तुलसी, (८) गंगाजल अथवा तीर्थजल।

शय्यादानकी सामग्री—(१) पलंग—१, (२) गद्दा—१, (३) तकिया—२, (४) चादर बिछानेके लिये—१, (५) रजाई—१, (६) लालटेन—१, (७) पंखा—१, (८) घड़ी—१, (९) छड़ी—१, (१०) छाता—१, (११) खड़ाऊँ जोड़ी—१, (१२) रबड़का जूता जोड़ी—१, (१३) गोमुखी—१, (१४) माला—१, (१५) शीशा—१, (१६) तेलकी शीशी—१, (१७) कापी-पेन—१-१, (१८) गीताविष्णुसहस्रनामकी पुस्तक—१, (१९) सुवर्णकी प्रतिमा श्रीविष्णुजीकी—१, (२०) पहननेके लिये वस्त्र, (२१) पाँच बर्तन, (२२) रजतपात्र, (२३) सुवर्ण (आभूषण) , (२४) अन्नदानकी सामग्री, (२५) फल-मिठाई, (२६) द्रव्य-दक्षिणा (नकद रुपया)।

घरसे अपने उपयोगके लिये ले जानेवाला सामान—(१) पंचपात्र, (२) आचमनी, (३) अर्घा (चाँदी अथवा ताँबेका), (४) तामड़ी (तष्टा), (५) लोटा-बालटी, (६) परात या थाली, (७) जमीन पोंछनेका कपड़ा।

प्रतिदिन उपयोगकी सामग्री—(१) कुश, (२) पलाशका दोना पत्तल, (३) हाथकी बनी दियाली-कसोरा, (४) पिण्डदानके लिये जौका आटा, (५) काला तिल, जौ, अक्षत, पीली सरसों, (६) मधु (शहद), (७) शर्करा, (८) गोघृत, (९) दीपकके लिये रूई तथा तिलका तेल, (१०) ताम्बूल, लौंग, इलायची, (११) पूगीफल, (१२) वस्त्र, (१३) धूपबत्ती, रूई, (१४) नैवेद्य, (१५) फल, (१६) द्राक्षा (पिण्डमें मिलानेके लिये), (१७) सिन्दूर, (१८) सौभाग्यद्रव्य, (१९) यज्ञोपवीत, (२०) दियासलाई, (२१) कच्चा सूत, (२२) श्वेत पुष्प एवं श्वेत माला, (२३) श्वेत चन्दन, तुलसी, गंगाजल अथवा तीर्थजल।

गयायात्रांगभूतघृतश्राद्ध

[गयायात्रा करनेके पूर्व घृतश्राद्धकी विधि]

गयायात्राके प्रसंगमें '**उद्यतश्चेद् गयां गन्तुं श्राद्धं कृत्वा विधानतः**' इत्यादि वायु आदि पुराणोंके वचनोंसे यह परिलक्षित है कि गयायात्रासे पूर्व अपने घरपर विधिपूर्वक श्राद्ध करना चाहिये, किंतु कौन-सा श्राद्ध करना चाहिये—यह इस वचनमें स्पष्ट नहीं है, गौडीयश्राद्धप्रकाशमें इस वचनमें उद्धृत श्राद्ध पदका '**मातृपूर्वं नवदैवतम्**' अर्थ किया गया है। मातृपूर्वक नवदैवत्यश्राद्ध नान्दीश्राद्ध है। स्मृतिरत्नावली तथा मदनपारिजात आदि निबन्धग्रन्थोंमें इसी 'श्राद्ध' पदका अर्थ '**घृतप्रधानद्रव्यकम्**' किया गया है और इसका तात्पर्य 'घृतश्राद्ध' से है। इस घृतश्राद्धको पार्वणश्राद्धकी विधिसे करनेकी व्यवस्था त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहकारने बतायी है। पार्वणश्राद्धमें षड्दैवत्य, नवदैवत्य तथा द्वादशदैवत्यश्राद्धकी तीनों विधियाँ हैं। विष्णुपुराणके '**श्राद्धं कृत्वा तु सर्पिषा**' इस वचनसे '**सर्पिषा**' पदमें करणतृतीया विभक्तिके द्वारा निरपेक्षसाधनताका बोध होता है अर्थात् साधनके रूपमें यहाँ घृतकी ही प्रधानता है। इस कारण इसे घृतश्राद्धकी संज्ञा दी गयी है। घृतश्राद्धका तात्पर्य घृतप्रचुरश्राद्ध है।

अतः यह श्राद्ध पार्वणश्राद्धकी विधिसे घृतबहुल हविष्यान्नके द्वारा किया जाना चाहिये। इस श्राद्धमें घृतद्रव्यका प्राधान्य होनेके कारण इसे 'घृतश्राद्ध' कहते हैं। गयायात्राके प्रसंगमें इसी घृतश्राद्धको आभ्युदयिक (नान्दी) श्राद्ध माना गया है।

यात्राके अंगके रूपमें किया जानेवाला यह श्राद्ध यात्राके आरम्भ होनेके पूर्व ही घरपर किया जाता है। इस श्राद्धके सम्पन्न होनेपर गयायात्रामें अन्तःपाती-अशौच अर्थात् मध्यमें अशौच आ जानेपर उसकी प्रवृत्ति नहीं होती अर्थात् स्वतः निवृत्ति मान ली जाती है।

आगे षड्दैवत्य घृतश्राद्धका प्रयोग लिखा जा रहा है—

घृतश्राद्धप्रयोग[१]

स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र[२] (धोती तथा उत्तरीय—चादर आदि) धारण कर ले। पहलेसे गोबरसे लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे।

पाकनिर्माण—श्राद्धदेशके ईशानकोणमें पिण्डदानके लिये पाक तैयार कर ले। पिण्डके लिये घृतबहुल गाढ़ी खीर बनानी चाहिये। पाक-निर्माणके अनन्तर पाकमें तथा ब्राह्मणोंके निमित्त बनी भोजन-सामग्रीमें तुलसीदल छोड़कर भगवान्‌का भोग लगा दे। पाकनिर्माणके अनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

---

१. यदि श्राद्ध करानेवाले कोई आचार्य साथ ले जायँ, उनका अथवा गयामें श्राद्ध करानेवाले पण्डितका वरण कर लेना चाहिये।

२. (क) **स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥**

स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध, भोजन आदि सत्कर्म एक वस्त्र धारणकर नहीं करने चाहिये।

(श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

(ख) **विकच्छोऽनुत्तरीयश्च नग्नश्चावस्त्र एव च। श्रौतस्मार्तं नैव कुर्यात्।** (धर्मसिन्धु)

पार्वणविधिसे किये जानेवाले गयायात्रांगभूतघृतश्राद्धका स्वरूप

* जो लोग अन्य सम्बन्धियोंका भी श्राद्ध करना चाहें, वे वृद्धप्रमातामहके आसनके पूर्वभागमें एक आसन और लगा लें।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन[1]—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः**—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

विश्वेदेवोंके लिये पात्रासादन—घृतश्राद्धमें विश्वेदेवोंके दो आसन होते हैं—१-पितृपितामहादिके विश्वेदेवोंके लिये तथा २-मातामहादिके विश्वेदेवोंके लिये। अतः श्राद्धभूमिके पश्चिमकी ओर दक्षिणोत्तरक्रमसे पलाशके दो पत्ते बिछाकर उन दोनोंपर आसनके लिये एक-एक त्रिकुश पूर्वाग्र स्थापित कर दे। उन दोनोंपर त्रिकुशके दो कुशवटु (कुश-ब्राह्मण) बनाकर पूर्वाग्र स्थापित कर दे।

उन दोनों आसनोंके सामने भोजनपात्रके रूपमें पलाश आदिका एक-एक पत्ता रख दे और भोजनपात्रोंके उत्तर दिशामें एक-एक अर्घपात्र (दोनिया)[2], एक-एक जलपात्र (दोनिया) तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया) भी रख दे।

---

१. **सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें मार्कण्डेयका वचन)

२. अर्घपात्र, जलपात्र तथा घृतपात्रके लिये दोनिया अथवा हाथका बना मिट्टीका दीया रखना चाहिये।

पितरोंके लिये पात्रासादन—घृतश्राद्धमें सपत्नीक* पिता, पितामह तथा प्रपितामह और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त छः पृथक्-पृथक् आसन आदि होते हैं।

विश्वेदेवोंके आसनोंसे कुछ दूर दक्षिण-पूर्व दिशामें पश्चिम-पूर्वक्रमसे पृथक्-पृथक् छः पत्तोंपर दक्षिणाग्र छः मोटकरूप आसन रखे। उन छहों आसनोंपर त्रिकुशमें ग्रन्थि लगाकर छः कुशवटु बनाकर एक-एक कुशवटु पृथक्-पृथक् उत्तराग्र रखे। छहों आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र तथा भोजनपात्रके पश्चिम दिशामें एक-एक अर्घपात्र, एक-एक जलपात्र तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र भी रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—इस श्राद्धमें दो रक्षादीप होंगे। एक विश्वेदेवोंके निमित्त तथा दूसरा पितरोंके निमित्त। विश्वेदेवके आसनोंके पश्चिम अक्षत अथवा जौपर रखकर पूर्वाभिमुख तिलके तेल अथवा घृतका एक दीपक जला दे। इसी प्रकार पितरोंके आसनके दक्षिणमें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका दूसरा दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दोनों दीपकोंका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः—कहकर फूल चढ़ा दे।

---

* **स्वेन भर्ता समं श्राद्धं माता भुङ्क्ते सुधासमम्। पितामही च स्वेनैव तथैव प्रपितामही॥** *(निर्णयसिन्धु तृ०पू०में कात्यायनका वचन)*

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्‌का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्‌का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

'**ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः**'—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—

'**श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।**'

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—

पूर्वमें—**प्राच्यै नमः।** दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः।** पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः।** उत्तरमें—**उदीच्यै नमः।** आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः।** भूमिपर—**भूम्यै नमः।**

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें* खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर पूर्वाभिमुख हो निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे भूर्लोके

* **पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह। तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा॥**

जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ....क्षेत्रे (यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे)/ ....नगरे/ ग्रामे ....संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ....ऋतौ ....मासे ....पक्षे ....तिथौ ....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा[1]/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणां [2]....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृ-पितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां [3]....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्माता-महप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानामसद्‌गतीनां सद्‌गतिप्राप्तये सद्‌गतीनाञ्च अपुनरावर्ति-विष्ण्वादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदान[4]

(क) विश्वेदेवोंके लिये आसनदान—प्रदक्षिणक्रमसे पितरोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके आसनोंके दक्षिणकी ओर रखे हुए अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय। तदनन्तर आसनदानका संकल्प करे—

---

१. ब्राह्मणको अपने नामके साथ '**शर्मा**', क्षत्रियको '**वर्मा**' तथा वैश्यको '**गुप्त**' जोड़ना चाहिये।

२. पिता, पितामह, प्रपितामहका नामोच्चारण करें।

३. नाना, परनाना, वृद्धपरनानाका नामोच्चारण करें।

४. **अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी च शेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥** (निर्णयसिन्धु)

दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकानां विश्वेषां देवानामिदं त्रिकुशात्मकमासनं वो नमः।

ऐसा संकल्प पढ़कर दक्षिणोत्तर क्रमसे स्थित विश्वेदेवोंके दोनों आसनोंपर देवतीर्थसे संकल्पका जल छोड़ दे।

(ख) पितरोंके लिये आसनदान—विश्वेदेवोंके आसनकी परिक्रमा करते हुए पितरोंके आसनके समीप अपने आसनपर आ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय तथा बायाँ घुटना[1] जमीनसे लगाकर पितरोंके आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

एकतन्त्रसे आसनदानका संकल्प—**ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे इमानि मोटकरूपाणि आसनानि विभज्य वो नमः।**[2] कहकर संकल्पजल आसनोंपर छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलमें जाना—पितरोंको आसनदान करके उनकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय और विश्वेदेवोंका आवाहन करे।

---

१. **दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥**

२. यहाँ स्वधाका निषेध है—

आसनाह्वानयोरर्घे तथाक्षय्येऽवनेजने। क्षणे स्वाहा स्वधा वाणीं न कुर्यादब्रवीन्मनुः॥ (श्राद्धकाशिकामें धर्मप्रदीप)

विश्वेदेवोंका आवाहन*—हाथमें जौ लेकर निम्न मन्त्रोंसे विश्वेदेवोंका आवाहन करे—**विश्वान् देवानावाहयिष्ये।**

ॐ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इमꣳ हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।
ॐ विश्वे देवाः शृणुतेमꣳ हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।
ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम्॥
आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः।
ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते॥

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः—इस मन्त्रसे दोनों आसनोंपर जौ छोड़े।

पितरोंका आवाहन—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः पितरोंके आसनके सामने अपने आसनपर बायाँ घुटना जमीनपर टेककर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। तिल लेकर पितरोंका आवाहन करे—**पितॄनावाहयिष्ये।**

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥
ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

'**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥**'—मन्त्र पढ़कर पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहके आसनोंपर तिल छोड़े।

* जौ (यव)-से देवताओंका और अपसव्य होकर तिलोंसे पितरोंका आवाहन करना चाहिये—
'**आवाहयेद् यवैर्देवान् अपसव्यं तिलैः पितॄन्।**' (वीरमित्रोदय श्राद्धप्रकाशमें भविष्यपुराणका वचन)

विश्वेदेवोंके मण्डलमें आना—तदनन्तर पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके आसनके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय तथा अर्घपात्रका निर्माण करे।

दो अर्घपात्रोंका निर्माण—दो अर्घपात्रों (दोनियों)-में निम्न मन्त्रसे दो कुशपत्रोंका एक-एक पवित्रक पूर्वाग्र रखते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दोनों अर्घपात्रोंमें जल डाले—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

निम्न मन्त्रसे दोनों अर्घपात्रोंमें जौ डाले—

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।'

गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

इसके बाद पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके प्रथम अर्घपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे अर्घपात्रसे पवित्रक निकालकर विश्वेदेवके भोजनपात्रपर पूर्वाग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' कहकर एक आचमनी जल पवित्रकके ऊपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

अर्घदान* का संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा प्रथम अर्घपात्रको लेकर पित्रादि-सम्बन्धी विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे—

(क) ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमःकहकर अर्घका जल देवतीर्थसे पवित्रकपर छोड़ दे और अर्घपात्रको विश्वेदेवोंके दक्षिण दिशाके आसनके दक्षिण भागमें '**विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि**' कहकर उत्तान (सीधा) रख दे।

पूर्वोक्त रीतिसे दूसरे अर्घपात्रको भी अभिमन्त्रित कर ले।

दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा द्वितीय अर्घपात्रको लेकर मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे—

(ख) ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमःकहकर पूर्वकी तरह अर्घदान आदि करे और **विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि**—कहकर अर्घपात्रको विश्वेदेवोंके उत्तर दिशाके आसनके दक्षिण भागमें रख दे।

विश्वेदेवोंका पूजन—दोनों विश्वेदेवोंका निम्न उपचारोंसे पूजन करना चाहिये—

---

*अर्घदान, अक्षय्योदकदान, पिण्डदान, अवनेजनदान, प्रत्यवनेजनदान और स्वधावाचनमें एकतन्त्रकी विधि नहीं है—

अर्घेऽक्षय्योदके चैव पिण्डदानेऽवनेजने। तन्त्रस्य तु निवृत्तिः स्यात् स्वधावाचन एव च॥ (कात्यायनस्मृति २४।१५, वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाश)

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर यवाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर विश्वेदेवोंके अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्राणां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर दोनों आसनोंपर संकल्पजल छोड़ दे।

मण्डलकरण

विश्वेदेवमण्डलकरण—दोनों विश्वेदेवोंके भोजनपात्रोंके सहित आसनोंके चारों ओर दक्षिणावर्त जलसे घेरते हुए दो पृथक्-पृथक् चौकोर* मण्डल बनाये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

* देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—(क) **दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

अग्नौकरण—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें अपने आसनपर आकर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। एक दोनियेमें जल भरकर सामने रख ले। बने हुए पाकमें घृत छोड़कर पाकान्नसे दो आहुतियाँ दोनियेके जलमें* निम्न मन्त्रोंसे दे—

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा। (२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

इस प्रकार अग्नौकरण करनेके उपरान्त पितरोंकी परिक्रमा करते हुए पुनः विश्वेदेवमण्डलमें आकर अपने आसनपर उत्तराभिमुख बैठ जाय। तदनन्तर अन्नपरिवेषण करे।

अन्नपरिवेषण—दोनों विश्वेदेवोंके लिये रखे हुए दोनों पृथक्-पृथक् भोजनपात्रोंसे जौ आदि हटा ले। बने हुए पाक तथा भोजन-सामग्रीसे प्रथम भोजनपात्रपर घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्न तथा पक्वान्नका परिवेषण करे। घृतपात्रमें घृत छोड़ दे, जलपात्रमें जल छोड़ दे और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए परोसे गये हविष्यान्नपर दोनों हाथोंसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

इसी प्रकार दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्रमें भी घृतद्रव्यप्रधानहविष्य तथा पक्वान्न परोसे तथा घृतपात्रमें घृत और जलपात्रमें जल छोड़ दे। तदनन्तर हविष्यान्नपर '**मधु वाता०**' से मधु छोड़े।

---

* '**अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।**' (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें मत्स्यपुराणका वचन)

यहाँ अग्न्यभावका अर्थ अग्न्याधानाभाव है। जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानाभावके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें।

पात्रालम्भन[१]—उत्तान (सीधे) बायें हाथपर उत्तान (सीधा) दायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

अंगुष्ठनिवेशन[२]—तदनन्तर बायें हाथसे अन्नपात्रका स्पर्श किये हुए दाहिने अँगूठेको घृतप्रधान अन्नादिमें रखकर बोले—

अन्नमें—**इदमन्नम्।** जलमें—**इमा आपः।** घीमें—**इदमाज्यम्।** तदनन्तर घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नको पुनः स्पर्शकर बोले—**इदं हव्यम्।**

इसके बाद विश्वेदेवोंके भोजनपात्रके चारों ओर निम्न मन्त्रसे जौ छींटे—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

---
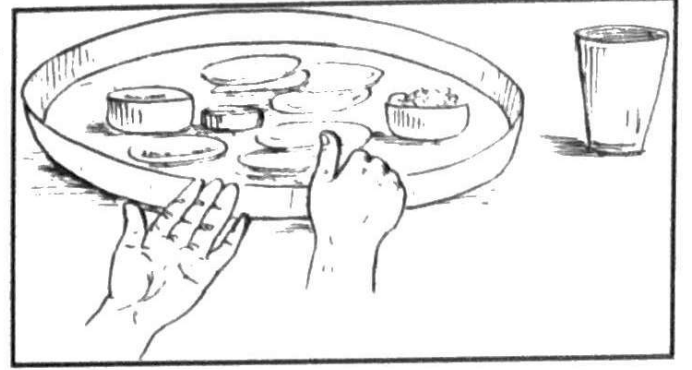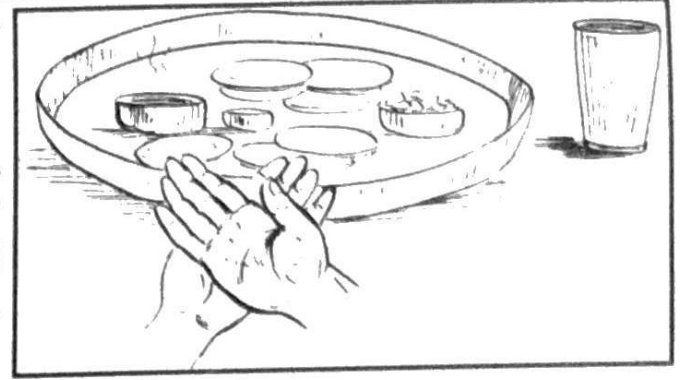
१. (क) **दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य पृथ्वी ते पात्रमुच्चरेत्॥** (ख) **पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।** (यम)

२. (क) उत्तान हाथके अँगूठेसे अन्नस्पर्श करनेपर वह श्राद्ध आसुरश्राद्ध हो जाता है और पितरोंको उपलब्ध नहीं होता। इसलिये अनुत्तान हाथके अँगूठेसे अन्न आदिका स्पर्श करना चाहिये—

उत्तानेन तु हस्तेन कुर्यादन्नावगाहनम्। आसुरं तद्भवेच्छ्राद्धं पितॄणां नोपतिष्ठते॥

(ख) जो अज्ञानवश उत्तान हाथसे अंगुष्ठनिवेशन करता है तो वह अन्न राक्षसोंको प्राप्त होता है—

उत्तानेन तु हस्तेन द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। यः करोति नरो मोहात् तद्वै रक्षांसि गच्छति॥ (धौम्य)

ॐ अद्य ……गोत्राणां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं घृतमन्नाद्युपस्करसहितं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर भी पूर्वकी भाँति पात्रालम्भन, अंगुष्ठनिवेशन आदि करके निम्न रीतिसे अन्नसमर्पणका संकल्प करे—

अन्नदानका संकल्प—ॐ अद्य ……गोत्राणां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदं घृतमन्नाद्युपस्करसहितं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

पितरोंके मण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलके पास अपने आसनपर आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पिता, पितामह आदिके लिये छः पृथक्-पृथक् अर्घपात्रोंको बनाये।

छः अर्घपात्रोंका निर्माण—पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहके पास रखे हुए अर्घपात्रों (दोनियों)-में क्रमसे दो कुशपत्रोंका बना एक-एक पवित्रक दक्षिणाग्र निम्न मन्त्र पढ़ते हुए रखे—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

निम्न मन्त्रसे क्रमशः छहों अर्घपात्रोंमें जल छोड़े—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

छहों अर्घपात्रोंपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः।
प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितॄँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा॥

और छहों अर्घपात्रोंमें गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

अर्घदान—इस प्रकार छः अर्घपात्रोंका निर्माणकर निम्न रीतिसे अर्घदानकी क्रिया सम्पन्न करे।

पहले पितावाले अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर उसका पवित्रक निकालकर पिताके भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्रसे एक आचमनी जल पवित्रकपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे—

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः।
हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳस्योनाः सुहवा भवन्तु॥

तदनन्तर अर्घदानका संकल्प करे—

(१) पिताके लिये अर्घदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अर्घपात्रको दाहिने हाथमें लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्र ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्पितः सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः।

—बोलकर पितृतीर्थसे पवित्रकपर आधा जल गिरा दे। पवित्रक उठाकर अर्घपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको

यथास्थान सुरक्षित रख दे।

इसी प्रकार सपत्नीक पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके पाँचों अर्घपात्रोंको पृथक्-पृथक् अभिमन्त्रित आदि करे और आगे लिखी रीतिसे अर्घदानका संकल्प करे—

(२) पितामहके लिये अर्घदानका संकल्प—दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अर्घपात्र लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्र ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्पितामह सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः। कहकर पहले संकल्पकी भाँति अर्घदानप्रक्रिया पूर्णकर अर्घपात्र यथास्थान स्थापित कर दे।

(३) प्रपितामहके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्प्रपितामह सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः। पूर्वकी भाँति सम्पूर्ण क्रिया करे।

(४) मातामहके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मन्मातामह सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् क्रिया करे।

(५) प्रमातामहके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्प्रमातामह सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् क्रिया करे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये अर्घदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मद् वृद्धप्रमातामह सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एष हस्तार्घस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् अर्घदान देकर अर्घपात्रको यथास्थान स्थापित कर दे।

पिता, पितामह तथा प्रपितामहके अर्घपात्रोंका संयोजन—प्रपितामहके अर्घपात्रका जल आदि पितामहके अर्घपात्रमें और पितामहके अर्घपात्रका जल आदि पिताके अर्घपात्रमें छोड़ दे। तदनन्तर पिताके सजल अर्घपात्रको पितामहके अर्घपात्रपर रखे और उन दोनों अर्घपात्रोंको प्रपितामहके अर्घपात्रपर रखकर तीनोंको पिताके आसनके वामपार्श्वमें अर्थात् पश्चिम दिशामें '**पितृभ्यः स्थानमसि**' कहकर उलटकर रख दे (अर्थात् सबसे नीचे पिताका उसके ऊपर पितामहका तथा उसके ऊपर प्रपितामहका अर्घपात्र रहेगा)। इन अर्घपात्रोंको दक्षिणादानपर्यन्त न सीधा करे और न हिलाये।

मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके अर्घपात्रोंका संयोजन—पूर्वकी भाँति वृद्धप्रमातामहके अर्घपात्रका जल आदि प्रमातामहके अर्घपात्रमें और प्रमातामहके अर्घपात्रका जल आदि मातामहके अर्घपात्रमें छोड़ दे। तदनन्तर मातामहके सजल अर्घपात्रको प्रमातामहके अर्घपात्रके ऊपर तथा उन दोनोंको वृद्धप्रमातामहके अर्घपात्रपर रखकर तीनोंको मातामहके आसनके वामभागमें अर्थात् पश्चिम दिशामें '**मातामहादिभ्यः स्थानमसि**' कहकर उलटकर रख दे। इन अर्घपात्रोंको दक्षिणादानपर्यन्त न सीधा करे और न हिलाये।

पितरोंका पूजन—पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके छहों आसनोंपर पृथक्-पृथक् विविध उपचारोंसे एक साथ पूजन करे। यथा—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।
इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।
इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।
एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।
एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।
हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।
इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।
इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।
इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।
एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः द्वितीयगोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः करिष्यमाण-गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पजल सभी आसनोंपर छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले पुनः अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

मण्डलकरण[1]—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जलद्वारा वामावर्त सभी भोजनपात्रों और आसनोंके चतुर्दिक् गोल मण्डल बनाये। सर्वप्रथम पिताके आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर मण्डल बनाये। इसी प्रकार पितामह तथा मातामह आदि सभीके आसनों तथा भोजनपात्रोंके चारों ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए मण्डल बनाना चाहिये—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान—दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। एक दोनेमें घृतबहुलहविष्यान्न परोसकर उसमें घृत, तिल, मधु छोड़कर तथा दूसरे दोनेमें जल लेकर जलसे सिंचित भूमिमें वह अन्न तथा जल भूस्वामीके पितरोंके निमित्त निम्न मन्त्र बोलकर पितृतीर्थसे रख दे—

ॐ इदं हविष्यान्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।

अन्नपरिवेषण—पिता, पितामहादि तथा मातामहादिके लिये स्थापित छहों भोजनपात्रोंपर पड़े तिल आदि हटाकर पात्रोंको साफ कर ले; क्योंकि भोजनपात्रोंमें तिलको देखकर पितृगण निराश होकर लौट जाते हैं।[2] तदनन्तर घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्न

१. **दैवे चतुरस्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट)

२. **तिलान् सर्वत्र निःक्षिप्य पितृपात्रेषु वर्जयेत्। पितृपात्रे तिलान् दृष्ट्वा निराशाः पितरो गताः॥**

तथा पक्वान्नको छहों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् परोसे। बायें भागमें पूर्वस्थापित जलपात्रोंमें जल तथा सामने स्थित घृतपात्रोंमें घी छोड़ दे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छहों भोजनपात्रोंमें परोसे गये घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नपर दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े—
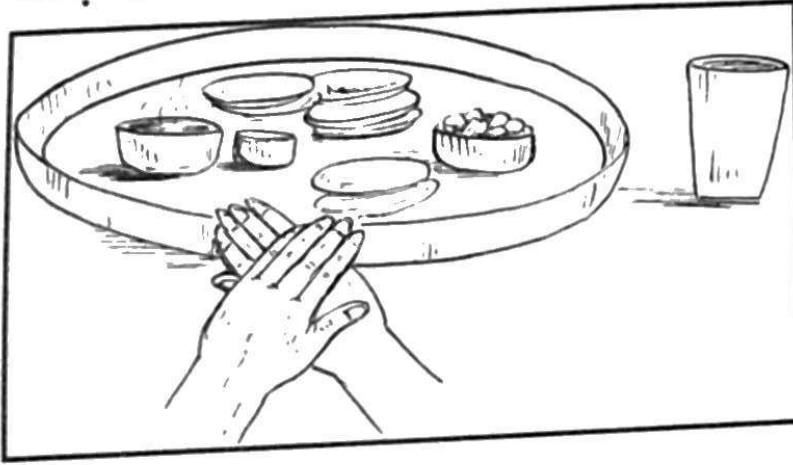
ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर* क्रमशः सभी अन्नपात्रोंको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—**ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।**
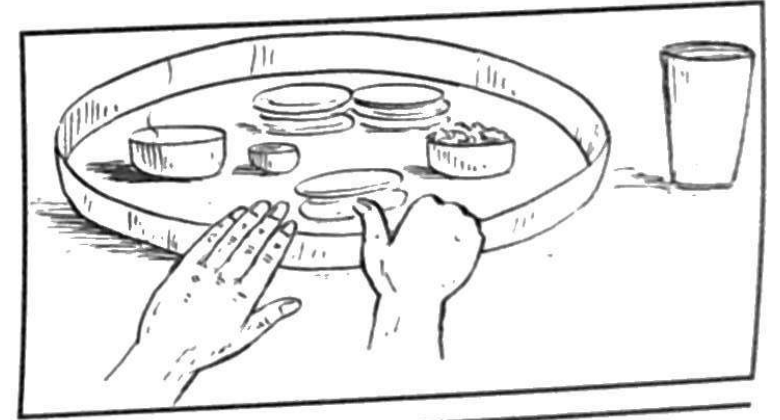
अंगुष्ठनिवेशन—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथका अनुत्तान अँगूठा घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नमें रखकर बोले—

अन्नमें—**इदमन्नम्**। जलमें—**इमा आपः**। घीमें—**इदमाज्यम्**। पुनः अन्न छूकर बोले—**इदं कव्यम्**।

---

* (क) **दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥** (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख) **पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।** (यम)

तिलविकिरण—भोजनपात्रोंमें घृतप्रधानहविष्यान्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

'ॐ अपहता असुरा रक्षा:सि वेदिषदः॥'

अन्नदानका संकल्प—संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्राय ""शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय सपत्नीकाय पित्रे करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे इदं घृतमन्नाद्युपस्करसहितं ते स्वधा—ऐसा कहकर संकल्पजल भोजनपात्रपर छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

इसी प्रकार पितामह आदि सभीके अन्नपात्रोंपर भी आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन, तिलविकिरण तथा संकल्पकी क्रियाएँ करे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले। अन्नदानके संकल्पमें पिताके स्थानपर पितामह, प्रपितामह तथा मातामह आदि जोड़ ले। अन्नदानके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़े—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

सव्य होकर हाथ धो ले और आचमन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—पितरोंका ध्यान करते हुए पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेदशास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव पुरुषसूक्त, रुचिस्तव तथा रक्षोघ्नसूक्त आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ— **ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥**

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

स्मृतिपाठ—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ॥
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती ॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥

महाभारत—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ॥

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।

माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

विकिरदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर नैर्ऋत्यकोण*की भूमिको जलसे सींचकर उसपर दक्षिणाग्र त्रिकुश बिछा दे। घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नसे कुछ अंश लेकर मोटक, तिल और जलसहित वह हविष्यान्न पितृतीर्थसे कुशोंपर रखे, उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम्। उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम्॥

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

पवित्री, मोटक आदि वहीं छोड़ दे। हाथ-पैर धोकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय, आचमन कर ले, हरिस्मरण करनेके बाद नयी पवित्री धारण कर ले।

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी एक हाथ लम्बी-चौड़ी एक वेदी पिता, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये।

इसी प्रकार दूसरी वेदी मातामहादिके निमित्त बनाये। दोनों वेदियोंको जलसे सींचकर पवित्र कर ले। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।

पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

---

* आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्धमें पूर्वमें, पार्वणश्राद्धमें नैर्ऋत्यमें, सांवत्सरिकश्राद्धमें अग्निकोणमें तथा प्रेतश्राद्धमें दक्षिण दिशामें विकिरदान करना चाहिये—**आभ्युदयिके तु पूर्वे नैर्ऋत्ये पार्वणे तथा। अग्निकोणे क्षयाहे स्यात् प्रेतश्राद्धे च दक्षिणे॥**

रेखाकरण—दोनों वेदियोंपर दायें हाथसे तीन कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक सीधमें तीन रेखाएँ खींचे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः ॥

उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—दोनों वेदियोंके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारका भ्रमण कराये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर रख दे। यह कार्य अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी किया जा सकता है—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।
परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥

अवनेजनपात्रस्थापन—अवनेजनपात्रके रूपमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे तीन दोनिये पिता, पितामह तथा प्रपितामहकी वेदीके पश्चिम भागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये मातामहादिकी वेदीके पश्चिम भागमें रख दे। छहों दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाण-गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।

कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली रेखामें गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान

सुरक्षित रख ले।

(२) पितामहके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्पितामह ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।** उसी प्रकार आधा जल वेदीकी मध्यरेखामें गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्प्रपितामह ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीपर दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(४) मातामहके लिये—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मन्मातामह ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(५) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्प्रमातामह ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

कुशास्तरण*—समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बार विभक्तकर दोनों वेदियोंपर बिछा दे।

पिण्डनिर्माण तथा पिण्डदान—घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर कपित्थ (कैथ)-

---

* **दर्भग्रहणमिहोपमूलसकृदाछिन्नोपलक्षणार्थम्।** (पा०गृ०सू० श्राद्धसूत्रकण्डिका ३, **दर्भेषु** पर कर्काचार्यजीका भाष्य)

फलके बराबर छः गोल-गोल पिण्ड बना ले और उन्हें किसी पत्तलपर रख दे।

बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर एक पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं[1] स्वधा—कहकर पिण्डको पितरोंकी वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

(२) पितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

(३) प्रपितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

लेपभाग[2]—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नको '**लेपभागभुजः**

१. हेमाद्रि (चतुर्वर्गचिन्तामणि)-में लौगाक्षिके वचनके अनुसार 'पिण्ड' शब्द नपुंसकलिंगमें प्रयुक्त हुआ है, यथा—
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तेभ्यः पिण्डं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥ (गौडीय श्राद्धप्रकाश)

२. (क) चौथी पीढ़ीसे सातवीं पीढ़ीतकके सपिण्ड पितरोंकी तृप्ति आदिके लिये लेपभाग प्रदान करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें है—
लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥ (मत्स्यपु० १८। २९)
(ख) **उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥** (पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्रकण्डिका ३)
(ग) **दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥** (ब्रह्मोक्त)

पितरस्तृप्यन्ताम्' कहकर रख दे। अन्तमें पिण्डाधार कुशोंके मूलमें तीन बार हाथ पोंछ ले।

(४) मातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मन्मातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

(५) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्प्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पूर्ववत् वेदीपर कुशोंके मध्यमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पूर्ववत् वेदीपर स्थित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे सँभालकर रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए घृतद्रव्यप्रधानहविष्यान्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर रख दे। अन्तमें पिण्डाधार कुशोंके मूलमें तीन बार हाथ पोंछ ले।

सव्य होकर आचमनकर भगवान्का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े—**अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।**

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेज:पुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और **अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत** यह मन्त्र पढ़े।

यह क्रिया दूसरी वेदीपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका दान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो दोनियेमें जल डाल ले। छहोंका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

(१) पिताके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ......गोत्र अस्मत्पितः ......शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(२) पितामहके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ......गोत्र अस्मत्पितामह ......शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ......गोत्र अस्मत्प्रपितामह ......शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रपितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(४) मातामहके लिये—ॐ अद्य ......गोत्र अस्मन्मातामह ......शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे मातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(५) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्प्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मद्वृद्धप्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे और भगवान्‌का स्मरण करे। पुनः अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र (कच्चा धागा) पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और '**एतद्वः पितरो वासः**' कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्पितः ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार पितामहादिके पिण्डोंपर भी सूत्र चढ़ाकर पृथक्-पृथक् सूत्रदानका संकल्प करे।

पिण्डपूजन—तदनन्तर छहों पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् उपचारोंसे एक साथ पूजन करे—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः द्वितीय-गोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः करिष्यमाण-गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल छोड़ दे।

षड्ऋतु-नमस्कार—तदनन्तर पितृस्वरूप छः ऋतुओंको निम्न मन्त्रोंसे नमस्कार करे*—

(१) ॐ वसन्ताय नमः, (२) ॐ ग्रीष्माय नमः, (३) ॐ वर्षायै नमः, (४) ॐ शरदे नमः, (५) ॐ हेमन्ताय नमः तथा **(६) ॐ शिशिराय नमः।**

विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदान—पितृमण्डलसे पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों भोजनपात्रोंपर—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

---

* **वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः। वर्षाभ्यश्च शरच्छंज्ञऋतवे च नमः सदा॥**
हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च। मासंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः॥ (ब्रह्मपुराण)

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर जौ छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—(क) हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल दक्षिण दिशामें स्थित पित्रादि-सम्बन्धी विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर देवतीर्थसे छोड़ दे।

(ख) इसी प्रकार मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके निमित्त संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल उत्तर दिशामें स्थित मातामहादि-सम्बन्धी विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर देवतीर्थसे छोड़ दे।

पितरोंको अक्षय्योदकदान—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। पिता, पितामहादि तथा मातामहादिके छहों भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् क्रमशः पितृतीर्थसे—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल लेकर पृथक्-पृथक् संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितुः सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे पिताके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) पितामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रपितामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रपितामहके भोजन-पात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(४) मातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मन्मातामहस्य सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे मातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(५) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके भोजनपात्रपर

संकल्पजल छोड़ दे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मद्वृद्धप्रमातामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पूर्वकी भाँति पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए सभी छः पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

आशीष-प्रार्थना—सव्य पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा देना—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पितृपितामहादिके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

इसी प्रकार मातामहादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे और छहों पिण्डोंको उठाकर किसी पत्तल आदिपर रखकर जलमें प्रवाहित

कर दे या गायको खिला दे।* पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको अन्य अग्निमें छोड़ दे।

विश्वेदेवोंके अर्घपात्रोंका संचालन—पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें जाकर अपने आसनपर बैठ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों अर्घपात्रोंको हिला दे।

दक्षिणादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा स्वर्ण अथवा निष्क्रय-द्रव्य लेकर विश्वेदेवोंके निमित्त दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ""गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां करिष्यमाणगयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमां हिरण्यदक्षिणां/हिरण्यनिष्क्रयद्रव्यं ""गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणोंको दे दे। भोजनके पश्चात् देना हो तो '**दातुमुत्सृज्ये**' कहकर दक्षिणा देवासनपर रख दे।

पितृमण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। पहले उलटकर रखे गये अर्घपात्रोंको सीधा कर दे। तदनन्तर सव्य पूर्वाभिमुख होकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

दक्षिणादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा या तन्निष्क्रयद्रव्य लेकर संकल्प करे—

* **ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां ....शर्मणां/ वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/ वर्मणां/ गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां कृतैतद् गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमानि रजतखण्डानि/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजितकर देना हो तो '**नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये**' कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितरोंका विसर्जन*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए पितरोंके आसनोंपर तिल छींटकर विसर्जन करे—

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः।
अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः॥

विश्वेदेवोंका विसर्जन—पितरोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलसे विश्वेदेवमण्डलमें आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर हाथमें जौ लेकर '**विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्**' कहकर विश्वेदेवोंके आसनोंपर जौ छोड़ते हुए विसर्जन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—विश्वेदेवोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय

---

* पितरोंका आवाहन विश्वेदेवोंके बाद होता है, किंतु विसर्जन पहले होता है, इसके विपरीत विश्वेदेवोंका आवाहन पहले होता है और विसर्जन बादमें होता है—

पश्चाद्विसर्जयेद्देवान् पूर्वं पैतामहान् द्विजान्। मातामहानामप्येवं सह देवैः क्रमः स्मृतः॥ (*श्राद्धचिन्तामणिमें विष्णुधर्मोत्तरका वचन*)

और निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

रक्षादीपनिर्वापण*—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर एक बारमें दीप बुझा दे। हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना कृतैतद् गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसाङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थ गोदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ……गोत्रः ……शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ……गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ……शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना कृतैतद् गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धप्रतिष्ठार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यं ……गोत्राय ……शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय भवते सम्प्रददे।** कहकर यथाशक्ति

* दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

किंचित् गोनिष्क्रयद्रव्य आचार्यको प्रदान करे।

भोजनदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणविधिना कृतैतद् गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धसाङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं पञ्चबलिपूर्वकं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये तेभ्यो दक्षिणादिकं च दातुं प्रतिजाने।** कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

पंचबलि—ब्राह्मणभोजनसे पूर्व पंचबलि* कर लेनी चाहिये। बलि निकालकर गौ, कुत्ता तथा कौआ आदिको समर्पित

---

* **पंचबलिविधि**—पाँच पत्तोंपर अलग-अलग भोजन-सामग्री रखकर नीचे लिखे अनुसार पंचबलि करनी चाहिये—

(१) गोबलि (पत्तेपर)—मण्डलके बाहर पश्चिमकी ओर निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए सव्य होकर गोबलि पत्तेपर दे—

सौरभेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः । प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्यमातरः ॥

इदं गोभ्यो न मम। (यदि मन्त्र स्मरण न रहे तो केवल '**गोभ्यो नमः**' आदि नाम-मन्त्रसे बलि-प्रदान कर सकते हैं।)

(२) श्वानबलि (पत्तेपर)—जनेऊको कण्ठीकर निम्नलिखित मन्त्रसे कुत्तोंको बलि दे—

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यामन्नं प्रयच्छामि स्यातामेतावहिंसकौ ॥

इदं श्वभ्यां न मम।

(३) काकबलि (पृथ्वीपर)—अपसव्य होकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर कौओंको भूमिपर अन्न दे—

ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम् ॥

इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

(४) देवादिबलि (पत्तेपर)—सव्य होकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर देवता आदिके लिये अन्न दे—

कर दे।

कर्मका समर्पण—अनेन कृतेन गयायात्राङ्गभूतघृतश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्-स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ गयायात्रांगभूतघृतश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

देवा मनुष्याः पशवो वयांसि सिद्धाः सयक्षोरगदैत्यसङ्घाः। प्रेताः पिशाचास्तरवः समस्ता ये चान्नमिच्छन्ति मया प्रदत्तम्॥
इदमन्नं देवादिभ्यो न मम।

(५) पिपीलिकादिबलि (पत्तेपर)—इसी प्रकार निम्नांकित मन्त्रसे चींटी आदिको बलि दे—

पिपीलिकाः कीटपतङ्गकाद्या बुभुक्षिताः कर्मनिबन्धबद्धाः। तेषां हि तृप्त्यर्थमिदं मयान्नं तेभ्यो विसृष्टं सुखिनो भवन्तु॥
इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो न मम।

घृतश्राद्धके अनन्तरके कृत्य एवं गयायात्राप्रारम्भ

ब्राह्मणपूजन—घृतश्राद्धके अनन्तर यथाशक्ति ब्राह्मणोंका पूजन करना चाहिये और उनसे तथा गुरुजनों एवं मित्रोंसे गयायात्राके लिये आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

गयायात्राका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर गयायात्रा प्रारम्भ करने तथा गया जाकर पितरोंके उद्धारके लिये श्राद्धादि कर्म सम्पादित करनेहेतु निम्न संकल्प करना चाहिये—

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ ····गोत्रः ····शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहमस्मत्पित्रादिसमस्तपितॄणां सप्तगोत्रेष्वेकोत्तरशतपुरुषाणां* दशपूर्वदशापरस्ववंश्यानां च पदे पदे स्वर्गारोहणसिद्धये नरकोद्धारपूर्वकशाश्वतब्रह्मविष्णुरुद्रादि-लोकप्राप्तये च गयाश्राद्धं कर्तुं गयायात्रां करिष्ये। कहकर हाथका संकल्पजलादि छोड़ दे।

काषायवस्त्रधारण तथा ग्रामप्रदक्षिणा—इस प्रकार गया-यात्राका संकल्पकर किसी दोनेमें धुले हुए चावलमें पंचगव्य मिलाकर रख ले और गैरिक (गेरुआ) वस्त्र धारण कर ले अथवा धोतीके एक कोनेको गेरुए रंगमें रँग ले।

---

* (क) **पिता माता च भार्या च भगिनी दुहिता तथा। पितृमातृश्वसा चैव सप्तगोत्राणि वै विदुः॥** (धर्मसिन्धु)
पिता, माता, भार्या (पत्नी), भगिनी (बहन), दुहिता (कन्या) तथा पिता एवं माताकी बहन (बुआ तथा मौसी)—ये सात गोत्र कहलाते हैं।

(ख) **तत्त्वानि विंशति नृपा द्वादशैकादशा दश। अष्टाविति च गोत्राणां कुलमेकोत्तरं शतम्॥** (निर्णयसिन्धु)
पितापक्षके तत्त्व अर्थात् चौबीस पुरुष (सांख्यशास्त्रमें परिगणित प्रकृति, महत् तथा अहंकार आदि चौबीस तत्त्व), माताके बीस, पत्नीके नृप अर्थात् सोलह (महाभारतके द्रोणपर्वमें सोलह प्रसिद्ध राजाओंका वर्णन आया है, यहाँ नृप कहनेसे सोलह संख्याका ग्रहण है), बहनोईके बारह, दामादके ग्यारह, फूफाके दस, मौसाके आठ—ये एक सौ एक कुल कहलाते हैं।

तदनन्तर पंचगव्यमिश्रित चावलके दोनियेको हाथमें लेकर गीत-वाद्यकी ध्वनिके साथ अक्षतोंको छींटते हुए (अथवा दुग्धधारासे) ईशानकोणसे ईशानकोणतक गाँवकी प्रदक्षिणा करे। ग्रामकी प्रदक्षिणा करना सम्भव न हो तो अपने घरकी तथा देवालयकी प्रदक्षिणा करे अथवा अपने स्थानपर ही प्रदक्षिणा कर ले।

पितरोंका आवाहन—प्रदक्षिणाके अनन्तर सभी पितरोंका आवाहन करना चाहिये और उनसे प्रार्थना करनी चाहिये कि वे मेरे साथ गयातीर्थमें चलें, ताकि मैं वहाँ श्राद्धादिकर्म सम्पन्नकर उनका उद्धार कर सकूँ।

चावल लेकर नीचे लिखे हुए प्रत्येक मन्त्र पढ़कर पितरोंका आवाहन करे और चावलोंको किसी पात्रमें डालता जाय*—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १॥

मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ २॥

अजातदन्ता ये केचिद् ये च गर्भे प्रपीडिताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ३॥

बन्धुवर्गाश्च ये केचिन् नामगोत्रविवर्जिताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ४॥

अदग्धाश्च मृता ये च विषशस्त्रहताश्च ये। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ५॥

अग्निदाहमृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ६॥

अग्निदग्धाश्च ये केचिद् विद्युच्चौरहताश्च ये। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ७॥

* आवाहनवाले चावलोंको बाँधकर या सच्छिद्र गरीगोलेमें रखकर यात्रामें अपने साथ ले जाना चाहिये। इन्हें गयाकूपमें अथवा धर्मारण्यमें डाल देना चाहिये।

रौरवे चान्धतामिस्त्रे कालसूत्रे च ये गताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ८ ॥

असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ९ ॥

अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोके च ये गताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १०॥

पशुयोनिं गता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ ११॥

अनेकयातनासंस्था ये नीता यमकिङ्करैः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १२॥

जात्यन्तरसहस्रेषु भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १३॥

अथवा वृक्षयोनिस्था ये जीवाः पापकारिणः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १४॥

मानुष्यं दुर्लभं येषां कर्मणा कोटिजन्मभिः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १५॥

येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १६॥

दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः पितरो बान्धवादयः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १७॥

गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवादयः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १८॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ १९॥

क्रियालोपगता ये च ये चान्धाः पङ्गवस्तथा। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ २०॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। ते गच्छन्तु मया सार्धं विमुक्त्यर्थं गयाशिरे॥ २१॥

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथावंशभवा मदीयाः।
वंशद्वयेऽस्मिन् मम दासभूता दारास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
मित्राणि शिष्याः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम वंशजाता आयान्तु ते विष्णुपदे मया सह॥

पितरोंके आवाहनके बाद एक या तीन ब्राह्मणोंको भोजन करा दे या निष्क्रयद्रव्य दे दे और यात्रासम्बन्धी सामग्री लेकर शुभ मुहूर्तमें घरसे प्रस्थान करे। घरमें जो घृतश्राद्ध किया था, उससे अवशिष्ट उस घृतबहुल हविष्यान्नको साथमें ले ले।

कुछ दूर जाकर किसी देवालय, धर्मशाला या नदी आदिके तटपर टिक जाय, वहाँ साथमें लाये हुए घृतबहुल हविष्यान्नसे पारणा करे। उस रात्रिको वहीं रुक जाय और दूसरे दिन प्रातः सन्ध्यावन्दनादि कृत्य पूर्णकर तीर्थयात्रीका वेष धारणकर भगवान् गदाधरका स्मरण करते हुए यात्रा प्रारम्भ करे।

गयामें श्राद्धका क्रम

गयाजीमें वर्षभरमें कभी भी पिण्डदान-श्राद्धादि कर्म हो सकता है, किंतु पितृपक्ष (महालय)-का विशेष महत्त्व माना गया है। इस अवधिमें सभी पितृगण गयाजीमें तर्पण तथा पिण्डदान-श्राद्ध आदिके लिये पुत्रादिसे विशेषरूपसे आकांक्षा रखते हैं। पितरोंकी संतृप्ति तथा सद्गतिके लिये तर्पण एवं पिण्डदान मुख्य कर्म हैं। इसीलिये श्रद्धालुजन पितृ-ऋणसे मुक्त होनेके लिये यहाँ तर्पण तथा पिण्डदान-श्राद्धादिकर्म सम्पन्न करते हैं।

सम्पूर्ण गयाश्राद्ध मुख्यरूपसे तीन पक्षोंमें पूर्ण करनेकी विधि है। तीन पक्षका तात्पर्य सत्रह दिनोंसे है। भाद्रपद शुक्लपक्षकी चतुर्दशीसे प्रारम्भकर आश्विन शुक्ल प्रतिपदातक गयातीर्थकी वर्तमान सम्पूर्ण पैंतालीस वेदियोंपर श्राद्ध सम्पन्न होता है। जो लोग पितृपक्षमें श्राद्धके लिये गया पधारते हैं, वे भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशीको पुनःपुनामें श्राद्ध करते हैं तथा भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमासे लेकर आश्विन कृष्णपक्षके पन्द्रह दिनोंमें गयाकी सम्पूर्ण वेदियोंपर श्राद्ध करते हैं और आश्विन शुक्लपक्षकी प्रतिपदाको गायत्रीघाटपर केवल मातामह (नानापक्ष)-का श्राद्धकर गयायात्रा पूरी करते हैं। इस प्रकार भाद्रपद शुक्लपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष तथा आश्विन शुक्लपक्ष—तीन पक्षोंमें यह श्राद्ध सम्पन्न होनेकी विधि है।

इस विधिसे किया जानेवाला श्राद्ध सर्वश्रेष्ठ तथा उत्तम फल देनेवाला माना जाता है। शास्त्रोंमें तो यहाँतक कहा जाता है

कि गयाजीमें श्राद्ध करनेवालोंको कालका विचार नहीं करना चाहिये, अपितु वहाँ नित्य पिण्डदान प्राप्त है अर्थात् कभी भी श्राद्ध किया जा सकता है। जो यहाँ तीन पक्ष (सत्रह दिन)-तक निवास करता है, वह अपनी सात पीढ़ियोंको तार देता है—

न कालादि गयातीर्थे दद्याद् पिण्डांश्च नित्यशः। पक्षत्रयनिवासी च पुनात्यासप्तमं कुलम्॥

(अग्निपु० ११५।८)

वायुपुराण (१०५।११)-में बताया गया है कि यहाँपर तीन पक्ष (सत्रह दिन) निवास करनेवाला पुत्र अपने सात पूर्वपुरुषोंका उद्धार कर देता है। यदि किसी कारणवश तीनपक्ष (सत्रह दिन) गयामें रहकर श्राद्ध करना सम्भव न हो तो पन्द्रह दिन, सात रात अथवा तीन रातका निवास भी महान् फलदायी होता है—

पक्षत्रयनिवासी च पुनात्यासप्तमं कुलम्। नो चेत्पञ्चदशाहं वा सप्तरात्रिं त्रिरात्रिकम्॥

आगे सत्रह दिन, सात दिन, पाँच दिन, तीन दिन तथा एक दिनके श्राद्धस्थल क्रमशः दिये जा रहे हैं—

[१] गयातीर्थमें सत्रह दिनके श्राद्धस्थलोंकी तालिका

गयातीर्थमें यदि पितृपक्षमें सत्रह दिन रहकर श्राद्ध करना हो तो प्रत्येक दिनके पृथक्-पृथक् श्राद्धस्थल इस प्रकार हैं—

तिथि	श्राद्धस्थल
१. भाद्रशुक्ल चतुर्दशी	पुनःपुनातीर्थमें श्राद्धादि।
२. भाद्रशुक्ल पूर्णिमा	फल्गुनदीमें स्नान, तर्पण और नदीतटपर खीरके पिण्डसे फल्गुश्राद्ध।*
३. आश्विनकृष्ण प्रतिपदा	ब्रह्मकुण्डपर जौचूर्णसे पिण्ड बनाकर श्राद्ध; प्रेतपर्वत, प्रेतशिला, रामशिला, रामकुण्डपर श्राद्ध और काकबलि।
४. आश्विनकृष्ण द्वितीया	पंचतीर्थ—उत्तरमानस, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस और जिह्वालोल तीर्थोंपर पिण्डदान तथा गदाधरजीका पंचामृतसे स्नानादि।
५. आश्विनकृष्ण तृतीया	सरस्वतीस्नान, पंचरत्नदान, मतंगवापी, धर्मारण्यकूप और बोधगयाश्राद्ध।
६. आश्विनकृष्ण चतुर्थी	ब्रह्मसरोवरपर श्राद्ध, काकबलि, तारकब्रह्मका दर्शन तथा आम्रसिंचन।
७. आश्विनकृष्ण पंचमी	विष्णुपद, रुद्रपद तथा ब्रह्मपदपर श्राद्ध आदि।

* यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन पिण्डके लिये घरसे खीर बनाकर ले जाय और प्रथम वेदीपर खीरका पिण्डदान करे। अन्य वेदियोंपर सुविधाकी दृष्टिसे जौचूर्ण आदि अन्य विहित द्रव्योंका पिण्ड देना चाहिये।

८. आश्विनकृष्ण षष्ठी	कार्तिकपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्याग्निपद, आहवनीयाग्निपद तथा सूर्यपदोंका श्राद्धादि।
९. आश्विनकृष्ण सप्तमी	चन्द्रपद, गणेशपद, सभ्याग्निपद, आवसथ्याग्निपद एवं दधीचपद तथा कण्वपदोंके श्राद्धतर्पण।
१०. आश्विनकृष्ण अष्टमी	मतंगपद, क्रौंचपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, कश्यपपदोंपर श्राद्धादि और गजकर्णिकापर तर्पण।
११. आश्विनकृष्ण नवमी	रामगया, सीताकुण्डपर श्राद्ध, बालुकापिण्डदान, सौभाग्यपेटिकादान।
१२. आश्विनकृष्ण दशमी	गयाशिर एवं गयाकूपपिण्डदान।
१३. आश्विनकृष्ण एकादशी	मुण्डपृष्ठ, आदिगदाधरश्राद्ध और धौतपदश्राद्ध।
१४. आश्विनकृष्ण द्वादशी	भीमगया, भस्मकूटपर्वतपर भगवान् जनार्दनका दर्शन-पूजन, अपने तथा जीवित सम्बन्धियोंके लिये पिण्डदान, मंगलागौरीदर्शन, गोप्रचार और गदालोलश्राद्धादि।
१५. आश्विनकृष्ण त्रयोदशी	विष्णुभगवान्का पंचामृतसे स्नान, पूजनादि तथा फल्गुनदीमें दूधका तर्पण।
१६. आश्विनकृष्ण चतुर्दशी	वैतरणीश्राद्ध, गोदान तथा तर्पण।

१७.	आश्विनकृष्ण अमावास्या	अक्षयवटश्राद्ध, शय्यादान, ब्राह्मणभोजन एवं सुफल।
१८.	आश्विनशुक्ल प्रतिपदा	गायत्रीघाटपर दही तथा चावलसे पिण्डदान, पार्वणविधिसे मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामह (सपत्नीक)-का श्राद्ध।

विशेष—श्राद्धके दिनोंमें सुविधानुसार किसी दिन विष्णुपदपर विष्णुसहस्रनाम अथवा विष्णु-अष्टोत्तरशतनामसे तुलसीदलसे अर्चा कर लेनी चाहिये।*

आगे संक्षेपमें इन कृत्योंकी पृथक्-पृथक् विधि दी गयी है।

इस ग्रन्थमें तर्पणकी विधि (पृ०-सं० १२२) तथा श्राद्धकी चार विधियाँ दी गयी हैं—१-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक नवदैवत्यपार्वणश्राद्ध (पृ०-सं० १३६), २-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्ध (पृ०-सं० १८७), ३-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध (पृ०-सं० २१८) तथा ४-तीर्थप्राप्तिनिमित्तक एकपिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध (पृ०-सं० २३८)। इनमें पार्वण तथा तीर्थश्राद्ध मुख्य हैं, जो प्रायः पहली वेदीपर तथा दूसरी वेदीतक किये जा सकते हैं। अन्य वेदियोंपर समयाभावके कारण पिण्डदानात्मक अथवा एकपिण्डदानात्मक श्राद्ध कर सकते हैं।

---

* श्रीविष्णुसहस्रनामावली गीताप्रेससे प्रकाशित सहस्रनामस्तोत्रसंग्रह पुस्तककी पृ०-सं० ५२पर दी गयी है। जो सहस्रनामोंसे अर्चा करनेमें असमर्थ हों, वे अष्टोत्तरशतनामसे तुलसीदलसे अर्चा करें। इस पुस्तकके पृ०-सं० २५१ पर भगवान् विष्णुका अष्टोत्तरशतनामस्तोत्र तथा पृ०-सं० २५३ पर अष्टोत्तरशतनामावली दी गयी है।

[२] पुनःपुनातीर्थमें श्राद्ध

गयायात्रीको चाहिये कि वह गयासे पूर्व मार्गमें पड़नेवाले प्रयाग, काशी, शोणनद आदि तीर्थोंमें स्नानादि कृत्य सम्पादित करके श्राद्ध करे। मार्गस्थित तीर्थोंका उल्लंघन नहीं करना चाहिये। प्रायः गयाजीमें आश्विन कृष्णपक्ष (पितृपक्ष)-में श्राद्ध करनेकी परम्परा अधिक है। जो लोग तीन पक्ष अर्थात् भाद्रशुक्ल पूर्णिमासे लेकर आश्विनशुक्ल प्रतिपदातक सत्रह दिन वहाँ रहकर श्राद्ध करना चाहते हैं, वे प्रायः भाद्रशुक्ल चतुर्दशीको पुनःपुनातीर्थमें पहुँचते हैं। यह तीर्थ अनुग्रहनारायणस्टेशनसे पश्चिमकी दिशामें लगभग डेढ़ किलोमीटरकी दूरीपर स्थित है।

पुनःपुनातीर्थमें पहुँचकर सर्वप्रथम निम्न मन्त्रसे तीर्थको प्रणाम करना चाहिये—

पुनःपुनेति विख्याता पितृणां तीर्थमुत्तमम्। अस्मत्कुले मृता ये च आगच्छन्तु पुनःपुनाम्॥

अर्थात् 'पुनःपुना' समस्त पितरोंके पुण्यतीर्थके रूपमें विख्यात है। हमारे कुलमें जो भी मृत्युको प्राप्त हुए हैं, वे सभी इस तीर्थमें आयें।

इस प्रकार तीर्थकी प्रार्थना करके कव्य-ग्रहण करनेके लिये पितरोंको आहूत करना चाहिये।

तदनन्तर स्नान, तर्पण तथा श्राद्धादि कृत्य करना चाहिये। पुनःपुनाका श्राद्ध आवश्यक बताया गया है।

[३] गयातीर्थमें सत्रह दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य

पहले दिनका कृत्य

पुनःपुनातीर्थमें तर्पण-श्राद्धादि कर्म सम्पादितकर गयातीर्थके लिये प्रस्थान करना चाहिये और भाद्रशुक्ल पूर्णिमाको फल्गुतीर्थमें पहुँचकर यहाँका कृत्य करना चाहिये। गयामें प्रथम दिन फल्गुतीर्थमें ही स्नान, तर्पण, श्राद्धादि कर्म होते हैं। यह गयायात्राका मुख्य एवं प्रथम कर्म है।

तीर्थके समीप जाकर हाथ-पैर धोकर '**ॐ गयातीर्थाय नमः**'—इस नाममन्त्रसे गन्ध-पुष्प आदिसे तीर्थका पूजनकर जलके अन्दरसे पाँच बालुकाके पिण्डोंको निकालकर बाहर रख ले और तीर्थजलको प्रणवमन्त्र (ओंकार)-से आलोडित करके यथासम्भव नारियल तथा सुवर्ण लेकर निम्न मन्त्रसे तीर्थमें स्नान करनेकी आज्ञा माँगे और तीर्थको प्रणाम करे—

देवदेव जगन्नाथ शङ्खचक्रगदाधर। देहि विष्णोरनुज्ञां मे तव तीर्थावगाहने॥
फल्गुतीर्थ नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थोत्तमोत्तम। गृहाणेदं नारिकेलं सुवर्णेन समन्वितम्॥

तदनन्तर रक्तवस्त्रवेष्टित नारियल तथा सुवर्ण/सुवर्णनिष्क्रय-द्रव्य ब्राह्मणको प्रदानकर उन्हें प्रणाम करे और फल्गुगंगाके जलसे आचमन करके त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न रीतिसे स्नानका संकल्प करे—

फल्गुस्नान-संकल्प—ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे बौद्धावतारे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे ····क्षेत्रे ····संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ····ऋतौ ····मासे ····पक्षे ····तिथौ

....वासरे ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं स्वसमस्तपितॄणामक्षयतृप्त्यर्थमसद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनां च अपुनरावर्तिविष्ण्वादिलोकप्राप्तये गयायां फल्गुतीर्थे फल्गुतीर्थप्राप्तिनिमित्तकं स्नानतर्पणश्राद्धादिकर्म करिष्ये। हाथका जलादि छोड़ दे।

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे फल्गुतीर्थके जलकी प्रार्थना करे—

फल्गुतीर्थे पुण्यजले करोमि स्नानमादृतः। पितॄणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥

प्रार्थनाके अनन्तर '**ॐ नमो नारायणाय**' मन्त्रका सात बार जपकर इसी मन्त्रसे अपने सिरपर सात अंजलि जल डाले, फिर फल्गुमें स्नान करे।

स्नानके अनन्तर पवित्र वस्त्रोपवस्त्र (धोती-गमछा) धारणकर आसनपर बैठकर तिलक लगाये और भगवान् गदाधरका स्मरण करे। तदनन्तर तर्पण तथा श्राद्धादि कर्म सम्पादित करे।

दूसरे दिनका कृत्य

दूसरे दिन अर्थात् आश्विनकृष्ण प्रतिपदाको फल्गुतीर्थमें स्नानकर गयाके वायव्यकोणमें स्थित प्रेतपर्वतपर जाकर वहाँ ईशानकोणमें स्थित ब्रह्मकुण्डतीर्थपर जाना चाहिये।

वहाँ संकल्पपूर्वक ब्रह्मकुण्डमें स्नान करे। तदनन्तर तर्पणकर संकल्पपूर्वक श्राद्ध करे।

श्राद्धके लिये ब्रह्मकुण्डका जल लेकर प्रेतपर्वतपर सुवर्णरेखांकित प्रेतशिलाके समीप जाकर हाथ-पैर धोकर पवित्र हो जाय और आसनपर बैठकर आचमन करे। श्राद्धस्थलको जलसे शुद्ध कर ले। पुनः अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर कव्यवाडादि पितरोंका

ध्यान करे और श्राद्धका संकल्पकर श्राद्ध सम्पादित करे। वहींपर प्रेतत्वमुक्तिकी इच्छासे अपने बन्धु-बान्धवोंके लिये भी पिण्डदान करे और प्रेतत्वसे छुटकारा दिलानेके लिये संकल्पपूर्वक निम्न मन्त्रसे क्रमशः तिलमिश्रितसक्तु (सत्तू) भूमिपर छिड़के—

ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु सक्तुभिस्तिलमिश्रितैः॥

इसके बाद निम्न मन्त्रसे तिलमिश्रित जलांजलि पितृतीर्थसे प्रदान करे—

आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं यत्किञ्चित् सचराचरम्। मया दत्तेन तोयेन तृप्तिमायान्तु सर्वशः॥

इस प्रकार तिलतोयांजलि देकर ब्राह्मणको दक्षिणा प्रदान करे।

तदनन्तर वहाँसे नीचे प्रभासपर्वतसे लगे हुए रामतीर्थमें जाकर स्नानका संकल्प करे और निम्न मन्त्रसे रामकुण्डपर मार्जन-स्नान करे—

जन्मान्तरशतं साग्रं यन्मया दुष्कृतं कृतम्। तत्सर्वं विलयं यान्तु रामतीर्थाभिषेचनात्॥

तदनन्तर तर्पण एवं श्राद्ध करे।

श्राद्धके अनन्तर पापोंसे मुक्ति प्राप्त करनेके लिये भगवान् श्रीरामको निम्न मन्त्रसे प्रार्थनापूर्वक प्रणाम करे—

राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर। त्वां नमाम्यत्र देवेश मम नश्यतु पातकम्॥

इसके बाद प्रभासक्षेत्रमें रामशिलापर जाकर श्राद्ध करे और तीर्थको प्रणाम करनेके अनन्तर अपने त्रिविध पापोंके नाशके लिये निम्न मन्त्रसे रामतीर्थ और प्रभासतीर्थको नमस्कार करे—

आपस्त्वमसि देवेश ज्योतिषां पतिरेव च। पापं नाशय देवेश मनोवाक्कायकर्मजम्॥

तदनन्तर यमराज तथा धर्मराजकी प्रसन्नता तथा पितरोंकी मुक्तिके लिये निम्न मन्त्रसे तिलजलमिश्रित भातकी बलि प्रदान करे—

यमराजधर्मराजौ निश्चलार्थं हि संस्थितौ। ताभ्यां बलिं प्रयच्छामि पितॄणां भुक्तिमुक्तये॥

यमराजधर्मराजाभ्यामेष बलिर्न मम।

तदनन्तर नग नामक पर्वतपर निम्न श्लोकसे उसी प्रकार श्वानोंको बलि प्रदान करे—

द्वौ श्वानौ श्यामशबलौ वैवस्वतकुलोद्भवौ। ताभ्यां बलिं प्रयच्छामि रक्षेतां पथि सर्वदा॥

एष बलिः श्वभ्यां न मम।

तीसरे दिनका कृत्य

तीसरे दिन अर्थात् आश्विनकृष्ण द्वितीयाको पंचतीर्थीकृत्य अर्थात् उत्तरमानस, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस तथा जिह्वालोल—इन पाँच तीर्थोंमें पिण्डदानादि कृत्य होता है।

फल्गुतीर्थमें स्नान-तर्पण करके उत्तरमानसतीर्थमें जाकर और तीर्थजलसे आचमन तथा मार्जनकर स्नानका संकल्प करे तथा निम्न मन्त्र पढ़कर आत्मशुद्धि एवं सूर्यलोकप्राप्ति तथा पितरोंकी मुक्तिकी कामनासे तीर्थमें स्नान करे—

उत्तरे मानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये। सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धये पितृमुक्तये॥

स्नानके अनन्तर तीर्थमें यथाविधि श्राद्ध करे और फिर पितरोंको सूर्यलोककी प्राप्ति करानेके उद्देश्यसे उत्तरार्कका पूजन करे।

तदनन्तर मौन होकर दक्षिण मानसतीर्थमें जाकर उदीचीतीर्थमें मार्जन-स्नानका संकल्पकर निम्न मन्त्रसे मार्जन-स्नान तथा

सूर्यप्रार्थना करे—

ब्रह्महत्यादिपापौघः यातनाया विमुक्तये। दिवाकर करोमीह स्नानं दक्षिणमानसे॥

नमामि सूर्यं तृप्त्यर्थं पितॄणां तारणाय च। पुत्रपौत्रधनैश्वर्यायुरारोग्यवृद्धये ॥

इसके पश्चात् श्राद्ध करे।

तदनन्तर कनखलतीर्थमें जाकर मार्जन-स्नान एवं श्राद्ध करे।

फिर दक्षिणमानसतीर्थमें स्नानका संकल्प करे और निम्न मन्त्रपूर्वक तीर्थमें मार्जन-स्नान करे—

दक्षिणे मानसे स्नानं करोम्यात्मविशुद्धये। सूर्यलोकादिसंसिद्धिसिद्धये पितृमुक्तये॥

मार्जन-स्नान करके श्राद्धकर्म करे और दक्षिणार्कको प्रणाम निवेदन करे तथा मौन होकर पूजन करे।

तदनन्तर फल्गुतीर्थमें जाकर मार्जन-स्नानादि करके जिह्वालोलपर श्राद्ध करे।

फिर दक्षिणदिशास्थित मधुश्रवा नामके पितामहका पूजनकर निम्न मन्त्रसे उन्हें प्रणाम करे—

नमः शिवाय देवाय ईशानपुरुषाय च। अघोरवामदेवाय सद्योजाताय शम्भवे॥

पुनः फल्गुतीर्थमें जाकर मार्जन-स्नान करे और भगवान् गदाधरका दर्शन करे तथा पंचामृतसे उनको स्नान कराये एवं निम्न मन्त्रसे यथाशक्ति उनका पूजन करे—

नमस्ते वासुदेवाय नमः संकर्षणाय च। प्रद्युम्नायानिरुद्धाय श्रीधराय च विष्णवे॥

चौथे दिनका कृत्य

चौथे दिन आश्विनकृष्ण तृतीयाको सरस्वतीस्नान, मतंगवापी, धर्मारण्य और बोधगयामें श्राद्ध होता है।

प्रातः फल्गुतीर्थमें स्नान, तर्पण करके संकल्पपूर्वक धर्मारण्यतीर्थमें जाय। मार्गमें सरस्वतीतीर्थपर मार्जन-स्नान, तर्पण करके ब्राह्मणको पंचरत्नका दान करे और देवी सरस्वतीका दर्शन करे।

तदनन्तर मतंगवापी जाकर तीर्थको प्रणामकर वहाँ श्राद्ध करे। तत्पश्चात् निम्न मन्त्रसे मतंगवापीके उत्तरमें स्थित मतंगेश्वरको प्रणाम करे—

प्रमाणं देवता सन्तु लोकपालाश्च साक्षिणः। मयागत्य मतङ्गेऽस्मिन्पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

धर्मारण्यमें जाकर ब्रह्मतीर्थसंज्ञक ब्रह्मकूपमें श्राद्ध करे। तदनन्तर धर्मराज एवं धर्मेश्वरको प्रणाम करे। इसके बाद बोधगयामें जाकर महाबोधिवृक्षके नीचे अपने तथा समस्त पितरोंके उद्धारकी कामनासे श्राद्ध करे। तदनन्तर निम्न मन्त्रोंसे नारायणरूप बोधिवृक्षको श्रद्धाभक्तिपूर्वक प्रणाम करे—

चलद्दलाय वृक्षाय सर्वदा स्थितिहेतवे। बोधितत्त्वाय यज्ञाय अश्वत्थाय नमो नमः॥
एकादशोऽसि रुद्राणां वसूनां पावकस्तथा। नारायणोऽसि देवानां वृक्षराजोऽसि पिप्पल॥
अश्वत्थ यस्मात्त्वयि वृक्षराज नारायणस्तिष्ठति सर्वकालम्।
अतः शुभस्त्वं सततं तरूणां धन्योऽसि दुःस्वप्नविनाशनोऽसि॥
बोधिरूपं महावृक्षं नारायणमनःप्रियम्। त्वां नमामि महावृक्ष पितृभ्यो निष्कृतिं कुरु॥

येऽस्मत्कुले मातृवंशे बान्धवाः दुर्गतिं गताः। त्वद्दर्शनात्स्पर्शनाच्च स्वर्गतिं यान्तु तेऽक्षयाम्॥

ऋणत्रयं मया दत्तं गयामागत्य वृक्षराट्। त्वत्प्रसादान्महापापाद् विमुक्तोऽहं भवार्णवात्॥

पाँचवें दिनका कृत्य

पाँचवें दिन आश्विनकृष्ण चतुर्थीको ब्रह्मसरोवरपर श्राद्ध, आम्रसेचन तथा काकबलि आदि कृत्य होते हैं।

प्रातः फल्गुतीर्थमें स्नानादिकृत्य सम्पन्नकर तर्पण करे और ब्रह्मसरोवरतीर्थमें जाकर संकल्पपूर्वक निम्न मन्त्रसे मार्जन-स्नान करे—

स्नानं करोमि तीर्थेऽस्मिन्नृणत्रयविमुक्तये। श्राद्धाय पिण्डदानाय तर्पणायात्मशुद्धये॥

मार्जन-स्नानके अनन्तर तर्पण तथा श्राद्ध करे। तदनन्तर कुशयुक्त जलसे निम्न मन्त्रद्वारा सर्वदेवमय आम्रवृक्षका सिंचन करे—

आम्रं ब्रह्मसरोद्भूतं सर्वदेवमयं विभुम्। विष्णुरूपं प्रसिञ्चामि पितृणां च विमुक्तये॥

तदनन्तर ब्रह्मयूपकी प्रदक्षिणा करे और फिर ब्रह्मसरोवरके वायव्यकोणमें स्थित ब्रह्माजीको निम्न मन्त्रसे प्रणाम करे—

नमस्ते ब्रह्मणेऽजाय जगज्जन्मादिकारिणे। भक्तानां च पितृणां च तारणाय नमो नमः॥

तदनन्तर यमराज, धर्मराज एवं दोनों श्वानोंको बलि देकर निम्न मन्त्रसे काकबलि प्रदान करे—

ऐन्द्रवारुणवायव्या याम्या वै नैर्ऋतास्तथा। वायसाः प्रतिगृह्णन्तु भूमौ पिण्डं मयोज्झितम्॥

इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

तदनन्तर मार्जन-स्नान करे।

छठे दिनका कृत्य

छठे दिन अर्थात् आश्विनकृष्ण पंचमीको प्रातःकाल फल्गुतीर्थमें स्नान, तर्पण आदि कृत्य करके विभिन्न पदोंमें श्राद्धादि कृत्य सम्पादित करना चाहिये।

सर्वप्रथम विष्णुपद जाकर विष्णुपददर्शन तथा पूजनके लिये संकल्प करके भगवान् विष्णुका दर्शन करे तथा स्पर्श करे—

अत्र विष्णुपदं दिव्यं दर्शनात्पापनाशनम्। स्पर्शनात्पूजनाच्चैव पितॄणां मुक्तिहेतवे॥

तदनन्तर भक्तिपूर्वक विष्णुपूजन करना चाहिये और फिर खीरके पिण्डसे श्राद्ध करे। तत्पश्चात् रुद्रपद तथा ब्रह्मपदपर भी यथाविधि श्राद्ध करना चाहिये। विष्णुपदपर तीर्थाचार्यकी पूजा करनी चाहिये।

सातवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण षष्ठीको भी नित्यकी तरह प्रातः फल्गुतीर्थमें स्नान, तर्पण आदि करके विष्णुपूजन करे और फिर कार्तिकपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्याग्निपद, आहवनीयाग्निपद और सूर्यपदपर यथाविधि श्राद्ध करे।

आठवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण सप्तमीको प्रातः फल्गुनदीमें स्नान तथा तर्पणादि कृत्य करके विभिन्न वेदियोंमें श्राद्ध करे। विष्णुपूजन करके सर्वप्रथम चन्द्रपदमें जाकर श्राद्ध करे; फिर गणेशपद, सभ्याग्निपद और आवसथ्याग्निपदके साथ ही दधीचपद तथा कण्वपदपर श्राद्धकृत्य करे।

नवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण अष्टमीको प्रातः फल्गुनदीमें स्नानकर तर्पणादि कृत्य सम्पन्नकर अवशिष्ट वेदियोंमें श्राद्ध करे। विष्णुपूजनकर

सर्वप्रथम मतंगपदमें जाय और वहाँ यथाविधि श्राद्ध करे। तदनन्तर क्रौंचपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद तथा कश्यपपदोंपर श्राद्धादि कृत्य अनुष्ठित करे।

तदनन्तर पदशिलाके उत्तरमें स्थित गजकर्णिकामें समस्त पितरोंके उद्धारकी कामनासे दूध अथवा शुद्ध जलसे पितरोंका तर्पण करे, अन्नदान करे और फिर पदशिलाके उत्तरभागमें स्थित कनकेश्वर, केदारेश्वर, नरसिंह और वामनभगवान्का दर्शनकर पूजन करे।

दसवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण नवमीको प्रातः फल्गुस्नानादि कर्म करके रामकुण्डपर श्राद्ध होता है तथा सीताकुण्डपर माता, पितामही और प्रपितामहीको बालूके पिण्ड दिये जाते हैं।

सर्वप्रथम फल्गुतीर्थके उस पार भरताश्रम जाकर रामेश्वर महादेव, राम-सीता आदिको निम्न मन्त्रसे प्रणाम करे—

राम राम महाबाहो देवानामभयङ्कर। त्वां नमस्येऽत्र देवेश मम नश्यतु पातकम्॥

तदनन्तर रामपदमें श्राद्ध करे। फिर नदीतटपर आकर निम्न मन्त्रोंको पढ़कर बालुकामय तीन पिण्ड अपसव्य दक्षिणामुख होकर प्रदान करे—

सिकतायाः ददौ सीता पिण्डं सौभाग्यहेतवे। गयामागत्य रामेण तीर्थे दशाश्वमेधिके॥
सिकतायाः ददौ सीता पिण्डं पितृविमुक्तये। गयामागत्य रामेण तीर्थे दशाश्वमेधिके॥
सिकतायाः ददौ सीता पिण्डं मातृविमुक्तये। गयामागत्य रामेण तीर्थे दशाश्वमेधिके॥

तदनन्तर सीताकुण्डपर किये श्राद्धकी साङ्गतासिद्धिके लिये सव्य पूर्वाभिमुख होकर सौभाग्यपेटिकाका दान करना चाहिये और ब्राह्मणपूजा करनी चाहिये।

ग्यारहवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण दशमीको प्रातः फल्गुस्नानादि कृत्य सम्पन्नकर गयाशिरतीर्थमें जाकर तर्पणपूर्वक श्राद्ध करना चाहिये। उसके बाद गयाकूपमें जाकर श्राद्ध करना चाहिये और संकटादेवीका दर्शन तथा पूजन करना चाहिये।

बारहवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण एकादशीको मुण्डपृष्ठ, आदिगया और धौतपदपर पिण्डदानादि कृत्य होता है। प्रातः फल्गुस्नानादि कृत्य सम्पन्न करके मुण्डपृष्ठ जाकर संकल्पपूर्वक मुण्डपृष्ठपर श्राद्ध करना चाहिये। तदनन्तर मुण्डपृष्ठादेवीका दर्शन करे और निम्न मन्त्रसे उनकी प्रार्थना करे—

मुण्डपृष्ठे नमस्तुभ्यं पितॄणां तारणाय च। साक्षीभूते जगद्धात्रि आत्मनो मुक्तिहेतवे॥

तदनन्तर आदिगयातीर्थपर जाकर श्राद्ध करे और आदिगदाधरका पूजनकर प्रार्थना करे।

इसके पश्चात् धौतपदतीर्थमें जाकर खोये या तिलगुड़के पिण्डसे श्राद्ध करे और पुण्डरीकाक्षका दर्शनकर निम्न मन्त्रसे भगवान् पुण्डरीकाक्षकी प्रार्थना करे—

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष ऋणत्रयविमोचन। लक्ष्मीकान्त नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृमोक्षद॥

तेरहवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण द्वादशीको प्रातःकाल फल्गुतीर्थमें स्नान-तर्पण आदि कृत्य करके भीमगया पहुँचे और वहाँ संकल्पपूर्वक श्राद्ध

करे। श्राद्धके अनन्तर भीमजानुका दर्शन करे। तत्पश्चात् भस्मकूटतीर्थपर स्थित भगवान् जनार्दनका दर्शन करके षोडशोपचार अथवा पंचोपचारसे उनकी पूजा करे। नैवेद्यके रूपमें भगवान् जनार्दनको दध्योदन (दही-भात) समर्पित करके शेष दध्योदन (दही-भात)-से सव्य रहकर अपने तथा अन्य जीवित व्यक्तियोंके उद्देश्यसे भगवान् जनार्दनके हाथमें पिण्ड प्रदान करे।*

प्रतिज्ञा-संकल्प—हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्तिकामः जीवतः एव आत्मनः सम्बन्धीनाञ्च उद्देश्येन गयायां भस्मकूटतीर्थस्थिते जनार्दनहस्ते पिण्डदानं करिष्ये। हाथका संकल्पजल छोड़ दे।

तदनन्तर तिलरहित दही-भातका पिण्ड बनाकर निम्न मन्त्रद्वारा पिण्डदान करना चाहिये—

अपने उद्देश्यसे पिण्डदानका मन्त्र—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्रसे भगवान् जनार्दनके हाथमें पिण्ड समर्पित करे—

एष पिण्डो मया दत्तस्तव हस्ते जनार्दन। अन्तकाले गते मह्यं त्वया देयो गयाशिरे॥

(वायुपु० १०८।८७)

अन्य जीवित सम्बन्धियोंके लिये पिण्डदानका मन्त्र—हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्र पढ़कर भगवान् जनार्दनके हाथमें पिण्ड देना चाहिये—

यस्तु पिण्डो मया दत्तो यमुद्दिश्य जनार्दन। देहि देव गयाशीर्षे तस्मै तस्मै मृते तु तम्॥

---

* **जनार्दनो भस्मकूटे तस्य हस्ते तु पिण्डदः। आत्मनोऽप्यथवाऽन्येषां सव्येनापि तिलैर्विना॥** (वायुपु० १०८।८५)

पिण्डदान करनेके अनन्तर निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए भगवान् जनार्दनको प्रणाम करे—

जनार्दन नमस्तुभ्यं नमस्ते पितृमोक्षद। पितृपते नमस्तेऽस्तु नमस्ते पितृरूपिणे॥
गयायां पितृरूपेण स्वयमेव जनार्दनः। तं दृष्ट्वा पुण्डरीकाक्षं मुच्यते च ऋणत्रयात्॥

(वायुपु० १०८।८८-८९)

तदनन्तर मंगलागौरीको प्रणामकर उनका पूजन करे और फिर गोप्रचारतीर्थमें जाकर पिण्डदान करे। वहाँसे गदालोलतीर्थमें जाकर स्नान-तर्पण करके पितरोंका श्राद्ध करे।

चौदहवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण त्रयोदशीको प्रातःकाल फल्गुतीर्थमें स्नान करे और दूधसे पितृतर्पण करे। तदनन्तर श्रीगदाधरजीका दर्शन-पूजन एवं विष्णुपदका दर्शन तथा स्पर्श करे और फिर यथाविधि श्राद्ध करे।

पंद्रहवें दिनका कृत्य

पंद्रहवें दिन आश्विनकृष्ण चतुर्दशीको प्रातःकाल फल्गुतीर्थमें नित्यकी तरह स्नान-तर्पणादि क्रिया करे, फिर वैतरणीतीर्थमें जाकर संकल्पपूर्वक पितरोंके उद्धारकी कामनासे वैतरणीस्नान करे, फिर तर्पण तथा श्राद्ध करे। तदनन्तर निम्न मन्त्रसे वैतरणीकी प्रार्थना करे—

या सा वैतरणी नाम नदी त्रैलोक्यविश्रुता। सावतीर्णा महाभागा पितॄणां तारणाय च॥

तदनन्तर वैतरणीगोदान करे। '**ॐ गवे नमः**' से वैतरणी गौका पूजन करनेके अनन्तर ब्राह्मणका पूजन करे। तदनन्तर संकल्प

करके उस वैतरणी गौ अथवा गोनिष्क्रयद्रव्यका दान ब्राह्मणको कर दे। यहाँ तीर्थपुरोहितकी पूजा भी करनी चाहिये।

सोलहवें दिनका कृत्य

आश्विनकृष्ण अमावास्याको प्रातःकाल फल्गुतीर्थमें स्नानादि कृत्य सम्पन्न करके अक्षयवटके समीप जाकर उसके नीचे उत्तर दिशाकी ओर पितरोंका श्राद्ध करे। तदनन्तर शय्यादान करे—'**सोपस्करशय्यायै नमः**' कहकर शय्याका तथा भगवान् विष्णुका पूजन करे और '**इमां विष्णुदैवत्यां शय्यां तुभ्यमहं सम्प्रददे**' कहकर ब्राह्मणको शय्या प्रदान करे। निम्न मन्त्रसे शय्याकी प्रार्थना करे—

यथा न कृष्णशयनं शून्यं सागरजातया। शय्या ममाप्यशून्यास्तु तथा जन्मनि जन्मनि॥

ब्राह्मण शय्याकी पाटीका स्पर्शकर '**स्वस्ति**' बोले।

शय्यादानकी प्रतिष्ठासांगतासिद्धिके लिये सुवर्ण अथवा निष्क्रयद्रव्य भी प्रदान करे। यथाशक्ति वर्षाशन भी प्रदान करे। तदनन्तर ब्राह्मणभोजनका संकल्प करे और यथाशक्ति ब्राह्मणोंको वटवृक्षके नीचे भोजन कराये और उनका आशीर्वाद ग्रहण करे।

तत्पश्चात् अक्षयवटेश्वरका दर्शनकर निम्न मन्त्रसे प्रणाम करे—

एकार्णवे वटस्याग्रे यः शेते योगनिद्रया। बालरूपधरस्तस्मै नमस्ते योगशायिने॥

और फिर पितरोंकी अक्षयब्रह्मलोकप्राप्तिकी कामनासे निम्न मन्त्रसे अक्षयवटकी पूजा-प्रार्थना करे—

संसारवृक्षशस्त्रायाशेषपापक्षयाय च। अक्षय्यब्रह्मदात्रे च नमोऽक्षय्यवटाय च॥

पुनः अपनी शक्तिके अनुसार पितरोंके निमित्त सोलह या दशदान करे।

सत्रहवें दिनका कृत्य

आश्विनशुक्ल प्रतिपदाको गायत्रीतीर्थमें जाकर नित्यकी तरह प्रातः फल्गुतीर्थमें स्नानादि क्रिया सम्पन्नकर गायत्रीतीर्थमें श्राद्धका संकल्पकर दही-चावलके पिण्डसे यथाविधि मातामहादिका श्राद्ध करे।

साक्षीश्रवणकर्म—समस्त श्राद्धकर्म पूर्ण करनेके अनन्तर निम्न प्रार्थनाद्वारा साक्षीश्रवण करके गयायात्रा पूर्ण करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

ब्रह्मा, शिव आदि देवता मेरे कर्मके साक्षी हों। मैंने गयामें आकर अपने पितरोंके प्रति अपने कर्तव्यका निर्वाह किया। हे देव गदाधर! पितृकार्यके लिये मैं गयामें आया हूँ। हे भगवन्! आप ही इसमें साक्षी होवें, मैं ऋणत्रयसे मुक्त हो जाऊँ।

भगवत्-स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ गयाजीमें सत्रह दिनका कृत्य पूर्ण हुआ॥

[४] गयातीर्थमें सात दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य

जो श्रद्धालु गयाजीमें पितरोंकी सन्तृप्तिकी कामनासे सात दिन रहकर श्राद्धादि कृत्य करना चाहते हैं, उनके लिये प्रत्येक दिनके श्राद्धस्थल यहाँ दिये जा रहे हैं। प्रत्येक दिन सर्वप्रथम प्रातःकाल फल्गुमें स्नानादि कृत्य सम्पन्न करना चाहिये। पुनःपुनाका श्राद्ध इन सात दिनोंके अतिरिक्त है, वह गया पहुँचनेके पूर्व होता है या पहले दिन पुनःपुनाश्राद्धसे कृत्य आरम्भ होता है।

पहले दिन

पुनःपुनामें स्नानादि करके गया पहुँच जाय और तीर्थको प्रणामकर फल्गुके तटपर स्नान, तर्पण, श्राद्ध करे। इस दिन गायत्रीतीर्थमें प्रातःसन्ध्या, मध्याह्नमें सावित्रीकुण्डमें स्नान-सन्ध्या और सायंकाल सरस्वतीकुण्डमें स्नान करके सन्ध्या करनी चाहिये।

दूसरे दिन

प्रातः फल्गुस्नान, प्रेतपर्वतपर जाकर ब्रह्मकुण्डपर स्नान, तर्पण, श्राद्ध, प्रेतत्वके उद्धारकी कामनासे तिलमिश्रित सक्तुका प्रक्षेप तथा तिलमिश्रित जलांजलिदान, प्रेतशिलापर पितरोंका आवाहन, श्राद्ध तथा पिण्डदान। प्रेतशिलाके नीचे रामतीर्थ, प्रभासह्रदमें स्नान, रामशिलापर तर्पण, श्राद्ध, नगपर्वतपर यम, श्वान तथा काकबलि।

तीसरे दिन

प्रातः फल्गुस्नान करके पंचतीर्थी कृत्य होता है। उत्तरमानसमें स्नान, तर्पण, श्राद्ध, उत्तरार्कपूजन, सूर्यकुण्ड आकर उदीची,

कनखल तथा दक्षिणमानस तीर्थोंमें मार्जन-स्नान, पिण्डदान, दक्षिणार्कका दर्शन-पूजन करके फल्गुके किनारे मार्जन-स्नान, तर्पण, भगवान् गदाधरका दर्शन एवं पूजन।

चौथे दिन

प्रात: फल्गुमें स्नानादि नित्यकृत्य, धर्मारण्य जाकर मतंगवापीमें स्नान, तर्पण, श्राद्ध, मतंगेश्वरदर्शन, धर्मारण्यमें ब्रह्मतीर्थकूपमें श्राद्ध, धर्मेश्वरदर्शन, महाबोधिवृक्षके नीचे श्राद्ध, वटेश्वर-प्रार्थना।

पाँचवें दिन

फल्गुमें स्नान, ब्रह्मसरोवरमें स्नान-तर्पण, गोप्रचारके समीप आम्रवृक्षसेचन, ब्रह्मयूपप्रदक्षिणा, यम, श्वान तथा काकबलि। बलिदानके अनन्तर मार्जन-स्नान।

छठे दिन

प्रात: फल्गुमें स्नान, तर्पण करके विभिन्न पदोंपर श्राद्ध होता है। सर्वप्रथम विष्णुपद जाकर विष्णुपद-दर्शन करके भगवान् विष्णुका पूजनकर वहाँपर श्राद्ध करे। तदनन्तर रुद्रपद, ब्रह्मपद, दक्षिणाग्निपद, गार्हपत्यपद, आहवनीयपद, सभ्याग्निपद, आवसथ्याग्निपद, सूर्यपद, कार्तिकेयपद, इन्द्रपद, अगस्त्यपद, चन्द्रपद, गणेशपद, क्रौंचपद, मतंगपद तथा कश्यप—इन पदोंपर श्राद्ध तथा उन-उन देवताका पूजन करे। तत्पश्चात् पदशिलाके उत्तरमें गजकर्णिकामें तर्पण और फिर कनकेश्वर, केदारेश्वर, नारसिंह तथा वामनका दर्शन-पूजन।

सातवें दिन

प्रातः फल्गुमें स्नान, गदालोलतीर्थमें स्नान, तर्पण, श्राद्ध, अक्षयवटके नीचे श्राद्ध तथा शय्यादान, ब्राह्मणभोजन, वटेश्वरदर्शन, प्रपितामहेश्वरदर्शन, साक्षीश्रवणकर्म।

साक्षीश्रवणकर्म—समस्त श्राद्धकर्म पूर्ण करनेके अनन्तर निम्न प्रार्थनाद्वारा साक्षीश्रवण करके गयायात्रा पूर्ण करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

ब्रह्मा, शिव आदि देवता मेरे कर्मके साक्षी हों। मैंने गयामें आकर अपने पितरोंके प्रति अपने कर्तव्यका निर्वाह किया। हे देव गदाधर! पितृकार्यके लिये मैं गयामें आया हूँ। हे भगवन्! आप ही इसमें साक्षी होवें, मैं ऋणत्रयसे मुक्त हो जाऊँ।

भगवत्-स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ गयाजीमें सात दिनका कृत्य पूर्ण हुआ॥

[५] गयातीर्थमें पाँच दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य

पहले दिन

प्रेतशिला, रामतीर्थमें स्नान, पिण्डदानादि, प्रभासेश्वरदर्शन, नगपर्वतपर बलि।

दूसरे दिन

प्रेतपर्वत, ब्रह्मकुण्डमें स्नान, पिण्डदान, प्रेतोंके निमित्त तिलमिश्रित सत्तू तथा तिलतोयांजलिका दान।

पंचतीर्थीकृत्य—उत्तरमानस, सूर्यार्क, उदीची, कनखल, दक्षिणमानस, दक्षिणाग्निको प्रणाम, फल्गुतीर्थ जाना, ब्रह्माजीको नमस्कार, गदाधर-दर्शन, स्नान।

धर्मारण्य, मतंगवापी, ब्रह्मतीर्थ, ब्रह्मकूप, धर्मेश्वर एवं महाबोधिका दर्शन।

तीसरे दिन

ब्रह्मसरोवर, गोप्रचार, आम्रसेचन, ब्रह्माजीको नमस्कार, यम, श्वान, काकबलि, ब्रह्मतीर्थमें स्नान, गदाधरदर्शन।

चौथे दिन

फल्गुस्नान, गयाशिरमें श्राद्ध तथा विष्णु आदि विभिन्न पदोंपर श्राद्धादि, कनकेश, केदार, नारसिंह, वामनदर्शन।

पाँचवें दिन

गदालोल, अक्षयवट, वटेश्वरदर्शन, लिंगरूप प्रपितामहको नमस्कार, साक्षीश्रवणकर्म।

॥ गयाजीमें पाँच दिनका कृत्य पूर्ण हुआ ॥

[६] गयातीर्थमें तीन दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य

पहले दिन

फल्गुतीर्थमें स्नान-तर्पण करनेके अनन्तर पार्वणविधिसे श्राद्ध करके भगवान् गदाधरका पूजनपूर्वक पंचगव्याभिषेक करनेके अनन्तर श्राद्ध करना चाहिये।

दूसरे दिन

ब्रह्मकुण्ड एवं प्रेतशिलामें तर्पण एवं श्राद्ध करके रामतीर्थपर श्राद्ध करे और काकबलि तथा श्वानबलि प्रदान करे। साथ ही पंचतीर्थीस्नान तथा श्राद्ध करे।

तीसरे दिन

विष्णुपदकी सभी वेदियोंपर श्राद्ध करनेके अनन्तर अक्षयवटपर श्राद्ध एवं शय्यादान करे। ब्राह्मणभोजन कराकर श्राद्ध सम्पन्न करे। अन्तमें साक्षीश्रवणरूप प्रार्थनाकर समस्त कर्म भगवान्‌को निवेदित कर दे।

॥ गयाजीमें तीन दिनका कृत्य पूर्ण हुआ ॥

[७] गयातीर्थमें एक दिनके श्राद्धस्थलोंके कृत्य

समयके अत्यन्ताभावके कारण अथवा पिण्डदानकर्ताकी शारीरिक असमर्थता आदि कारणोंसे जो व्यक्ति तीन दिन भी गयाजीमें रहकर श्राद्ध करनेमें असमर्थ हो, वह एक ही दिनमें गयाश्राद्धकर अपने पितरोंके ऋणसे मुक्त होनेकी अभिलाषा करे। यह प्रक्रिया गयाश्राद्धकी अवश्यकर्तव्यताकी दृष्टिसे लिखी जा रही है।

श्राद्धकर्ता गयातीर्थमें जाकर फल्गुतीर्थमें स्नान-तर्पण करनेके पश्चात् पार्वणविधिसे श्राद्ध कर ले। तदनन्तर विष्णुपदकी सभी वेदियोंपर तीर्थप्राप्तिनिमित्तक एकपिण्डदानात्मकश्राद्ध करके अक्षयवटतीर्थपर जाय और वहाँ यथासम्भव तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्ध अथवा केवल तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पिण्डदानात्मकश्राद्ध करके शय्यादान और ब्राह्मणभोजन कराकर साक्षीश्रवणकर्म करे और तीर्थपुरोहितसे तीर्थयात्राकी सम्पन्नताका आशीर्वाद ग्रहण करे।

॥ गयाजीमें एक दिनका कृत्य पूर्ण हुआ ॥

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तर्पण-प्रयोग

तीर्थमें पहुँचकर हाथ-पैर धोकर आचमनकर तीर्थको साष्टांग प्रणाम करना चाहिये। तदनन्तर गन्ध-पुष्पादिसे तीर्थकी पूजाकर स्नानका संकल्प करना चाहिये।

यदि स्नान करके आये हों और पूर्ण स्नान न करना चाहें तो तीर्थजलसे मार्जन-स्नान* कर लेना चाहिये। तीर्थमें श्राद्ध करनेके पूर्व तर्पण करनेकी विधि है। गयामें एक दिनमें कई वेदियोंपर श्राद्ध करना पड़ता है, सबमें तर्पण करना सम्भव न होनेके कारण प्रतिदिन प्रथम वेदीपर श्राद्धके पूर्व तर्पण कर लेना चाहिये।

स्नानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जल, अक्षत लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषपरिहारार्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं च गयायां ....तीर्थे स्नानं करिष्ये। कहकर हाथका जलादि छोड़ दे।

ऐसा संकल्पकर सूर्याभिमुख होकर स्नान करना चाहिये। तदनन्तर धुले हुए वस्त्रोपवस्त्र धारणकर चन्दन-भस्म आदिसे

---

* मार्जन-स्नानके मन्त्र निम्न हैं—

(क) **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥**

(ख) **ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवः। ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। यो वः शिवतमो रसः। तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः। तस्मा अरं गमाम वः। यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥**

इन मन्त्रोंद्वारा त्रिकुश अथवा हाथसे अपने ऊपर जल छिड़के।

तिलक करके सन्ध्यादि नित्यकर्म सम्पादित करना चाहिये।

इसके पश्चात् हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर तर्पणका संकल्प करना चाहिये—

तर्पणका संकल्प

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं समस्तपितृणां विष्णुलोकादिप्राप्तये गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं नित्यञ्च देवर्षिदिव्यपितृस्वपितृतर्पणं तन्त्रेण करिष्ये। कहकर हाथका जलादि छोड़ दे।

देवतर्पण
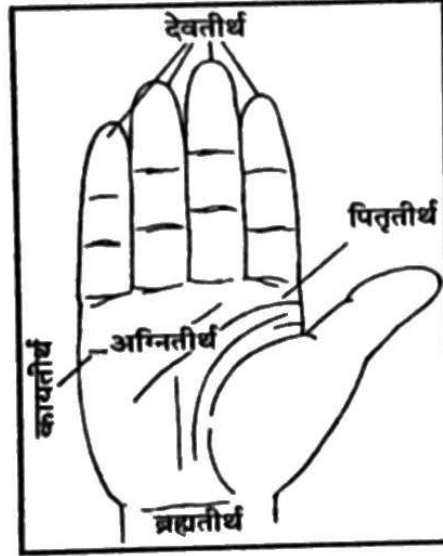
पूर्वदिशामें मुख करके सव्यावस्थामें निम्नलिखित प्रत्येक नाममन्त्रसे एक-एक अंजलि जल देवतीर्थसे देता जाय। दाहिना घुटना जमीनपर लगा ले।[1] चावल ले ले, कुशोंको पूर्वाग्र[2] रख ले—

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्यताम्। ॐ रुद्रस्तृप्यताम्। ॐ प्रजापतिस्तृप्यताम्। ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। ॐ छन्दांसि तृप्यन्ताम्। ॐ वेदास्तृप्यन्ताम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। ॐ पुराणाचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ गन्धर्वास्तृप्यन्ताम्। ॐ इतराचार्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ संवत्सरः सावयवस्तृप्यताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्। ॐ अप्सरसस्तृप्यन्ताम्। ॐ देवानुगास्तृप्यन्ताम्। ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम्। ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम्। ॐ सरितस्तृप्यन्ताम्।

---

१. **दक्षिणजानुभूलग्ने देवेभ्यः सेचयेज्जलम्।** (वृद्धपराशर)

२. **अग्रैस्तु तर्पयेद्देवान् मनुष्यान् कुशमध्यतः। पितॄँस्तु कुशमूलाग्रैर्विधिः कौशो यथाक्रमम्॥**

कुशाके अग्रभागसे देवताओंका, मध्यभागसे ऋषियोंका और मूल तथा अग्रभागसे पितरोंका तर्पण करना चाहिये।

ॐ मनुष्यास्तृप्यन्ताम्। ॐ यक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षांसि तृप्यन्ताम्। ॐ पिशाचास्तृप्यन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम्। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्। ॐ वनस्पतयस्तृप्यन्ताम्। ॐ ओषधयस्तृप्यन्ताम्। ॐ भूतग्रामश्चतुर्विधस्तृप्यताम्।

ऋषितर्पण

देवतर्पणके अनन्तर वैसे ही देवतीर्थसे निम्नलिखित मन्त्रोंसे मरीचि आदि ऋषियोंको भी एक-एक अंजलि जल दे—

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्। ॐ अङ्गिरास्तृप्यताम्। ॐ पुलस्त्यस्तृप्यताम्। ॐ पुलहस्तृप्यताम्। ॐ क्रतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्। ॐ प्रचेतास्तृप्यताम्। ॐ भृगुस्तृप्यताम्। ॐ नारदस्तृप्यताम्।

सनकादि तर्पण

१. उत्तर दिशाकी ओर मुँह करे।[१] २. जनेऊको कण्ठीकी तरह कर ले। ३. गमछेको भी कण्ठीकी तरह कर ले। ४. सीधा बैठे। कोई घुटना जमीनपर न लगाये।[२] ५. अर्घपात्रमें जौ छोड़े। ६. तीनों कुशोंके मध्यभागको उत्तराग्र रखे। ७. प्राजापत्य (काय)-तीर्थसे अर्थात् कुशोंको दाहिने हाथकी कनिष्ठिकाके मूलभागमें रखकर यहींसे जल दे। ८. दो-दो अंजलियाँ जल दे।[३]

प्राजापत्यतीर्थ

ॐ सनकस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम् (२)। ॐ सनातनस्तृप्यताम् (२)। ॐ कपिलस्तृप्यताम् (२)। ॐ आसुरिस्तृप्यताम् (२)। ॐ वोढुस्तृप्यताम् (२)। ॐ पञ्चशिखस्तृप्यताम् (२)।

---

१. **ततः कृत्वा निवीतं तु यज्ञसूत्रमुदङ्मुखः। प्राजापत्येन तीर्थेन मनुष्यांस्तर्पयेत् पृथक्॥** (विष्णु)

२. **मनुष्यतर्पणं कुर्वन्न किञ्चिज्जानु पातयेत्।** (पुलस्त्य) ३. **द्वौ द्वौ तु सनकादयः अर्हन्ति।** (व्यास)

दिव्य पितृतर्पण

१. दक्षिण दिशाकी ओर मुँह करे। २. अपसव्य हो जाय अर्थात् जनेऊको दाहिने कन्धेपर रखकर बायें हाथके नीचे ले जाय।[१] ३. गमछेको भी दाहिने कन्धेपर रखे। ४. बायाँ घुटना जमीनपर लगाकर बैठे।[२] ५. अर्घपात्रमें काले तिल छोड़े।[३] ६. कुशके बने मोटकके जड़ एवं अग्रभागको दाहिने हाथमें तर्जनी और अँगूठेके बीचमें रखे। ७. पितृतीर्थसे अर्थात् अँगूठे और तर्जनीके मध्यभागसे अंजलि दे। ८. तीन-तीन अंजलियाँ दे।[४]

उपर्युक्त नियमसे निम्नलिखित तीन-तीन अंजलियाँ एक-एक मन्त्र पढ़कर दे—

ॐ कव्यवाडनलस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।[५]

ॐ सोमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

ॐ यमस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

ॐ अर्यमा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।

ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः।

---

१. जिनके पास यज्ञोपवीत नहीं है, उन्हें उत्तरीय (गमछे)-के द्वारा तर्पणकार्य करना चाहिये।

२. **भूलग्नसव्यजानुश्च दक्षिणाग्रकुशेन च। पितॄन् संतर्पयेत्**.....। (वृद्धपराशर)

३. **पितॄन् भक्त्या तिलैः कृष्णैः**.....। (माधव) ४. **अर्हन्ति पितरस्त्रींस्त्रीन्**। (व्यास)

५. कुछ पद्धतियोंके अनुसार तर्पणमें केवल '**स्वधा**' का प्रयोग चलता है। परंतु पारस्करगृह्यसूत्रके हरिहरभाष्यमें तर्पण-प्रयोगनिरूपणके अन्तर्गत '**स्वधा नमः**' प्रयोग दिया गया है, जिसके अनुसार यहाँ तर्पणमें '**स्वधा नमः**' का प्रयोग ही उचित है।

ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः।

ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्तामिदं तिलोदकं तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः, तेभ्यः स्वधा नमः।

चतुर्दश यमतर्पण

पूर्ववत् इसी प्रकार निम्नलिखित प्रत्येक नामसे यमराजको पितृतीर्थसे ही दक्षिणाभिमुख तीन-तीन अंजलियाँ दे—

ॐ यमाय नमः (३)। ॐ धर्मराजाय नमः (३)। ॐ मृत्यवे नमः (३)। ॐ अन्तकाय नमः (३)। ॐ वैवस्वताय नमः (३)। ॐ कालाय नमः (३)। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः (३)। ॐ औदुम्बराय नमः (३)। ॐ दध्नाय नमः (३)। ॐ नीलाय नमः (३)। ॐ परमेष्ठिने नमः (३)। ॐ वृकोदराय नमः (३)। ॐ चित्राय नमः (३)। ॐ चित्रगुप्ताय नमः (३)।[१]

पित्र्यादितर्पण[२]

दायें हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो बायाँ घुटना जमीनपर गिराकर पित्र्यादितर्पण करे। पितरोंका तर्पण करनेके पूर्व निम्नांकित मन्त्रोंसे हाथ जोड़कर उनका आवाहन करे—

---

१. **यमाय धर्मराजाय मृत्यवे चान्तकाय च। वैवस्वताय कालाय सर्वभूतक्षयाय च॥**
औदुम्बराय दध्नाय नीलाय परमेष्ठिने। वृकोदराय चित्राय चित्रगुप्ताय वै नमः॥ (मत्स्यपु० १०२। २३-२४, कात्यायनपरिशिष्ट)

२. धर्मशास्त्रोंमें श्राद्ध तथा तर्पणके लिये विविध गोत्रवाले पितरों (ताताम्बादि बान्धवों)-की गणना इस प्रकार की गयी है। जिनका देहावसान हो चुका है, उन्हींका तर्पण करना चाहिये—

ताताम्बात्रितयं सपत्नजननी मातामहादित्रयं सस्त्रि स्त्रीतनयादि तातजननीस्वभ्रातरः तत्स्त्रियः।
ताताम्बाऽऽत्मभगिन्यपत्यधवयुग् जायापिता सद्गुरुः शिष्याप्ताः पितरो महालयविधौ तीर्थे तथा तर्पणे॥

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितॄन् हविषे अत्तवे॥

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥

यदि ऊपर लिखे वेदमन्त्रोंका शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो निम्नलिखित वाक्यका उच्चारणकर पितरोंका आवाहन करे—

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु जलाञ्जलिम्।

इसी तरह आगे लिखे मन्त्रोंका भी शुद्ध उच्चारण सम्भव न हो तो मन्त्रोंको छोड़कर केवल '**....गोत्रः ....अस्मत्पिता ....स्वरूपः**' आदि संस्कृत वाक्य बोलकर तिलके साथ तीन-तीन अंजलियाँ दे। यथा—

१. *पिता*— **ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्पिता ....शर्मा/वर्मा/गुप्तः वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

२. *पितामह*— **ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्पितामहः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तः रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

---

(१) पिता, (२) पितामह (दादा), (३) प्रपितामह (परदादा), (४) माता, (५) पितामही (दादी), (६) प्रपितामही (परदादी), (७) विमाता (सौतेली माँ), (८) मातामह (नाना), (९) प्रमातामह (परनाना), (१०) वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना), (११) मातामही (नानी), (१२) प्रमातामही (परनानी), (१३) वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी), (१४) स्त्री (पत्नी), (१५) पुत्र (पुत्री), (१६) चाचा, (१७) चाची, (१८) चाचाका पुत्र (चचेरा भाई), (१९) मामा, (२०) मामी, (२१) मामाका पुत्र (ममेरा भाई), (२२) अपना भाई, (२३) भाभी, (२४) भाईका पुत्र (भतीजा), (२५) फूफा, (२६) फूआ, (२७) फूआका पुत्र, (२८) मौसा, (२९) मौसी, (३०) मौसाका पुत्र, (३१) अपनी बहन, (३२) बहनोई, (३३) बहनका पुत्र—भानजा, (३४) श्वशुर, (३५) सासु, (३६) सद्गुरु, (३७) गुरुपत्नी, (३८) शिष्य, (३९) संरक्षक, (४०) मित्र तथा (४१) भृत्य (सेवक)।

३. *प्रपितामह*— **ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मत्प्रपितामहः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

४. *माता*—**ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मन्माता ""देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

५. *पितामही*— **ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्पितामही ""देवी सावित्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

६. *प्रपितामही*— **ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्प्रपितामही ""देवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

७. *सौतेली माँ*— **ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्सापत्नमाता ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

इसके बाद निम्नांकित नौ मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे जल गिराता रहे।* (जिन्हें वेदमन्त्र न आता हो, वे इसे ब्राह्मणद्वारा पढ़वावें या छोड़ भी सकते हैं)—

ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु॥

* पारस्करगृह्यसूत्रके हरिहरभाष्यमें तर्पणप्रकरणके अनुसार इन नौ मन्त्रोंको पढ़ते हुए जलधारा छोड़नेका विधान है।

ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयꣳ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥
ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्॥
ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥ ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।
ॐ ये चेह पितरो ये च नेह याँश्च विद्म याँ उ च न प्रविद्म।
त्वं वेत्थ यति ते जातवेदः स्वधाभिर्यज्ञꣳ सुकृतं जुषस्व॥
ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः।
ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥
ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ मधु। मधु। मधु। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्। तृप्यध्वम्।

फिर नीचे लिखे मन्त्रका पाठमात्र करे—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मैतद्वः पितरो वासः।

द्वितीय गोत्रतर्पण

इसके बाद द्वितीय गोत्रवाले (ननिहालके) मातामह (नाना) आदिका तर्पण करे। पहलेकी भाँति निम्नलिखित वाक्य पढ़कर तिलसहित जलकी तीन-तीन अंजलियाँ पितृतीर्थसे दे—

१. *मातामह (नाना)*— **ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मन्मातामहः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तः वसुस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

२. *प्रमातामह (परनाना)*— **ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मत्प्रमातामहः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तः रुद्रस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

३. *वृद्धप्रमातामह (वृद्धपरनाना)*— **ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मद् वृद्धप्रमातामहः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तः आदित्यस्वरूपस्तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः, तस्मै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

४. *मातामही (नानी)*— **ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मन्मातामही ""देवी गायत्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

५. *प्रमातामही (परनानी)*— **ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्प्रमातामही ""देवी सावित्रीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः।** बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

६. *वृद्धप्रमातामही (वृद्धपरनानी)*— ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मद्वृद्धप्रमातामही ....देवी सरस्वतीस्वरूपा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः, तस्यै स्वधा नमः। बोलकर पितृतीर्थसे तीन अंजलि जल दे।

पत्न्यादि तर्पण

पत्नी आदि अन्य सम्बन्धियोंका तर्पण नीचे दिया जा रहा है। इन सबको एक-एक अंजलि जल देनेकी विधि है। गयामें यथासम्भव सबका तर्पण करना चाहिये।

१. *पत्नी*— ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मत्पत्नी ....देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

२. *पुत्र*— ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्पुत्रः ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

३. *पुत्री*— ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मत्पुत्री ....देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

४. *अपना भाई*— ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मद् भ्राता ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

५. *भौजाई*— ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मद् भ्रातृपत्नी ....देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

६. *भतीजा*— ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मद् भ्रातृपुत्रः ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

७. *चाचा*— ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्पितृभ्राता ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

८. *चाची*— ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मत्पितृव्यपत्नी ....देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

९. *चाचाका लड़का*— ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्पितृव्यपुत्रः ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१०. *मामा*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मन्मातुलः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

११. *मामी*— ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मन्मातुलानी ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

१२. *मामाका लड़का*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मन्मातुलपुत्रः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१३. *फूफा*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मत्पितृभगिनीपतिः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१४. *फूआ*— ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्पितृभगिनी ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

१५. *फूआका पुत्र*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मत्पैतृष्वस्रेयः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१६. *मौसा*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मन्मातृष्वसृपतिः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१७. *मौसी*— ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत्मातृभगिनी ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

१८. *मौसीका लड़का*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मन्मातृष्वस्रेयः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

१९. *बहनोई*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मद्भगिनीपतिः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

२०. *बहिन*— ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मद्भगिनी ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

२१. *भानजा*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मद्भागिनेयः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

२२. *श्वशुर*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मच्छ्वशुरः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

२३. *सासु*— ॐ अद्य ""गोत्रा अस्मत् श्वश्रू ""देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।

२४. *गुरु*— ॐ अद्य ""गोत्रः अस्मद् गुरुः ""शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।

२५. *गुरुपत्नी*— **ॐ अद्य ....गोत्रा अस्मद् गुरुपत्नी ....देवी तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्यै स्वधा नमः १।**

२६. *आप्त-संरक्षक*— **ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्संरक्षकः ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।**

२७. *मित्र*— **ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मन्मित्रं ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।**

२८. *सेवक*— **ॐ अद्य ....गोत्रः अस्मत्सेवकः ....शर्मा तृप्यतामिदं तिलोदकं तस्मै स्वधा नमः १।**

इसके बाद सव्य होकर पूर्वाभिमुख हो जाय। हाथमें त्रिकुश और चावल ले ले, फिर नीचे लिखे श्लोकोंको पढ़ते हुए देवतीर्थसे जल गिराये—

देवासुरास्तथा यक्षा नागा गन्धर्वराक्षसाः। पिशाचा गुह्यकाः सिद्धाः कूष्माण्डास्तरवः खगाः॥
जलेचरा भूनिलया वाय्वाधाराश्च जन्तवः। तृप्तिमेते प्रयान्त्वाशु मद्दत्तेनाम्बुनाखिलाः॥

अपसव्य होकर जनेऊ और अँगोछेको भी दाहिने कंधेपर रखकर दक्षिणाभिमुख हो जाय। मोटक, तिल ले ले। फिर नीचे लिखे हुए श्लोकोंको पढ़कर पितृतीर्थसे जल गिराये—

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामाप्यायनायैतद्दीयते सलिलं मया॥
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोदकम्॥
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः॥
अतीतकुलकोटीनां सप्तद्वीपनिवासिनाम्। आब्रह्मभुवनाल्लोकादिदमस्तु तिलोदकम्॥

वस्त्रनिष्पीडन

इस प्रकार सब पितरोंका तर्पण हो जानेके बाद अँगोछेकी चार तह करके उसमें तिल तथा जल छोड़कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़कर जलके बाहर बायीं ओर पृथ्वीपर निचोड़े—

ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः। ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

भीष्मतर्पण

इसके बाद भीष्मपितामहको पितृतीर्थसे निम्न मन्त्रसे जल दे—

वैयाघ्रपदगोत्राय सांकृत्यप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतज्जलं भीष्माय वर्मणे॥

सूर्यार्घदान

सव्य हो आचमनकर पूर्वाभिमुख हो जाय और निम्न मन्त्रसे सूर्यको अर्घ्य प्रदान करे—

नमो विवस्वते ब्रह्मन् भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये नमस्ते कर्मदायिने॥

तदनन्तर निम्न नाम-मन्त्रोंसे ब्रह्मादि देवोंको नमस्कार करे—

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ रुद्राय नमः। ॐ सूर्याय नमः। ॐ मित्राय नमः। ॐ वरुणाय नमः।

समर्पण

यथाशक्ति कृतानेन तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतर्पणाख्येन कर्मणा पितृस्वरूपीजनार्दनगदाधरः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्

ब्रह्मार्पणमस्तु। कहकर जल छोड़ दे।

प्रार्थना

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत् पादपद्मस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तर्पण-प्रयोग पूर्ण हुआ॥

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्ध

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्ध सामान्य पार्वणश्राद्धसे भिन्न है। इसमें अर्घ, आवाहन, अंगुष्ठनिवेशन, तृप्तिप्रश्न तथा विकिरदान—इन पाँच विधियोंका निषेध है।[१] स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र[२] (धोती तथा उत्तरीय—चादर आदि) धारण कर ले। श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। तीर्थमें श्राद्ध करनेके पूर्व तर्पण करनेकी विधि है। तर्पण करके श्राद्ध प्रारम्भ करना चाहिये। तीर्थमें समयपर अथवा असमय—किसी भी समय पितृतर्पणपूर्वक श्राद्ध किया जा सकता है। इसलिये तीर्थमें पहुँचकर स्नान, तर्पण, पिण्डदान करनेमें विलम्ब नहीं करना चाहिये।[३] गयातीर्थमें एक दिनमें कई तीर्थोंमें श्राद्ध करना पड़ता है। सब तीर्थोंपर तर्पण करना सम्भव न होनेके कारण प्रतिदिन प्रथम वेदीपर श्राद्ध प्रारम्भ करनेके पूर्व तर्पण कर लेना चाहिये। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे।

पाकनिर्माण—यदि खीरसे पिण्डदान करना हो तो श्राद्धदेशके ईशानकोणमें पिण्डदानके लिये पाक तैयार कर ले।

---

१. **अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें पद्मपुराणका वचन)

२. **स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसत्क्रियाः॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें योगियाज्ञवल्क्यका वचन)

स्नान, दान, जप, होम, स्वाध्याय, पितृतर्पण, श्राद्ध, भोजन आदि सत्कर्म एक वस्त्र धारणकर नहीं करने चाहिये।

३. **काले वाप्यथवाऽकाले तीर्थश्राद्धं सदा नरैः। प्राप्तैरेव सदा कार्यं पितृतर्पणपूर्वकम्॥**
तीर्थमेव समासाद्य सद्यो रात्रावपि क्षणम्। स्नानञ्च तर्पणं श्राद्धं कुर्याच्चैव विधानतः॥
पिण्डदानं ततः शस्तं पितृणाञ्चैव दुर्लभम्। विलम्बं नैव कुर्वीत न च विघ्नं समाचरेत्॥

(श्राद्धकल्पलता; सदाचाररत्नाकरमें हारीतका वचन तथा देवीपुराणका वचन)

पिण्डके लिये गाढ़ी खीर बनानी चाहिये।

श्राद्धकार्यमें लोहेके पात्रका निषेध है।[1] श्राद्धस्थलपर पाकनिर्माणमें असुविधा हो सकती है, अत: अपने निवासस्थानमें पाक बनाकर साथ ले जा सकते हैं। खीरके अभाव (विकल्प)-में जौके आटे, जौके सत्तू, खोए अथवा पिष्टक (तिलकुट), तण्डुल (चावल), फल, मूल (आलू, शकरकन्द), तिलकल्क (तिलका लड्डू), घृतमिश्रित गुड़खण्ड, दही, ऊर्ज (द्रव्यविशेष), मधु, घृतमिश्रित पिण्याक (तिलकी खली)-से पिण्डदान किया जा सकता है, इनका पिण्डके रूपमें श्राद्धमें प्रयोग करनेसे पितरोंको अक्षय तृप्ति होती है।[2] (इनमेंसे जो सामग्री उपलब्ध हो, उससे पिण्डदान किया जा सकता है।)

पाक-निर्माणके अनन्तर पाकमें तुलसीदल छोड़कर भगवान्‌का भोग लगा दे। तदनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

---

१. **न कदाचित् पचेदन्नमय:स्थालीषु पैतृकम्। अयसो दर्शनादेव पितरो विद्रवन्ति हि॥**
कालायसं विशेषेण निन्दन्ति पितृकर्मणि। फलानां चैव शाकानां छेदनार्थानि यानि तु॥
महानसेऽपि शस्तानि तेषामेव हि संनिधि:। (चमत्कारखण्ड, श्राद्धकल्पलता)

२. **पायसेनापि चरुणा सक्तुना पिष्टकेन वा। तण्डुलै: फलमूलाद्यैर्गयायां पिण्डपातनम्॥**
तिलकल्केन खण्डेन गुडेन सघृतेन वा। केवलेनैव दध्ना वा ऊर्जेन मधुनाथवा॥
पिण्याकं सघृतं खण्डं पितृभ्योऽक्षयमित्युत। (वायुपु० १०५।३३—३५)

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक नवदैवत्य पार्वणश्राद्धका स्वरूप

दक्षिण

भूस्वामी
रक्षादीप (दक्षिणाभिमुख)

बान्धवादि	वृद्धप्र०	प्रमातामह	मातामह	प्रपितामही	पितामही	माता	प्रपितामह	पितामह	पिता
उत्तराभि-मुख	सपत्नीक उत्तराभि०	सपत्नीक उत्तराभि०	सपत्नीक उत्तराभि०	उत्तरा-भिमुख	उत्तरा-भिमुख	उत्तरा-भिमुख	उत्तरा-भिमुख	उत्तरा-भिमुख	उत्तरा-भिमुख
आसन	आसन	आसन	आसन	आसन	आसन	आसन	आसन	आसन	आसन
भोजनपात्र, जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र	जल-पात्र
घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र	घृतपात्र

पूर्व

मातृषोडशीका स्थान — कुशासन

सामान्य पिण्डदानका स्थान — कुशासन

अवनेजन -पात्र

पिण्डदानवेदी

अवनेजनपात्र — पिण्ड-दान वेदी

अवनेजनपात्र — पिण्ड-दान वेदी

अवनेजनपात्र — पिण्ड-दान वेदी

अग्नौकरणपात्र

श्राद्धसामग्री

यजमान-आसन (दक्षिणाभिमुख)

कर्मपात्र

उत्तराभिमुख

यजमान-आसन

कर्मपात्र

श्राद्धसामग्री

सपत्नीक पिता आदिके विश्वेदेव

पुरूरवार्द्रव विश्वेदेव

घृतपात्र भोजन-पात्र आसन

जलपात्र

रक्षादीप (पूर्वाभिमुख)

सपत्नीक मातामह आदिके विश्वेदेव

पुरूरवार्द्रव विश्वेदेव

घृतपात्र भोजन-पात्र आसन

जलपात्र

पश्चिम

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन*—**ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः**—इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। **'ॐ हृषीकेशाय नमः'** कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम करे।

विश्वेदेवोंके लिये पात्रासादन—तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्धमें विश्वेदेवोंके दो आसन होते हैं—१-पिता, पितामह तथा प्रपितामह एवं माता, पितामही और प्रपितामहीके विश्वेदेवोंके लिये तथा २-सपत्नीक मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहके विश्वेदेवोंके लिये। अतः श्राद्धभूमिके पश्चिमकी ओर दक्षिणोत्तरक्रमसे पलाशके दो पत्ते बिछाकर उन दोनोंपर आसनके लिये एक-एक त्रिकुश पूर्वाग्र स्थापित कर दे। उन दोनोंपर त्रिकुशके दो कुशवटु (कुश-ब्राह्मण) बनाकर पूर्वाग्र स्थापित कर दे।

उन दोनों आसनोंके सामने भोजनपात्रके रूपमें पलाश आदिका एक-एक पत्ता रख दे। भोजनपात्रोंके उत्तरदिशामें एक-एक जलपात्र (दोनिया) तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया) भी रख दे।

---

* **सपवित्रेण हस्तेन कुर्यादाचमनक्रियाम्। नोच्छिष्टं तत्पवित्रं तु भुक्तोच्छिष्टं तु वर्जयेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणि में मार्कण्डेयका वचन)

पितरोंके लिये पात्रासादन—तीर्थप्राप्तिनिमित्तक नवदैवत्य पार्वणश्राद्धमें पिता, पितामह तथा प्रपितामह, माता, पितामही एवं प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त ९ पृथक्-पृथक् आसन आदि होते हैं।[1]

विश्वेदेवोंके आसनोंसे कुछ दूर दक्षिण-पूर्वदिशामें पश्चिमसे पूर्वकी ओर पृथक्-पृथक् ९ पत्तोंपर दक्षिणाग्र ९ मोटकरूप आसन रखे। उन नवों आसनोंपर त्रिकुशमें ग्रन्थि लगाकर ९ कुशवटु बनाकर एक-एक कुशवटु पृथक्-पृथक् उत्तराग्र रखे। सभी आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र तथा भोजनपात्रके पश्चिमदिशामें एक-एक जलपात्र तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया) भी रख दे। अन्य बन्धु-बान्धवोंके लिये एक आसन, एक भोजनपात्र, एक जलपात्र तथा एक पिण्डवेदी अतिरिक्त बना ले। यह आसन वृद्धप्रमातामहके पूर्वभागमें लगाना चाहिये।

रक्षादीप-प्रज्वालन—इस श्राद्धमें दो रक्षादीप होंगे। एक विश्वेदेवोंके निमित्त तथा दूसरा पितरोंके निमित्त। विश्वेदेवके आसनोंके पश्चिम अक्षत अथवा जौपर रखकर पूर्वाभिमुख तिलके तेल अथवा घृतका एक दीपक जला दे। इसी प्रकार पितरोंके आसनके दक्षिणमें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका दूसरा दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे।[2] तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

---

१. (क) **महालये गयाश्राद्धे वृद्धावन्वष्टकासु च। नवदैवत्यमत्र स्यात् शेषं षाट्पौरुषं विदुः॥** (विष्णुधर्मोत्तरपुराण)

महालय, गयाश्राद्ध, वृद्धिश्राद्ध तथा अन्वष्टकाश्राद्धमें नवदैवत्य तथा शेष सर्वत्र षड्दैवत्यश्राद्ध करना चाहिये।

(ख) **अष्टकासु च वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि। मातुः श्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह॥** (वायुपु० ११०।१७)

२. **प्राङ्मुखोदङ्मुखं दीपं देवागारे द्विजालये। कुर्याद् याम्यमुखं पैत्र्ये अद्भिः संकल्प्य सुस्थिरम्॥** *(निर्णयसिन्धु)*

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दोनों दीपकोंका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, भगवान् गदाधर तथा पितरोंका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः—कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्‌का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार-पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्‌का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

'**ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः**'—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर

जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

प्रोक्षण—कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले—**'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।'**

दिग्-रक्षण—बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले—

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः॥

तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े—

पूर्वमें—**प्राच्यै नमः**। दक्षिणमें—**अवाच्यै नमः**। पश्चिममें—**प्रतीच्यै नमः**। उत्तरमें—**उदीच्यै नमः**। आकाशमें—**अन्तरिक्षाय नमः**। भूमिपर—**भूम्यै नमः**। हाथ जोड़कर प्रार्थना करे—

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।
ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः॥

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें[१] खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा[२]/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां[३] वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानामथ च ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां द्वितीयगोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां तथा च नानानामगोत्राणां तातामबात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च अक्षयतृप्तिकामः असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्ण्वादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं सदैवं

---

१. **पितृणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह। तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा॥**

२. ब्राह्मणको अपने नामके साथ '**शर्मा**', क्षत्रियको '**वर्मा**' तथा वैश्यको '**गुप्त**' जोड़ना चाहिये।

३. यहाँ पिता, पितामह तथा प्रपितामहका नाम बोलना चाहिये।

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें[१] खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।

यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञासंकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा[२]/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां[३] वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानामथ च ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां द्वितीयगोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां तथा च नानानामगोत्राणां ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च अक्षयतृप्तिकामः असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्ण्वादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं सदैवं

---

१. **पितॄणां दक्षिणे पार्श्वे विपरीता तु दैविके। दक्षिणे कटिदेशे तु कुशत्रयतिलैः सह। तर्जयन्तीह दैत्यानां यथा नृणामयस्तथा॥**

२. ब्राह्मणको अपने नामके साथ '**शर्मा**', क्षत्रियको '**वर्मा**' तथा वैश्यको '**गुप्त**' जोड़ना चाहिये।

३. यहाँ पिता, पितामह तथा प्रपितामहका नाम बोलना चाहिये।

सैकोद्दिष्टं पार्वणश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदान*

(क) विश्वेदेवोंके लिये आसनदान—प्रदक्षिणक्रमसे पितरोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके आसनोंके दक्षिणकी ओर रखे हुए अपने आसनपर उत्तराभिमुख हो बैठ जाय। तदनन्तर एकतन्त्रसे आसनदानका संकल्प करे—

एकतन्त्रसे संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/

* (क) अक्षय्यासनयोः षष्ठी द्वितीयावाहने तथा। अन्नदाने चतुर्थी च शेषाः सम्बुद्धयः स्मृताः॥

(निर्णयसिन्धु)

(ख) आसनाह्वानयोरर्घे तथाक्षय्येऽवनेजने। क्षणे स्वाहा स्वधा वाणीं न कुर्यादब्रवीन्मनुः॥

(श्राद्धकाशिकामें धर्मप्रदीप)

वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकानां विश्वेषां देवानामिदं त्रिकुशात्मकमासनं वो नमः।

ऐसा संकल्प पढ़कर पहले दक्षिणमें स्थित पिता, पितामह तथा प्रपितामहके विश्वेदेवोंवाले आसनपर तथा फिर उत्तरमें स्थित दूसरे विश्वेदेवोंके आसनपर देवतीर्थसे संकल्पजल छोड़ दे।

(ख) पितरोंके लिये आसनदान—विश्वेदेवोंके आसनकी परिक्रमा करते हुए पितरोंके आसनके समीप अपने आसनपर आ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख तथा बायाँ घुटना* जमीनसे लगाकर पितरोंके आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

(१) एकतन्त्रसे आसनदानका संकल्प—ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अथ च अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वती-स्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य-स्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे इमानि मोटकरूपाणि आसनानि विभज्य वो नमः। कहकर नौ आसनोंपर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) अवशिष्ट बन्धु-बान्धवोंके लिये आसनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल

---

* दक्षिणं पातयेज्जानुं देवान् परिचरन् सदा। पातयेदितरं जानुं पितॄन् परिचरन् सदा॥

लेकर आसनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य नानागोत्रोत्पन्नानां नानानामधेयानां यथासम्भवं सपत्नीकानां ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधिताव-शिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च तन्त्रेण क्रियमाणे श्राद्धे इदमासनं युष्मभ्यं नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलमें जाना—पितरोंको आसनदान देकर पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय और विश्वेदेवोंका पूजन करे।

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक श्राद्धमें आवाहनका निषेध है।*

विश्वेदेवोंका पूजन—पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंका तथा मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंका निम्न रीतिसे पूजन

---

* (क) **अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत्॥**

(श्राद्धचिन्तामणिमें पद्मपुराणका वचन)

तीर्थश्राद्धमें अर्घ, आवाहन, अंगुष्ठनिवेशन, तृप्तिप्रश्न और विकिरदानका निषेध है।

(ख) **श्राद्धं च तत्र कर्तव्यमर्घ्यावाहनवर्जितम्।**

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें देवीपुराणका वचन)

(ग) **आवाहनं विसृष्टिश्च तत्र तेषां न विद्यते।**

(त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें भविष्यपुराणका वचन)

करना चाहिये—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः)—कहकर यवाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करें।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर पिता, पितामह, प्रपितामह एवं माता, पितामही तथा प्रपितामहीके श्राद्धसम्बन्धी विश्वेदेवोंके अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्ध-सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर पहले दक्षिणवाले आसनपर तदनन्तर उत्तरवाले आसनपर संकल्पजल छोड़ दे।

मण्डलकरण

विश्वेदेवमण्डलकरण—दोनों विश्वेदेवोंके भोजनपात्रोंके सहित आसनोंके चारों ओर दक्षिणावर्त जलसे घेरते

हुए दो पृथक्-पृथक् चौकोर[1] मण्डल बनाये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

अग्नौकरण—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें अपने आसनपर आकर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। एक दोनियेमें जल भरकर सामने रख ले। बने हुए पाकमें घृत छोड़कर पाकान्नसे दो आहुतियाँ दोनियेके जलमें[2] निम्न मन्त्रोंसे दे—

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा।

(२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

इस प्रकार अग्नौकरणकर पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें अपने आसनपर उत्तराभिमुख बैठ जाय। तदनन्तर अन्नपरिवेषण करे।

अन्नपरिवेषण—दोनों विश्वेदेवोंके लिये रखे हुए दो पृथक्-पृथक् भोजनपात्रोंसे जौ आदि हटा ले। बने हुए पाक तथा भोजन-सामग्रीसे प्रथम भोजनपात्रपर अन्नोंको परोसे। घृतपात्रमें घृत छोड़ दे, जलपात्रमें जल छोड़ दे और निम्न मन्त्र पढ़ते

---

१. देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—(क) **दैवे चतुरस्त्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

२. '**अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणौ वाथ जलेऽपि वा।**' (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें मत्स्यपुराणका वचन)

यहाँ अग्न्यभावका अर्थ अग्न्याधानाभाव है। जो अग्निहोत्री हैं, वे दक्षिणाग्निमें अग्नौकरण करें और अग्निके अभावमें अर्थात् अग्न्याधानके अभावमें जो अग्निहोत्री नहीं हैं, वे सपात्रकश्राद्धमें ब्राह्मणके दाहिने हाथमें अग्नौकरण करें और सपात्रकश्राद्ध न होनेपर दोनियेमें स्थित जलमें अग्नौकरण करें।

हुए परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

इसी प्रकार दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्र, घृतपात्र, जलपात्र आदिमें भोजन आदि परोसकर '**मधु वाता०**' से मधु छोड़े।
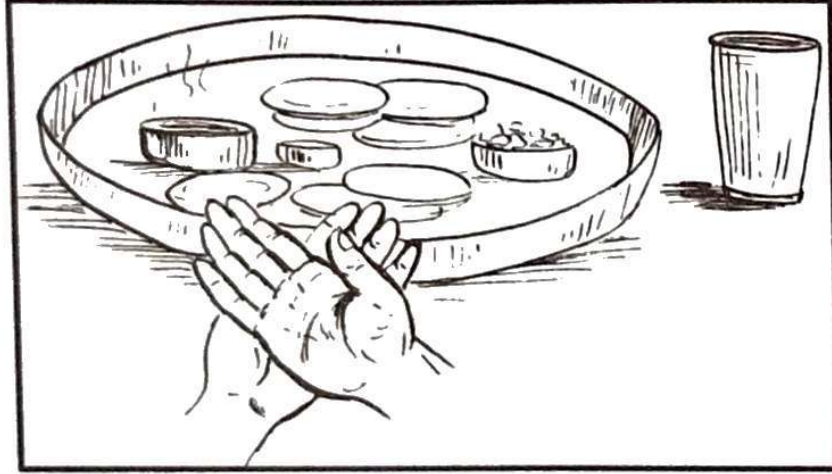
पात्रालम्भन*—उत्तान बायें हाथपर उत्तान दायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही विश्वेदेवोंके भोजनपात्रके चारों ओर निम्न मन्त्रसे जौ छींटे—

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः।

अन्नदानका संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे—

* (क) **दक्षिणं तु करं कृत्वा वामोपरि निधाय च। देवपात्रमथालभ्य 'पृथ्वी ते' पात्रमुच्चरेत्॥** (ख) ***पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।*** (यम)

ॐ अद्य .....गोत्राणां .....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामस्मन्मातृ-पितामहीप्रपितामहीनां .....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर भोजनपात्रसे बायाँ हाथ हटा ले।

दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर भी पूर्वकी भाँति पात्रालम्भन आदि करके अन्नसमर्पणका निम्न संकल्प करे—

अन्नदानका संकल्प—ॐ अद्य .....गोत्राणां .....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। संकल्पके पश्चात् भोजनपात्रसे बायाँ हाथ हटा ले।

पितरोंके मण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलके पास अपने आसनपर आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय और पितरोंका पूजन करे।

पितरोंका पूजन—पिता, पितामह तथा प्रपितामह; माता, पितामही और प्रपितामही एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके नौ आसनोंपर तथा अवशिष्ट बान्धवादिके आसनपर भी पृथक्-पृथक् विविध उपचारोंसे पूजन करे। यथा—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम्—(हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

(क) **ॐ अद्य ....गोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः**[1] **अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तथा च अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ....देव्यः**[2] **गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः द्वितीयगोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मन्माता-महप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः सपत्नीकाः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा।** कहकर नौ आसनोंपर संकल्पजल छोड़ दे।

(ख) **ॐ अद्य नानानामगोत्राः ....नामधेयाः तातामबात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवाः अस्मत्तः कामयानाश्च तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा।** कहकर आसनपर संकल्पजल छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले, पुनः अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

मण्डलकरण[3]—जलद्वारा वामावर्त सभी भोजनपात्रों और आसनोंसहित चतुर्दिक् पृथक्-पृथक् गोल मण्डल बनाये।

---

१. पिता, पितामह तथा प्रपितामहका नाम बोलना चाहिये। २. माता, पितामही तथा प्रपितामहीका नाम बोलना चाहिये।

३. देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार मण्डल बनाना चाहिये—(क) **दैवे चतुरस्त्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्।** (निर्णयसिन्धुमें बह्वृचपरिशिष्ट) (ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—**प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्।** (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

हुए दसों भोजनपात्रोंमें परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳरजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥
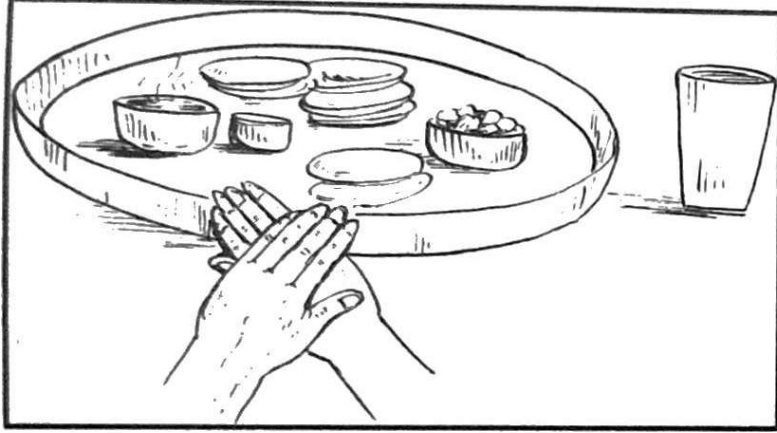
पात्रालम्भन—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर* सर्वप्रथम पितावाले अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

तिलविकिरण—बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही पितावाले भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

'ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥'

अन्नदानका संकल्प—संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका निम्न संकल्प करे—

---

* (क) **दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥** (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)
(ख) **पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।** (यम)

ॐ अद्य ....गोत्राय ....शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय पित्रे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्तेऽन्नं स्वधा—ऐसा कहकर संकल्पजल पितावाले भोजनपात्रपर छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर भोजनपात्रसे बायाँ हाथ हटा ले।

इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामह एवं अवशिष्ट बान्धवादिके अन्नपात्रोंपर भी आलम्भन, तिलविकिरण तथा संकल्पकी क्रियाएँ करे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले। अन्नदानके संकल्पमें '**पित्रे**' (पिता)-के स्थानपर चतुर्थीविभक्त्यन्त '**पितामहाय**'[1] आदि जोड़ ले। अन्नदानके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़े—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

सव्य होकर हाथ धो ले और आचमन करे।

पितृगायत्रीका पाठ—तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—पितरोंका ध्यान करते हुए पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेद-शास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव पुरुषसूक्त, रुचिस्तव तथा रक्षोघ्नसूक्त आदिका पाठ करना चाहिये। तीर्थश्राद्धमें पितृसूक्तके जपका निषेध है।[2]

---

१. **पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे, पितामह्यै, प्रपितामह्यै, सपत्नीकाय मातामहाय, सपत्नीकाय प्रमातामहाय, सपत्नीकाय वृद्धप्रमातामहाय** क्रमसे जोड़ ले तथा अन्तिम आसनपर '**नानानामगोत्रेभ्यः ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादिभ्यः**' जोड़ लेना चाहिये।

२. **वृद्धिश्राद्धे गयाश्राद्धे प्रीतिश्राद्धे तथैव च। सपिण्डीकरणश्राद्धे न जपेत्पितृसूक्तकम्॥** (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रह)

श्रुतिपाठ— ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः॥

स्मृतिपाठ—

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥
योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥
मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥
पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली एक वेदी पिता, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये। ऐसे ही दूसरी वेदी माता, पितामही तथा प्रपितामहीके लिये बनाये। इसी प्रकार तीसरी वेदी मातामहादिके निमित्त बनाये। साथ ही अवशिष्ट बान्धवादिके निमित्त एक वेदी और बनाये। चारों वेदियोंको जलसे सींचकर पवित्र कर ले। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—चारों वेदियोंपर दायें हाथसे तीन कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक सीधमें पृथक्-पृथक् तीन रेखाएँ खींचे। अवशिष्ट बान्धवादिकी वेदीके मध्यभागमें भी उत्तरसे दक्षिणकी ओर एक रेखा खींचे—

ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः।

उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—चारों वेदियोंके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारको घुमाकर पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर रख दे। यह क्रिया अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है—

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥

अवनेजनपात्रस्थापन*—अवनेजनपात्रके रूपमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे तीन दोनिये पिता, पितामह तथा प्रपितामहकी

---

* कई प्रयोगपद्धतियोंमें कुशास्तरणके बाद अवनेजन प्रदान करनेकी व्यवस्था दी गयी है, परंतु श्राद्धके आधारभूत ग्रन्थ पारस्करगृह्यसूत्र तथा उसके भाष्यकारोंके निम्न वचनोंके अनुसार कुशास्तरणके पूर्व वेदीके मध्य खींची गयी रेखापर अवनेजन देनेका विधान है—

'दर्भेषु त्रींस्त्रीन् पिण्डानवनेज्य दद्यात्' (पारस्करगृह्यसूत्रपरिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका ३)

अवनेजन देकर दर्भोंके ऊपर पिण्डदान करे।

उपर्युक्त पारस्करगृह्यसूत्रपर कर्काचार्यजीका भाष्य इस प्रकार है—**'पिण्डपितृयज्ञवदुपचार इति सूत्रितत्वात्।'**

'पिण्डपितृयज्ञवदुपचारः पित्र्ये' (श्राद्धकाशिका २। २ तथा पा०गृ० परिशिष्ट श्राद्धसूत्रकण्डिका २) इस सूत्रके अनुसार पिण्डपितृयज्ञमें जिस प्रक्रियाका आश्रयण किया गया है, उसी तरह अन्य श्राद्धोंमें भी किया जाय। दर्शपौर्णमासमें पितृयज्ञका प्रकरण है, जिसमें पहले अवनेजन करके बादमें कुशास्तरणकी विधि है।

गदाधरभाष्य—अत्राह याज्ञवल्क्यः—सर्वमन्नमुपादाय सतिलं दक्षिणामुखः। उच्छिष्टसन्निधौ पिण्डान् दद्याद्वै पितृयज्ञवत्॥

अत्र पदार्थक्रमः—उल्लेखनम्, उदकालम्भः, उल्मुकनिधानम्, अवनेजनम्, सकृदाच्छिन्नास्तरणम्, पिण्डदानम्।

अर्थात् उच्छिष्टकी सन्निधिमें दक्षिणाभिमुख होकर सभी अन्नोंको लेकर सतिलपितृयज्ञवत् पिण्ड प्रदान करना चाहिये। यहाँ पदार्थक्रम निम्नलिखित है—(१) उल्लेखन (रेखाकरण), (२) उदकालम्भन, (३) उल्मुकसंस्थापन (अंगारभ्रामण), (४) अवनेजन, (५) कुशास्तरण तथा (६) पिण्डदान।

वेदीके पश्चिम भागमें; तीन दोनिये माता, पितामही तथा प्रपितामहीकी वेदीके पश्चिमभागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये सपत्नीक मातामहादिकी वेदीके पश्चिम भागमें रख दे। अवशिष्ट बान्धवादिके लिये भी इसी प्रकार एक दोनिया रखे। दसों दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तक-पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।*

कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखामें गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(२) पितामहके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार आधा जल वेदीकी मध्यरेखामें गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्ति-

---

* यहाँ स्वधाका निषेध है।

निमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीपर दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(४) माताके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा मातावाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ...गोत्रे अस्मन्मातः ...देवि गायत्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर आधा जल वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखापर गिराकर सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये सुरक्षित रख ले।

(५) पितामहीके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहीवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ...गोत्रे अस्मत्पितामहि ...देवि सावित्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर आधा जल वेदीकी मध्यवाली द्वितीय रेखापर गिराकर सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये सुरक्षित रख ले।

(६) प्रपितामहीके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रपितामहीवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ...गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ...देवि सरस्वतीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर आधा जल वेदीकी दक्षिणवाली तृतीय रेखापर गिराकर सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये सुरक्षित रख ले।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ...गोत्र अस्मन्मातामह ...शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप तीर्थ-प्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ...गोत्र अस्मत्प्रमातामह ...शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थ-प्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(१०) अवशिष्ट बन्धु-बान्धवादिके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अवशिष्ट बान्धवादिवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ....गोत्रा ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादयः तीर्थप्राप्तिनिमित्तक-श्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः।** कहकर आधा जल वेदीमें खींची गयी रेखापर गिराकर सजल दोनियेको यथास्थान सुरक्षित रख ले।

कुशास्तरण[1]—प्रत्येक वेदीपर समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्तकर खींची गयी रेखापर बिछा दे।

पिण्डनिर्माण—बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर गिराकर पाकमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर गोल-गोल पिण्ड बना ले और उन्हें किसी पत्तलपर रख दे। (सपत्नीक हो तो पत्नी पिण्डका निर्माण करके पतिके हाथमें देती जाय।)

पिण्डदान—बायाँ घुटना जमीनपर गिराकर दायें हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं[2] **स्वधा**—बोलकर वेदीमें बिछे हुए कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे। थोड़ा-

१. **दर्भग्रहणमिहोपमूलसकृदाछिन्नोपलक्षणार्थम्** (पा०गृ०सू० श्राद्धसूत्रकण्डिका ३, **दर्भेषु** पर कर्काचार्यजीका भाष्य)

२. हेमाद्रि (चतुर्वर्गचिन्तामणि)-में लौगाक्षिके वचनके अनुसार 'पिण्ड' शब्द नपुंसकलिंगमें प्रयुक्त हुआ है, यथा—
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तेभ्यः पिण्डं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥ (गौडीयश्राद्धप्रकाश) इसीके आधारपर यहाँ **'पिण्ड'** शब्द नपुंसकलिंगमें लिखा गया है।

सा अन्न भी वहीं रखकर बोले—**'ये च त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

(२) पितामहके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर पिण्डको कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) सँभालकर रख दे और थोड़ा-सा अन्न भी वहीं रखकर बोले—**'ये च त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

(३) प्रपितामहके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) पिण्ड रख दे, थोड़ा-सा अन्न भी वहीं रखकर बोले—**'ये च त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

लेपभाग*—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशोंके अग्रभागमें थोड़ा अन्न रखकर बोले—**ॐ लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्।** कुशोंके मूलभागमें हाथ पोंछ ले।

(४) माताके लिये—मातृवेदीके समीप जाकर मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातः ....देवि गायत्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर मातृवेदीपर बिछे हुए कुशोंके मूलभागपर (प्रथम अवनेजनस्थानपर) पितृतीर्थसे पिण्डको सँभालकर रख दे और थोड़ा अन्न भी वहीं रखकर बोले—

* (क) चौथी पीढ़ीसे सातवीं पीढ़ीतकके सपिण्ड पितरोंकी तृप्ति आदिके लिये लेपभाग प्रदान करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें है—

लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥ (मत्स्यपु० १८। २९)

(ख) **उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥** (पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्र-कण्डिका ३)

(ग) **दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥** (ब्रह्मोक्त)

'याश्च त्वामनुगच्छन्ति ताभ्यश्च।'

(५) पितामहीके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ···गोत्रे अस्मत्पितामहि ···देवि सावित्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर कुशोंके मध्यभागमें पिण्ड रखकर थोड़ा अन्न भी रखे और बोले—**'याश्च त्वामनुगच्छन्ति ताभ्यश्च।'**

(६) प्रपितामहीके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ···गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ···देवि सरस्वतीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—कुशोंके अग्रभागमें पिण्ड रखकर थोड़ा-सा अन्न भी रख दे और बोले—**'याश्च त्वामनुगच्छन्ति ताभ्यश्च।'**

लेपभाग—कुशोंके अग्रभागके समीप कुछ अन्न रखकर बोले—**'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्।'** कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(७) मातामहके लिये—तृतीय वेदीके पास जाकर मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य ···गोत्र अस्मन्मातामह ···शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप सपत्नीक तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर पितृतीर्थसे पिण्डवेदीपर स्थित कुशोंके मूल भागमें पिण्ड रख दे। थोड़ा अन्न भी रख दे और बोले—**'ये त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

(८) प्रमातामहके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ···गोत्र अस्मत्प्रमातामह ···शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर पितृतीर्थसे वेदीपर

स्थित कुशोंके मध्य भागमें पिण्ड रख दे। थोड़ा अन्न भी रख दे और बोले—**'ये त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा**—बोलकर पितृतीर्थसे वेदीपर स्थित कुशोंके अग्र भागमें पिण्ड रख दे। थोड़ा अन्न भी रख दे और बोले—**'ये त्वामनुगच्छन्ति तेभ्यश्च।'**

लेपभाग—थोड़ा-सा अन्न बिछाये गये कुशोंके अग्रभागमें रखकर बोले—**'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्।'** वेदीके उत्तरमें स्थित कुशमूलमें हाथ पोंछ ले।

(१०) अन्य सम्बन्धियोंके लिये पिण्डदान—चौथी वेदीपर अपने अन्य सम्बन्धियों तथा सम्पर्कियोंको पिण्डदान करनेकी व्यवस्था है। निम्नलिखित सम्बन्धियोंके लिये पिण्डदानके संकल्पमन्त्र यहाँ लिखे गये हैं। जिनके नाम-गोत्र स्मरण हों, उनके नाम-गोत्रका उच्चारणकर अलग-अलग पिण्ड देना चाहिये।

चौथी वेदीके समीप जाकर मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर पृथक्-पृथक् निम्न संकल्प करे और वेदीपर पितृतीर्थसे पिण्ड रखता जाय—

(१) विमाता (सौतेली माँ)—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मद् विमातः ....देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२) स्त्री—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मद्धर्मपत्नि ....देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(३) पुत्र—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पुत्र ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(४) पुत्री—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मत्पुत्रि ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(५) चाचा—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्पितृव्य ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(६) चाची—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मत्पितृव्यपत्नि ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(७) चाचाका पुत्र—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्पितृव्यपुत्र ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(८) फूआ—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मत्पितृष्वसः ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(९) फूफा—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्पितृष्वसृपते ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१०) फूआका पुत्र—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मत्पैतृष्वस्त्रेय ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(११) मामा—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मन्मातुल ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१२) मामी—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मन्मातुलानि ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१३) मामाका लड़का—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मन्मातुलपुत्र ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१४) बहन—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मद्भगिनि ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१५) बहनोई—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मद्भगिनीपते ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१६) भानजा—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मद्भागिनेय ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१७) श्वशुर—ॐ अद्य ····गोत्र अस्मद्भार्यापितः ····शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।
(१८) सासु—ॐ अद्य ····गोत्रे अस्मद्भार्यामातः ····देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(१९) मौसा—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातृष्वसृपते ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२०) मौसी—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातृष्वसः ....देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२१) मौसीका लड़का—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातृष्वस्त्रेय ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२२) गुरु—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद्‍गुरो ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२३) गुरुपत्नी—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मद्‍गुरुपत्नि ....देवि एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२४) गुरुपुत्र—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद्‍गुरुपुत्र ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२५) मित्र—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मित्र ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा।

(२६) सेवक—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्सेवक ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्ड चौथी वेदीपर रख दे।

(११) पिण्डकी कामना करनेवाले अन्य सम्पर्कियोंके लिये पिण्डदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य नानागोत्रोत्पन्नाः ....नानानामधेयाः यथासम्भवं सपत्नीकाः मत्तः पिण्डं कामयानाः एतत्पिण्डं युष्मभ्यं स्वधा—कहकर चौथी वेदीपर कुशाके ऊपर पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

इस प्रकार पिण्डदान करनेके अनन्तर सव्य होकर आचमनकर भगवान्‌का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—सर्वप्रथम पिता, पितामह तथा प्रपितामहवाली वेदीपर श्वासनियमन क्रिया करे। अपसव्य दक्षिणाभिमुख

होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो श्वास रोकते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।*

उसी क्रमसे पुनः दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और **अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत** यह मन्त्र पढ़े।

यह क्रिया अन्य वेदियोंपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनदानके १० अवनेजनपात्रोंके जलसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका जल पिण्डोंपर प्रदान

---

* श्राद्धकी कई प्रयोगपद्धतियोंमें '**अत्र पितरो मादयध्वम्०**', '**नमो वः पितरः०**', '**अघोराः पितरः०**' '·····**स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्**' आदि वैदिक मन्त्रोंमें ऊह करके लिंग-वचन तथा सम्बन्ध आदिका परिवर्तन कर दिया गया है अर्थात् एकोद्दिष्टश्राद्धोंमें '**पितरः०**' इत्यादि बहुवचनान्त पदोंमें ऊह करके उन्हें एकवचनान्त कर दिया गया है। वैदिक मन्त्रोंमें आनुपूर्वी नियत होनेके कारण ऊह करनेसे मन्त्रत्व नहीं रह जायगा और उन मन्त्रोंकी कर्मांगता भी नहीं हो सकेगी। इसी आशयसे पातंजलमहाभाष्यमें '**वैदिकाः खल्वपि**'—इसका व्याख्यान करते हुए आचार्य कैयटने '**वेदे त्वानुपूर्वीनियमाद्वाक्यान्युदाहरति**'—ऐसा लिखा है। इसके अतिरिक्त ऊह न करनेके विषयमें निम्नलिखित प्रमाण ध्यातव्य हैं—

(क) **अनाम्नातेष्वमन्त्रत्वमाम्नातेषु हि विभागः॥**'·····**याज्ञिकप्रसिद्धिरूपस्य मन्त्रलक्षणस्यैतेष्वभावात्। न ह्यध्येतार ऊहादीन् मन्त्रकाण्डेऽधीयते। तस्मात् नास्ति मन्त्रत्वम्।**' (जैमिनीय न्यायमाला अ० २, पाद १, अधि० ९, सूत्र ३४ तथा व्याख्या)

(ख) '·····**एवञ्च पूर्वोक्ते मन्त्रजाते पितृशब्दस्य सपिण्डीकरणान्तश्राद्धजन्यपितृत्वपरत्वात्तस्य च मातामहादिष्वपि सद्भावान्नोहः। तथा 'पूयति वा एतदृचोऽक्षरं यदेनदूहति तस्मादृचं नोहेत्' इति प्रतिषेधादपि नोहः। तथा अनृग्रूपेष्वपि मन्त्रेषु 'एतद्वः पितरो वासोऽमीमदन्त पितरः' इत्यादिष्वपि पूर्वोक्तन्यायान्नोहः।**' (भगवन्तभास्कर, श्राद्धमयूख)

करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो दोनियेमें जल डाल ले। दसोंका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

(१) पिताके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(२) पितामहके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रपितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातः ....देवि गायत्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर माताके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्पितामहि ....देवि सावित्रीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वण-श्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितामहीके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ....देवि सरस्वतीस्वरूपे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वण-श्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रपितामहीके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ……गोत्र अस्मन्मातामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे मातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ……गोत्र अस्मत्प्रमातामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ……गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(१०) अवशिष्ट बान्धवादिके लिये—ॐ अद्य ……गोत्राः ……नामधेयाः शास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादयः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः। बोलकर बान्धवोंके पिण्डोंपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे और भगवान्‌का स्मरण करे। पुनः अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और 'एतद्वः पितरो

वासः' कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र (कच्चा धागा) चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार पितामह, प्रपितामहके पिण्डोंपर तथा माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामह एवं अवशिष्ट बान्धवादिके पिण्डोंपर भी सूत्र चढ़ाकर पृथक्-पृथक् सूत्रदानका संकल्पकर जल छोड़े।

अवशिष्ट बान्धवादिके सूत्रदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः ....नानानामधेयाः अवशिष्टबान्धवादयः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धे एतद्वो वासः स्वधा। कहकर अवशिष्ट बान्धवादिके पिण्डपर जल छोड़ दे।

पिण्डपूजन—तदनन्तर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् उपचारोंसे एक साथ पूजन करे—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम्—(हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

एकतन्त्रसे अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपा अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ....देव्यः गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः तथा द्वितीयगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल छोड़ दे।

अवशिष्ट बान्धवादिके अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल तथा जल लेकर बोले—**ॐ अद्य ....गोत्राः ....नामधेयाः तातात्म्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादयः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा** कहकर संकल्पका जल छोड़ दे।

षड्ऋतु-नमस्कार—तदनन्तर पितृस्वरूप छः ऋतुओंको निम्न मन्त्रोंसे नमस्कार करे*—

(१) ॐ वसन्ताय नमः, (२) ॐ ग्रीष्माय नमः, (३) ॐ वर्षायै नमः, (४) ॐ शरदे नमः, (५) ॐ हेमन्ताय नमः तथा **(६) ॐ शिशिराय नमः।**

विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदान—पितृमण्डलसे पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों भोजनपात्रोंपर—

---

* **वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः। वर्षाभ्यश्च शरच्छंज्ञऋतवे च नमः सदा॥**

हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च। माससंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः॥ (ब्रह्मपुराण)

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर जौ छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—(क) हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल देवतीर्थसे पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर छोड़ दे।

(ख) इसी प्रकार मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके निमित्त संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर जल छोड़ दे।

पितरोंके लिये अक्षय्योदकदान—विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही तथा सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहके नौ भोजनपात्रोंपर पृथक्-पृथक् क्रमशः पितृतीर्थसे—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल लेकर पृथक्-पृथक् संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितुः वसुस्वरूपस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तक-पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे पिताके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) पितामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितामहस्य रुद्रस्वरूपस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रस्य ""शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रपितामहस्य आदित्यस्वरूपस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रपितामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ""गोत्रायाः अस्मन्मातुः ""देव्याः गायत्रीस्वरूपायाः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे माताके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य """"गोत्रायाः अस्मत्पितामह्याः ""देव्याः सावित्रीस्वरूपायाः तीर्थप्राप्ति-

निमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे पितामहीके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रायाः अस्मत्प्रपितामह्याः ....देव्याः सरस्वतीस्वरूपायाः तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रपितामहीके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मन्मातामहस्य वसुस्वरूपस्य सपत्नीकस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे मातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मद् वृद्धप्रमातामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पूर्वकी भाँति पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(१०) अवशिष्ट बान्धवादिके लिये—ॐ अद्य ....गोत्राणां ....नामधेयानां यथासम्भवं सपत्नीकानां

ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादीनां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पूर्वकी भाँति पितृतीर्थसे बान्धवादिके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिणदिशाकी ओर देखते हुए सभी पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

'ॐ अघोराः पितरः सन्तु'

आशीष-प्रार्थना—सव्य पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणवाक्य—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा देना—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिता, पितामह तथा प्रपितामहके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

इसी प्रकार माता, पितामही एवं प्रपितामहीके पिण्डों तथा सपत्नीक मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामहके पिण्डों और अवशिष्ट बान्धवादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे।

सामान्य पिण्डदान*

श्राद्ध एवं पिण्डदानके अनन्तर सर्वसामान्यके लिये सामान्य पिण्ड भी देनेकी शास्त्रकी विधि है। दो पिण्ड बना ले तथा निम्न श्लोकोंको पढ़कर पिण्डासनके लिये वेदीसे अतिरिक्त कुशा बिछाकर पिण्डदान करे। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चाऽन्ये बान्धवा मृताः॥ १॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ २॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाता कुले मम। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे—

पुनः हाथमें मोटक, तिल, जल तथा दूसरा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे।

* **एकं पिण्डमुपादाय संस्कृत्य च यथाविधि। ज्ञातिवर्गस्य कृत्स्नस्य सामान्यमिति निर्वपेत्॥** (त्रिस्थलीसेतुसारसंग्रहमें देवलका वचन)

पिण्डविसर्जन—सभी पिण्डोंको उठाकर किसी पत्तल आदिपर रखकर जलमें प्रवाहित कर दे या गायको खिला दे।* पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको अन्य अग्निमें छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलमें आना—पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें जाकर सव्य, उत्तराभिमुख हो अपने आसनपर बैठ जाय।

दक्षिणादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा स्वर्ण अथवा निष्क्रय-द्रव्य लेकर विश्वेदेवोंके निमित्त दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ""गोत्रः ""शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ""गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ""गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ""देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ""शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमां हिरण्यदक्षिणां/हिरण्यनिष्क्रयद्रव्यं ""गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

—कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे। भोजनके पश्चात् देना हो तो '**दातुमुत्सृज्ये**' कहकर दक्षिणा देवासनपर रख दे।

पितृमण्डलमें आना—विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय।

* **ततः कर्मणि निर्वृत्ते तान् पिण्डांस्तदनन्तरम्। ब्राह्मणोऽग्निरजो गौर्वा भक्षयेदप्सु वा क्षिपेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें देवलका वचन)

पूर्वाभिमुख होकर सव्यावस्थामें ही दक्षिणादानका संकल्प करे—

दक्षिणादानका संकल्प—हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा या निष्क्रयद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ····गोत्रः ····शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ····गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ····शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ····गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ····देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तथा द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ····शर्मणां /वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां अथ च ····गोत्राणां ····नामधेयानां ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादीनां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमानि रजतखण्डानि/ रजतनिष्क्रयद्रव्यं ····गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

—कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजितकर देना हो तो **'नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये'** कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितृगायत्रीका पाठ—निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

मातृषोडशी (माताके लिये पिण्डदान)

यहाँ मातृषोडशीका विधान दिया जा रहा है। इसे अवश्य करना चाहिये। इसके पश्चात् पुरुषषोडशी तथा स्त्रीषोडशी भी दी जा रही है। यथासम्भव इन्हें भी कर सकते हैं। माताके लिये सोलह पिण्ड देनेका विधान है, जिसे मातृषोडशी कहा जाता है। पिण्डोंको रखनेके लिये वेदीसे अलग कुशोंको बिछाकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर मोटक, तिल, जल लेकर निम्नलिखित

मन्त्रसे माताका आवाहन करे—

आगर्भज्ञानपर्यन्तं पालितोऽहं त्वया सदा। आवाहयामि त्वामम्बां दर्भपृष्ठे तिलोदकैः॥

—ऐसा कहकर हाथमें लिया हुआ तिल, जल बिछाये गये कुशोंपर छोड़ दे। तदनन्तर मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर एक-एक मन्त्र पढ़कर पिण्ड कुशासनपर रखता जाय। इस प्रकार सोलह पिण्डदान होंगे।

गर्भस्योद्गमने दुःखं विषमे भूमिवर्त्मनि। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १ ॥
मासि मासि कृतं कष्टं वेदना प्रसवे तथा। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ २ ॥
पद्भ्यां प्रजायते पुत्रो जनन्याः परिवेदनम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ३ ॥
सम्पूर्णे दशमे मासि चात्यन्तं मातृपीडनम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ४ ॥
शैथिल्ये प्रसवे प्राप्ते माता विन्दति दुष्कृतम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ५ ॥
पिबेच्च कटुद्रव्याणि क्वाथानि विविधानि च। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ६ ॥
अग्निना शोषयेद्देहं त्रिरात्रोपोषणेन च। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ७ ॥
रात्रौ मूत्रपुरीषाभ्यां क्लिन्नः स्यान्मातृकर्पटः। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ८ ॥
क्षुधया विह्वले पुत्रे माता ह्यन्नं प्रयच्छति। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ९ ॥
दिवा रात्रौ सदा माता ददाति निर्भरं स्तनम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १० ॥
माघे मासि निदाघे च शिशिरेऽत्यन्तदुःखिता। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ ११ ॥

पुत्रे व्याधिसमायुक्ते माता हा क्रन्दकारिणी। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १२॥

यमद्वारे महाघोरे माता शोचति सन्ततम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १३॥

यावत्पुत्रो न भवति तावन्मातुश्च शोचनम्। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १४॥

स्वल्पाहारस्य करणी यावत् पुत्रश्च बालकः। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १५॥

गात्रभङ्गा भवेन्माता मृत्युरेव न संशयः। तस्य निष्क्रयणार्थाय मातृपिण्डं ददाम्यहम्॥ १६॥

इस प्रकार माताके निमित्त गयामें जाकर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक जो पुत्र श्राद्ध करता है, उसके सन्तानके लिये माता आशीर्वाद प्रदान करती है।

यस्याः पुत्रो गयां गत्वा श्राद्धं कुर्याच्च भक्तितः। तस्य पुत्रस्य पौत्रस्य माता ह्याशीः प्रयच्छति॥

पुरुषषोडशी (पुरुषोंके लिये पिण्डदान)

जो पुरुषषोडशी तथा स्त्रीषोडशी करना चाहें, वे निम्नलिखित मन्त्रोंको क्रमशः पढ़ते हुए बिछाये गये कुशोंके आसनपर पृथक्-पृथक् पिण्ड देते जायँ—

अस्मत्कुले मृता ये च गतिर्येषां न विद्यते। तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ १॥

मातामहकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते। तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ २॥

बन्धुवर्गकुले ये च गतिर्येषां न विद्यते। तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

अजातदन्ता ये केचिद् ये च गर्भे प्रपीडिताः। तेषामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ४॥

अग्निदग्धाश्च ये केचिन्नाग्निदग्धास्तथापरे। विद्युच्चौरहता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ५॥
दावदाहे मृता ये च सिंहव्याघ्रहताश्च ये। दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिर्वाऽपि तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ६॥
अरण्ये वर्तमाना ये क्षुधया तृषया हताः। भूतप्रेतपिशाचाद्यैस्तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ७॥
रौरवे चान्धतामिस्त्रे कालसूत्रे च ये गताः। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ८॥
असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च ये गताः। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ९॥
पशुयोनिं गता ये च पक्षिकीटसरीसृपाः। अथवा वृक्षयोनिस्थास्तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १०॥
अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोके च ये गताः। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ११॥
नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये गताः। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १२॥
जात्यन्तरसहस्त्रेषु भ्रमन्तः स्वेन कर्मणा। मानुष्यं दुर्लभं येषां तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १३॥
दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठाः पितरो बान्धवादयः। मृता असंस्कृता ये च तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १४॥
ये केचित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा॥ १५॥
येऽबान्धवा बान्धवा वा येऽन्यजन्मनि बान्धवाः। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥ १६॥

स्त्रीषोडशी (स्त्रियोंके लिये पिण्डदान)

अस्मत्कुले मृता याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ १॥
मातामहकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ २॥
बन्धुवर्गकुले याश्च गतिर्यासां न विद्यते। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

अजातदन्ता याः काश्चिद् याश्च गर्भे प्रपीडिताः। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ४ ॥

अग्निदग्धाश्च याः काश्चिन्नाग्निदग्धास्तथापराः। विद्युच्चौरहता याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ५ ॥

दावदाहे मृता याश्च सिंहव्याघ्रहताश्च याः। दंष्ट्रिभिः शृङ्गिभिश्चापि ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ६ ॥

उद्बन्धनमृता याश्च विषशस्त्रहताश्च याः। आत्मापघातिन्यो याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ७ ॥

अरण्ये वर्तमाना या क्षुधया तृषया हताः। भूतप्रेतपिशाचाद्यैस्ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ८ ॥

रौरवे चान्धतामिस्त्रे कालसूत्रे च या गताः। असिपत्रवने घोरे कुम्भीपाके च या गताः।
तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ९ ॥

पशुयोनिं गता याश्च पक्षिकीटसरीसृपाः। अथवा वृक्षयोनिस्थास्ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १० ॥

अनेकयातनासंस्थाः प्रेतलोके च या गताः। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ ११ ॥

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च याः स्थिताः। तासामुद्धरणार्थाय इदं पिण्डं ददाम्यहम्॥ १२ ॥

जात्यन्तरसहस्त्रेषु भ्रमन्त्यः स्वेन कर्मणा। मानुष्यं दुर्लभं यासां ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १३ ॥

दिव्यन्तरिक्षभूमिष्ठा मातरो बान्धव्यादिकाः। मृता असंस्कृता याश्च ताभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ १४ ॥

याः काश्चित् प्रेतरूपेण वर्तन्ते मातरो मम। ताः सर्वास्तृप्तिमायान्तु पिण्डेनानेन सर्वदा॥ १५ ॥

बान्धव्यो यास्त्वबान्धव्यो बान्धव्यश्चान्यजन्मनि। तासां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥ १६ ॥

रक्षादीपनिर्वापण*—जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर दीप एक बारमें बुझा दे और हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल हाथमें लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां नानानामगोत्राणां तातात्म्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादीनां तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धप्रतिष्ठासाङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे। यदि बादमें देना हो तो '**दातुमुत्सृज्ये**' कहकर आसनपर रख दे तथा भोजनके अन्तमें दे।

कर्मका समर्पण—**अनेन कृतेन तीर्थप्राप्तिनिमित्तकश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम।** कहकर जल छोड़ दे।

साक्षीश्रवणकर्म—श्राद्धके अन्तमें निम्न श्लोकोंसे भगवान् गदाधरकी प्रार्थना करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

* दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

ब्रह्मा, शिव आदि देवता मेरे कर्मके साक्षी होवें। मैंने गयामें आकर अपने पितरोंके प्रति अपने कर्तव्यका निर्वाह किया। हे देव गदाधर! पितृकार्यके लिये मैं गयामें आया हूँ। हे भगवन्! आप ही इसमें साक्षी होवें, मैं ऋणत्रयसे मुक्त हो जाऊँ।

भगवत्-स्मरण—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पार्वणश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्ध

तीर्थश्राद्धमें पार्वणश्राद्ध तथा एकोद्दिष्टश्राद्धसे भिन्नता है। इसमें विश्वेदेवकी स्थापना नहीं की जाती तथा दिग्बन्ध, आवाहन, अर्घ, कूष्माण्ड ऋचाका जप, अंगुष्ठनिवेशन, अग्नौकरण, पितृसूक्तका पाठ, विकिरदान, तृप्तिप्रश्न तथा विसर्जन नहीं किया जाता।[१]

स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र (धोती तथा उत्तरीय—चादर, गमछा आदि) धारण कर ले। तीर्थश्राद्धमें श्राद्ध करनेके पूर्व तर्पण करनेकी विधि है। तर्पण करके श्राद्ध प्रारम्भ करना चाहिये। तीर्थमें समयपर अथवा असमय—किसी भी समय पितृतर्पणपूर्वक तीर्थश्राद्ध किया जा सकता है। इसलिये तीर्थमें पहुँचकर स्नान, तर्पण, श्राद्ध-पिण्डदान करनेमें विलम्ब नहीं करना चाहिये।[२]

श्राद्धकर्ता श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे। श्राद्धदेशके

---

१. (क) **अर्घमावाहनं चैव द्विजाङ्गुष्ठनिवेशनम्। तृप्तिप्रश्नं च विकिरं तीर्थश्राद्धे विवर्जयेत्॥** (श्राद्धचिन्तामणिमें पद्मपुराणका वचन)

(ख) **नावाहनं न दिग्बन्धो न दोषो दृष्टिसम्भवः। सकारुण्येन कर्तव्यं तीर्थश्राद्धं विचक्षणैः॥** (वायुपु० १०५।३८)

(ग) **आवाहनविसृष्टिश्च तत्र तेषां न विद्यते।** (त्रिस्थलीसेतुमें भविष्यपुराण) (घ) **अग्नौकरणं तीर्थश्राद्धे न कार्यम्।** (स्मृतिरत्नावली)

(ङ) **वृद्धिश्राद्धे गयाश्राद्धे प्रीतिश्राद्धे तथैव च। सपिण्डीकरणश्राद्धे न जपेत्पितृसूक्तकम्॥** (त्रिस्थलीसेतु)

२. **कालेे वाप्यथवाऽकाले तीर्थश्राद्धं सदा नरैः। प्राप्तैरेव सदा कार्यं पितृतर्पणपूर्वकम्॥**
तीर्थमेव समासाद्य सद्यो रात्रावपि क्षणम्। स्नानञ्च तर्पणं श्राद्धं कुर्याच्चैव विधानतः॥
पिण्डदानं ततः शस्तं पितॄणाञ्चैव दुर्लभम्। विलम्बं नैव कुर्वीत न च विघ्नं समाचरेत्॥

(श्राद्धकल्पलता; सदाचाररत्नाकरमें हारीतका वचन तथा देवीपुराणका वचन)

ईशानकोणमें पाक बनाना चाहिये।

पाकनिर्माण—पिण्डदान एवं अन्नपरिवेषणके लिये गाढ़ी खीर मिट्टीके बर्तनमें बनानी चाहिये। श्राद्धकार्यमें लोहेके पात्रका निषेध है।[१] श्राद्धस्थलपर पाकनिर्माणमें असुविधा हो सकती है, अतः अपने निवासस्थानमें पाक बनाकर साथ ले जा सकते हैं। खीरके अभाव (विकल्प)-में जौके आटे, जौके सत्तू अथवा खोएसे भी पिण्डदान किया जा सकता है। अथवा पिष्टक (तिलकुट), तण्डुल (चावल), फल, मूल (आलू, शकरकन्द), तिलकल्क (तिलके लड्डू), घृतमिश्रित गुड़खण्ड, दही, ऊर्ज (द्रव्यविशेष), मधु, घृतमिश्रित पिण्याक (तिलकी खली)—इनका पिण्डके रूपमें श्राद्धमें प्रयोग करनेसे पितरोंको अक्षय तृप्ति होती है।[२] (इनमेंसे जो सामग्री उपलब्ध हो उससे पिण्डदान किया जा सकता है।)

पाकनिर्माणके अनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

---

१. **न कदाचित् पचेदन्नमयः स्थालीषु पैतृकम्। अयसो दर्शनादेव पितरो विद्रवन्ति हि॥**
कालायसं विशेषेण निन्दन्ति पितृकर्मणि। फलानां चैव शाकानां छेदनार्थानि यानि तु॥
महानसेऽपि शस्तानि तेषामेव हि संनिधिः। (चमत्कारखण्ड, श्राद्धकल्पलता)

२. **पायसेनापि चरुणा सक्तुना पिष्टकेन वा। तण्डुलैः फलमूलाद्यैर्गयायां पिण्डपातनम्॥**
तिलकल्केन खण्डेन गुडेन सघृतेन वा। केवलेनैव दध्ना वा ऊर्जेन मधुनाथवा॥
पिण्याकं सघृतं खण्डं पितृभ्योऽक्षयमित्युत। (वायुपु० १०५। ३३—३५)

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम कर ले।

पितरोंके लिये पात्रासादन—गयातीर्थश्राद्धमें पिता, पितामह तथा प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त नौ पृथक्-पृथक् आसन आदि होते हैं।*

अन्य बन्धु-बान्धवोंके लिये पिण्डदान करनेके लिये एक आसन, एक भोजनपात्र, एक घृतपात्र, एक जलपात्र तथा एक पिण्डवेदी अतिरिक्त बना ले। यह आसन वृद्धप्रमातामहके पूर्वभागमें लगाना चाहिये।

श्राद्धकर्ता अपने आसनके दक्षिण दिशामें पश्चिमपूर्वक्रमसे पृथक्-पृथक् नौ पत्तोंपर दक्षिणाग्र नौ मोटकरूप आसन रखे। उन

---

* (क) महालय, गयाश्राद्ध तथा अन्वष्टकाश्राद्धमें नवदैवत्य तथा शेष सर्वत्र षड्दैवत्यश्राद्ध करना चाहिये—

महालये गयाश्राद्धे वृद्धान्वष्टकासु च। नवदैवत्यमत्र स्यात् शेषं षाट्पौरुषं विदुः॥

(ख) **अष्टकासु च वृद्धौ च गयायां च मृतेऽहनि। मातुः श्राद्धं पृथक् कुर्यादन्यत्र पतिना सह॥** (वायुपु० ११०।१७)

नौ आसनोंपर त्रिकुशमें ग्रन्थि लगाकर नौ कुशवटु बनाकर एक-एक कुशवटु पृथक्-पृथक् उत्तराग्र रखे। नौ आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र, भोजनपात्रके पश्चिम एक-एक जलपात्र तथा भोजनपात्रोंके सामने (उत्तर) एक-एक घृतपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया) रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन—पितरोंके आसनके दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल छोड़ दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—**श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः** शालग्राम-शिलापर षोडशोपचार अथवा **पंचोपचार-पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का**

स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—अक्षतोंके ऊपर जलसे भरे एक कलशको रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, तिल, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे कलशके जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां /वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां तथा च नानानामगोत्राणां तातामबात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थं असद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं तीर्थश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

आसनदान

अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे—

एकतन्त्रसे आसनदानका संकल्प—

ॐ अद्य ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां

····शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां नानानामगोत्राणां तातम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधिता-वशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च गयायां ····तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे इमानि मोटकरूपाणि आसनानि विभज्य युष्मभ्यं नमः।

कहकर संकल्पका जलादि सभी आसनोंपर छोड़ दे।

पितरोंका पूजन—पिता, पितामह तथा प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके नौ आसनोंपर तथा बान्धवोंके लिये स्थापित पृथक् आसनपर विविध उपचारोंसे निम्न रीतिसे एक साथ पूजन करे—

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

एकतन्त्रसे अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर एकतन्त्रसे अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ....गोत्राः मातृ-पितामहीप्रपितामह्यः ....देव्यः गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः अथ च द्वितीयगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः

सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः.....गोत्राः .....नामधेयाः तातात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवाः अस्मत्तः कामयानाश्च गयायां .....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा।—ऐसा कहकर सभी आसनोंपर संकल्पजल छोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले, पुनः अपसव्य हो जाय।

मण्डलकरण—निम्न मन्त्र पढ़ते हुए जलद्वारा वामावर्त* सभी भोजनपात्रों और आसनोंसहित चतुर्दिक् पृथक्-पृथक् गोल मण्डल बनाये। सर्वप्रथम पिताके आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर एक साथ मण्डल बनाये। इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह तथा माता, पितामही तथा प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके तथा अवशिष्ट बान्धवादिके आसनोंसहित भोजनपात्रोंके चारों ओर गोल मण्डल बनाना चाहिये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े—

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति। एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। निर्मित पाकमेंसे एक दोनेमें सभी अन्न परोसकर उसमें घृत, तिल, मधु छोड़कर तथा दूसरे दोनेमें जल लेकर जलसे सिंचित भूमिमें वह

* (क) देवताओंके लिये चतुष्कोण और प्रेत तथा पितरोंके लिये वृत्ताकार (गोल) मण्डल बनाना चाहिये—
'दैवे चतुरस्त्रं पित्र्ये वर्तुलं मण्डलम्' (बह्वृचपरिशिष्ट)

(ख) देवताओंके लिये दक्षिणावर्त तथा प्रेत एवं पितरोंके लिये वामावर्त मण्डल बनानेकी विधि है—
प्रदक्षिणं तु देवानां पितॄणामप्रदक्षिणम्। (वीरमित्रोदय-श्राद्धप्रकाशमें कात्यायनका वचन)

अन्न तथा जल भूस्वामीके निमित्त निम्न मन्त्र बोलकर पितृतीर्थसे रख दे—

'ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः।'

अन्नपरिवेषण—पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही तथा सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहादिके लिये स्थापित नौ भोजनपात्रों और बान्धवादिके भोजनपात्रपर पृथक्-पृथक् अन्न परोसे। बायें भागमें पूर्वस्थापित जलपात्रोंमें जल तथा सामने स्थित घृतपात्रोंमें घी छोड़ दे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए सभी भोजनपात्रोंमें परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े—

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥ ॐ मधु मधु मधु॥

पात्रालम्भन—अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर* पितावाले अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले—

---

*(क) **दक्षिणोपरि वामं च पित्र्यपात्रस्य लम्भनम्। पात्रालम्भनं कुर्याद् दत्त्वा चान्नं यथाविधिः॥** (श्राद्धकाशिकामें पद्मपुराणका वचन)

(ख) **पित्र्येऽनुत्तानपाणिभ्यामुत्तानाभ्यां च दैवते।** (यम)

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम्।

तिलविकिरण—पितावाले भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे—

'ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः॥'

पिताके लिये अन्नदानका संकल्प—संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये हुए दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राय ....शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय ....पित्रे* गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं कव्यं अमृतस्वरूपं ते स्वधा—ऐसा कहकर संकल्पजल पितावाले भोजनपात्रपर छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर भोजनपात्रसे बायाँ हाथ हटा ले।

इसी प्रकार पितामह आदि सभीके अन्नपात्रोंपर पात्रालम्भन, तिलविकिरण करके अन्नदानका संकल्प करे और संकल्पजल तत्तद् भोजनपात्रोंपर छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

सव्य होकर हाथ धो ले तथा निम्न मन्त्र पढ़े—

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः॥

---

* संकल्पमें **'पित्रे'** के स्थानपर **पितामहाय, प्रपितामहाय, मात्रे, पितामह्यै, प्रपितामह्यै, सपत्नीकाय मातामहाय, सपत्नीकाय प्रमातामहाय, सपत्नीकाय वृद्धप्रमातामहाय** क्रमसे जोड़ लें तथा अन्तिम आसनपर **'नानानामगोत्रेभ्यः तातामबात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादिभ्यः'** जोड़ लेना चाहिये।

पितृगायत्रीका पाठ—तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

वेदशास्त्रादिका पाठ—पितरोंका ध्यान करते हुए पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर वेदशास्त्रादिका पाठ करे।

***श्रुतिपाठ*—**

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्॥

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः॥

***स्मृतिपाठ*—**

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः। प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन्॥

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन्। वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः। यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती॥

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ। शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः॥

पुराण—

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥
सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे॥
तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः। प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ॥

महाभारत—

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।
दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी॥
युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।
माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च॥

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी एक वेदी पिता, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये। दूसरी वेदी माता, पितामही तथा प्रपितामहीके लिये बनाये, तीसरी वेदी सपत्नीक मातामह, प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहके निमित्त बनाये तथा चौथी वेदी अवशिष्ट बन्धु-बान्धवादिके लिये बनाये। सभी वेदियोंको जलसे सींचकर पवित्र कर दे। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे

कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षा॑ंसि वेदिषदः**'—इस मन्त्रसे तीनों वेदियोंमें उत्तरसे दक्षिणकी ओर एक सीधमें तीन-तीन रेखाएँ तथा बान्धवादिवेदीमें एक रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—वेदियोंके चारों ओर **ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥** मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारको पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर रख दे। यह कार्य अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी किया जा सकता है।

अवनेजनपात्रस्थापन—अवनेजनपात्रके रूपमें तीन दोनिये पिता, पितामह तथा प्रपितामहकी वेदीके पश्चिम भागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये माता, पितामही तथा प्रपितामहीकी वेदीके पश्चिम भागमें और तीन दोनिये मातामहादिकी वेदीके पश्चिम भागमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे रख दे। अवशिष्ट बान्धवादिकी वेदीके भी पश्चिम भागमें एक अवनेजनपात्र रख ले। सभी दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(२) पितामहके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार वेदीकी मध्य रेखापर आधा जल गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीकी दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख दे।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातः ....देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको उत्तरवाली प्रथम रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्पितामहि ....देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको मध्यवाली द्वितीय रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ....देवि सरस्वतीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको दक्षिणवाली तृतीय रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(८) प्रमातामहके लिये— ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(१०) बान्धवोंके लिये—ॐ अद्य नानानामगोत्राः ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादयः गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः। पूर्ववत् अवनेजन दे।

कुशास्तरण—प्रत्येक वेदीपर बनी रेखाके ऊपर समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्त करके बिछा दे।

पिण्डनिर्माण—बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर गिराकर पाकमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर गोल-गोल पिण्ड बना ले और उन्हें किसी पत्तलपर रख दे। (सपत्नीक हो तो पत्नी पिण्डका निर्माण करके पतिके हाथमें देती जाय।)

पिण्डदान—एक पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श किये हुए निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्पितः ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं[1] स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(२) पितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्पितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(३) प्रपितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्प्रपितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग[2]—लेपभागभुक् पितरोंके लिये पिण्डसे बचे अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर कुशोंके

---

१. हेमाद्रि (चतुर्वर्गचिन्तामणि)-में लौगाक्षिके वचनके अनुसार पिण्ड शब्द नपुंसकलिंगमें प्रयुक्त है। यथा—**विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञाताः कुले मम। तेभ्यः पिण्डं मया दत्तमक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥** (गौडीयश्राद्धप्रकाश पृ० ७८) इसीके आधारपर यहाँ 'पिण्ड' शब्द नपुंसकलिंगमें प्रयुक्त है।

२. (क) चौथी पीढ़ीसे सातवीं पीढ़ीतकके सपिण्ड पितरोंकी तृप्ति आदिके लिये लेपभाग प्रदान करनेकी व्यवस्था शास्त्रमें है—

लेपभाजश्चतुर्थाद्याः पित्राद्याः पिण्डभागिनः। पिण्डदः सप्तमस्तेषां सापिण्ड्यं साप्तपौरुषम्॥ (मत्स्यपु० १८।२९)

(ख) **उत्तरे कुशमूलं तु पितृमूलं तु दक्षिणे। कुशमूलेषु यो दद्यान्निराशाः पितरो गताः॥** (पा०गृह्यसूत्र षड्भाष्योपेतश्राद्धसूत्रकण्डिका ३)

(ग) **दत्ते पिण्डे ततो हस्तं त्रिर्मृज्याल्लेपभागिनाम्। कुशाग्रे तत्प्रदातव्यं प्रीयन्तां लेपभागिनः॥** (ब्रह्मोक्त)

अग्रभागमें रख दे। पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातः ....देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्पितामहि ....देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ....देवि सरस्वतीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये पिण्डसे बचे अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर कुशोंके अग्रभागमें रख दे। पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मूलभागमें

(प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ⋯गोत्र अस्मत्प्रमातामह ⋯शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ⋯तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ⋯गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ⋯शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप गयायां ⋯तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पूर्ववत् पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये पिण्डसे बचे हुए अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर कुशोंके अग्रभागमें रख दे। पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(१०) बन्धु-बान्धवादिके लिये—जिन बान्धवादिका नाम-गोत्र याद हो, उनके लिये निम्न संकल्पद्वारा पृथक्-पृथक् पिण्डदान करे, पिण्डको चौथी वेदीपर रखता जाय। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ⋯गोत्र ⋯नामधेय एतत्ते पिण्डं स्वधा**—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे चौथी वेदीपर स्थित कुशोंपर रख दे।

(११) अवशिष्ट बन्धु-बान्धवादिके लिये—तातम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधित वे बान्धव जिनका नाम, गोत्र स्मरण नहीं है तथा अन्य सम्बन्धी जो श्राद्धकर्तासे पिण्डदान चाहते हों, उनके लिये एक पिण्ड बनाकर हाथमें मोटक,

तिल, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न संकल्पसे पिण्डदान करना चाहिये—

ॐ अद्य ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवाः अस्मत्तः पिण्डं कामयानाश्च एतत् पिण्डं युष्मभ्यं स्वधा। ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे चौथी वेदीपर रख दे।

सव्य होकर आचमनकर भगवान्‌का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर सर्वप्रथम पिता, पितामह तथा प्रपितामहवाली वेदीके पिण्डोंपर श्वासनियमनकी क्रिया करे। आसनपर बैठे हुए ही बायीं ओरसे श्वास खींचते हुए उत्तराभिमुख हो श्वास रोकते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

'अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।'

उसी क्रमसे पुनः दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेज:पुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डोंके पास श्वास छोड़े और **'अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत'** यह मन्त्र पढ़े।

यह क्रिया अन्य वेदियोंपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनदानके अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका जल पिण्डोंपर प्रदान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो जल डाल ले। सभीका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

(१) पिताके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्र अस्मत्पितः ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ……तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(२) पितामहके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्र अस्मत्पितामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ……तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(३) प्रपितामहके लिये—पूर्वरीतिसे अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ……गोत्र अस्मत्प्रपितामह ……शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ……तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल प्रपितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(४) माताके लिये—पूर्वरीतिसे अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ……गोत्रे अस्मन्मातः ……देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ……तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल माताके पिण्डपर गिरा दे।

(५) पितामहीके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ……गोत्रे अस्मत्पितामहि ……देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ……तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर प्रत्यवनेजन-जल पितामहीके पिण्डपर गिरा दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ……गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ……देवि सरस्वतीस्वरूपे**

गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर प्रत्यवनेजन-जल प्रपितामहीके पिण्डपर गिरा दे।

(७) मातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ""गोत्र अस्मन्मातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल मातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(८) प्रमातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्प्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल प्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ""गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(१०) बान्धवादिके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य नानानामगोत्राः ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्र-बोधितावशिष्टबान्धवादयः गयायां ""तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल बान्धवादिके पिण्डोंपर गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे। भगवान्‌का स्मरण कर

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

पिण्डार्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर पिण्डार्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य .....गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः .....गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः तथा द्वितीयगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तथा च नानानामगोत्राः बान्धवादयः गयायां .....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पका जलादि छोड़ दे।

षड्ऋतुनमस्कार—तदनन्तर पितृस्वरूप छः ऋतुओंको निम्न मन्त्रोंसे नमस्कार करे*—

(१) ॐ वसन्ताय नमः, (२) ॐ ग्रीष्माय नमः, (३) ॐ वर्षायै नमः, (४) ॐ शरदे नमः, (५) ॐ हेमन्ताय नमः तथा **(६) ॐ शिशिराय नमः।**

पितरोंको अक्षय्योदकदान—पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही एवं सपत्नीक मातामह,

* वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च नमो नमः। वर्षाभ्यश्च शरच्छंज्ञऋतवे च नमः सदा॥
हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमस्ते शिशिराय च। माससंवत्सरेभ्यश्च दिवसेभ्यो नमो नमः॥ (ब्रह्मपुराण)

प्रमातामह, वृद्धप्रमातामहके नौ आसनोंपर तथा बान्धवादिके आसनपर क्रमशः पितृतीर्थसे—

ॐ शिवा आपः सन्तु—कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु—कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु—कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प—मोटक, तिल, जल लेकर पृथक्-पृथक् संकल्पकर पितृतीर्थसे जल छोड़ दे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितुः वसुस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(२) पितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितामहस्य रुद्रस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रपितामहस्य आदित्यस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्राया: ....देव्याः अस्मन्मातुः गायत्रीस्वरूपायाः गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रायाः ....देव्याः अस्मत्पितामह्याः सावित्रीस्वरूपायाः गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रायाः ....देव्याः अस्मत्प्रपितामह्याः ....सरस्वतीस्वरूपायाः गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मन्मातामहस्य सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रस्य ....शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मद् वृद्धप्रमातामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

(१०) बान्धवादिके लिये—ॐ अद्य नानानामगोत्राणां बान्धवादीनां गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्ति-निमित्तकतीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिणदिशाकी ओर देखते हुए सभी पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

आशीष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मण बोले—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिता, पितामह, प्रपितामहके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

इसी प्रकार माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह तथा बान्धवादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे।

सामान्य पिण्डदान

श्राद्ध एवं पिण्डदान करनेके अनन्तर सर्वसामान्यके लिये सामान्य पिण्ड भी देनेकी शास्त्रकी विधि है। दो पिण्ड बना ले तथा पिण्डासनके लिये वेदीसे अतिरिक्त कुशा बिछाकर पिण्डदान करे। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चाऽन्ये बान्धवा मृताः॥ १॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ २॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाता कुले मम। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंपर रख दे।

इसी प्रकार मोटक, तिल, जल तथा दूसरा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्रको पढ़े—

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंपर रख दे।

पिण्डविसर्जन—पिण्डोंको उठाकर किसी पत्तल आदिपर रखकर जलमें विसर्जित कर दे। पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको अन्य अग्निमें छोड़ दे।

दक्षिणादानका संकल्प—सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा अथवा निष्क्रयभूतद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च अन्येषां नानानामगोत्राणां बान्धवादीनां गयायां ....तीर्थे कृतैतत्तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थमेतानि रजतखण्डानि/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको

दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजितकर देना हो तो **'नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये'** कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितृगायत्रीका पाठ— निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः **पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥**

रक्षादीपनिर्वापण *—अपसव्य दक्षिणामुख होकर जल आदि अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर एक बारमें रक्षादीप बुझाये। हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा हाथमें लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ·····गोत्रः ·····शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ·····गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ·····शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ·····गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ·····देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ·····शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां बान्धवादीनां गयायां ·····तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धसाङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे। यदि बादमें देना हो तो **'दातुमुत्सृज्ये'** कहकर आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

---

* दीपनिर्वापणात्पुंसः कूष्माण्डच्छेदनात् स्त्रियाः। वंशहानिः प्रजायेत तस्मान्नैवं समाचरेत्॥

साक्षीश्रवणकर्म—भगवान् गदाधरका स्मरण करते हुए हाथ जोड़े तथा निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

ब्रह्मा, शिव आदि देवता मेरे कर्मके साक्षी होवें। मैंने गयामें आकर अपने पितरोंके प्रति अपने कर्तव्यका निर्वाह किया। हे देव गदाधर! पितृकार्यके लिये मैं गयामें आया हूँ। हे भगवन्! आप ही इसमें साक्षी होवें, मैं ऋणत्रयसे मुक्त हो जाऊँ।

कर्मका समर्पण—गयायां ''''**तीर्थे कृतेनानेन तीर्थप्राप्तिनिमित्तकतीर्थश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम**। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ तीर्थप्राप्तिनिमित्तक तीर्थश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध

सम्पूर्ण गयाश्राद्ध सत्रह दिनोंका बताया गया है।* सत्रह दिनोंमें प्रतिदिन कई वेदियोंपर श्राद्ध किया जाता है, इसलिये पार्वणपद्धतिसे अथवा तीर्थश्राद्धविधिसे सभी वेदियोंपर श्राद्ध करना सम्भव नहीं होता। सभी वेदियोंपर समयके अन्तर्गत श्राद्ध सम्पन्न हो जाय, एतदर्थ यथासम्भव प्रतिदिन प्रथम वेदीपर पार्वणश्राद्ध करके अन्य वेदियोंपर तीर्थश्राद्ध अथवा पिण्डदानात्मक श्राद्ध समयानुसार करना चाहिये। पिण्डदानात्मक श्राद्धकी व्यवस्था शास्त्रने इस प्रकार दी है—

पिण्डासनं पिण्डदानं पुनः प्रत्यवनेजनम्। दक्षिणा चान्नसङ्कल्पस्तीर्थश्राद्धेष्वयं विधिः॥

(वायुपु० १०५। ३७)

इस पिण्डदानात्मक पद्धतिसे श्राद्ध करनेपर पार्वण तथा तीर्थश्राद्धोंकी प्रायः आधी प्रक्रिया कम हो जाती है। श्राद्धका प्रारम्भ पिण्डवेदीनिर्माणसे होता है।

यहाँपर इस पिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्धकी प्रक्रिया लिखी जा रही है—

स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र (धोती तथा उत्तरीय—चादर, गमछा आदि) धारण कर ले और श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

---

* पक्षत्रयनिवासी च पुनात्यासप्तमं कुलम्। नो चेत्पञ्चदशाहं वा सप्तरात्रिं त्रिरात्रकम्॥ (वायुपु० १०५। ११)

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—**ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः**। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम कर ले।

रक्षादीप-प्रज्वालन—पिण्डासनके दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल छोड़ दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्‌का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्राम-शिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार-पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्‌का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—अक्षतोंके ऊपर जलसे भरे एक कलशको रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, तिल, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे कलशके जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥
ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....देवीनां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां तथा च नानानामगोत्राणां ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थमसद्‌गतीनां सद्‌गतिप्राप्तये सद्‌गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं पिण्डदानमात्रश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी एक वेदी पिता, पितामह तथा प्रपितामहके लिये, दूसरी वेदी माता, पितामही तथा प्रपितामहीके लिये; तीसरी वेदी सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त बनाये तथा चौथी वेदी अवशिष्ट बन्धु-बान्धवोंके लिये बनाये। सभी वेदियोंको जलसे सींचकर पवित्र कर दे। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः**'—इस मन्त्रसे तीनों वेदियोंमें उत्तरसे दक्षिणकी ओर एक सीधमें तीन तथा बान्धवादिकी वेदीमें एक रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे।

उल्मुकस्थापन—वेदियोंके चारों ओर **ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात्॥** मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारको घुमाकर उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर रख दे। यह कार्य अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी किया जा सकता है।

अवनेजनपात्रस्थापन—अवनेजनपात्रके रूपमें तीन दोनिये पिता, पितामह तथा प्रपितामहकी वेदीके पश्चिम भागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये माता, पितामही तथा प्रपितामहीकी वेदीके पश्चिम भागमें और तीन दोनिये सपत्नीक मातामह,

प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहकी वेदीके पश्चिम भागमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे रख दे। अवशिष्ट बान्धवोंके लिये जो वेदी बनायी गयी है, उसके भी पश्चिम भागमें एक अवनेजनपात्र रख ले। सभी दोनियोंमें पृथक्-पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितः ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखामें गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(२) पितामहके लिये—इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर उसी प्रकार वेदीकी मध्य रेखामें आधा जल गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) प्रपितामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीकी दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख दे।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मातः ....देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको उत्तरवाली प्रथम रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्पितामहि ....देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको मध्यवाली द्वितीय रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ....देवि सरस्वतीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको दक्षिणवाली तृतीय रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(८) प्रमातामहके लिये— ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक

आदित्यस्वरूप गयायां ""तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(१०) बान्धवोंके लिये—ॐ अद्य नानानामगोत्राः तातताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवादयः गयायां ""तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः। पूर्ववत् अवनेजन दे।

कुशास्तरण—प्रत्येक वेदीपर बनी रेखाके ऊपर समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बारमें विभक्त करके बिछा दे।

पिण्डनिर्माण—बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर पिण्डद्रव्यमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर पिण्ड बना ले। जितने बान्धवोंको पिण्ड देना है, उनके निमित्त भी पिण्ड बना ले। सभी पिण्डोंको किसी पत्तलपर रख ले। (सपत्नीक हो तो पत्नी पिण्डका निर्माण करके पतिके हाथमें देती जाय।)

पिण्डदान—एक पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श किये हुए निम्न संकल्प करे—

(१) पिताके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्पितः ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ""तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(२) पितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ""गोत्र अस्मत्पितामह ""शर्मन् वर्मन्

गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(३) प्रपितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प—ॐ अद्य ''''गोत्र अस्मत्प्रपितामह ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशोंके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर रख दे। तदनन्तर पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(४) माताके लिये—ॐ अद्य ''''गोत्रे अस्मन्मातः ''''देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(५) पितामहीके लिये—ॐ अद्य ''''गोत्रे अस्मत्पितामहि ''''देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—ॐ अद्य ''''गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ''''देवि सरस्वतीस्वरूपे गयायां ''''तीर्थे

पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा। कहकर पिण्डको मातृवेदीमें स्थित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशोंके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'** कहकर रख दे। तदनन्तर पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(७) मातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मूल भागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(८) प्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मध्यभागमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धे एतत्ते पिण्डं स्वधा—कहकर पूर्ववत् पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके अग्रभागमें (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशोंके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको **'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्'**

कहकर रख दे। तदनन्तर पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(१०) बन्धु-बान्धवादिके लिये—जिन बन्धु-बान्धव, सम्बन्धी तथा मित्रका नाम-गोत्र याद हो, उनके लिये निम्न संकल्पद्वारा पृथक्-पृथक् पिण्डदान करे, पिण्डको चौथी वेदीपर रखता जाय। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर बोले—**ॐ अद्य ''''गोत्र ''''नामधेय एतत्ते पिण्डं स्वधा**—कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे वेदीपर स्थित कुशोंपर रख दे।

(११) अवशिष्ट बन्धु-बान्धवादिके लिये—ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधित वे बान्धव जिनका नाम, गोत्र स्मरण नहीं है तथा अन्य सम्बन्धी जो श्राद्धकर्तासे पिण्डदान चाहते हों, उनके लिये एक पिण्ड बनाकर हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पिण्ड लेकर निम्न संकल्पसे पिण्डदान करना चाहिये—

ॐ अद्य नानानामगोत्राः ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवाः अस्मत्तः पिण्डं कामयानाश्च एतत् पिण्डं युष्मभ्यं स्वधा—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे चौथी वेदीपर रख दे।

सव्य होकर आचमनकर भगवान्का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—सर्वप्रथम पिता, पितामह तथा प्रपितामहवाली वेदीके पिण्डोंपर श्वासनियमन-क्रिया करे। अपसव्य दक्षिणामुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो श्वास रोकते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

'अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।'

उसी क्रमसे पुनः दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े

और '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**' यह मन्त्र पढ़े।

यह क्रिया अन्य वेदियोंपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनदानके अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका जल पिण्डोंपर प्रदान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो जल डाल ले। सभीका पृथक्-पृथक् संकल्प इस प्रकार है—

(१) पिताके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पित: ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(२) पितामहके लिये—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्पितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(३) प्रपितामहके लिये—पूर्व रीतिसे अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रपितामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः**। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल प्रपितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(४) माताके लिये—पूर्वरीतिसे अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मन्मात: ....देवि गायत्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः**। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल माताके पिण्डपर

गिरा दे।

(५) पितामहीके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्पितामहि ....देवि सावित्रीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डनादात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर प्रत्यवनेजन-जल पितामहीके पिण्डपर गिरा दे।

(६) प्रपितामहीके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्रे अस्मत्प्रपितामहि ....देवि सरस्वतीस्वरूपे गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** कहकर प्रत्यवनेजन-जल प्रपितामहीके पिण्डपर गिरा दे।

(७) मातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्र अस्मन्मातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल मातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(८) प्रमातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्र अस्मत्प्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल प्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(९) वृद्धप्रमातामहके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य ....गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह ....शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः।**

बोलकर प्रत्यवनेजन-जल वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(१०) बान्धवादिके लिये—अवनेजनपात्र आदि लेकर **ॐ अद्य नानानामगोत्राः ''''बान्धवादयः गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः।** बोलकर प्रत्यवनेजन-जल बान्धवादिके पिण्डोंपर गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे। भगवान्‌का स्मरण कर ले। अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र (कच्चा धागा) पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और '**एतद्वः पितरो वासः**'—कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक्-पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्र अस्मत्पितः ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह; माता, पितामही, प्रपितामही तथा सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहके पिण्डोंपर भी सूत्रदान करके पृथक्-पृथक् सूत्रदानका संकल्प करे। बान्धवोंके सूत्रदानके संकल्पमें **ॐ अद्य नानानामगोत्राः बान्धवादयः गयायां ''''तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतद्वो वासः स्वधा**—कहकर

संकल्पजल छोड़े।

पिण्डपूजन—तदनन्तर सभी पिण्डोंका विविध उपचारोंसे एक साथ पूजन करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ....गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः ....देव्यः तथा द्वितीयगोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तथा च नानानामगोत्राः बान्धवादयः गयायां ....तीर्थे पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पका जलादि छोड़ दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिणदिशाकी ओर देखते हुए सभी पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

आशीष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे—**ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।**

ब्राह्मण-वचन—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिता, पितामह तथा प्रपितामहके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

इसी प्रकार माता, पितामही, प्रपितामही और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामह तथा बान्धवादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे।

सामान्य पिण्डदान

श्राद्ध एवं पिण्डदान करनेके अनन्तर सर्वसामान्यके लिये सामान्य पिण्ड भी देनेकी शास्त्रकी विधि है। दो पिण्ड बना ले तथा पिण्डासनके लिये वेदीसे अतिरिक्त कुशा बिछाकर पिण्डदान करे। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चाऽन्ये बान्धवा मृताः॥ १॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ २॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाता कुले मम। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे।

इसी प्रकार मोटक, तिल, जल तथा दूसरा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे।

पिण्ड-विसर्जन—पिण्डोंको उठाकर किसी पत्तलपर रखकर जलमें विसर्जित कर दे।

दक्षिणादानका संकल्प—सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा अथवा तन्निष्क्रयभूतद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा

च अन्येषां नानानामगोत्राणां बान्धवादीनां गयायां ....तीर्थे कृतैतत्तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थमेतानि रजतखण्डानि/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजितकर देना हो तो '**नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये**' कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितृगायत्रीका पाठ— निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

रक्षादीपनिर्वापण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जल अथवा किसी मिट्टीके पात्रसे ढककर दीप एक बारमें बुझा दे। सव्य होकर हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा हाथमें लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां बान्धवादीनां गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धसाङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

आचार्य बोले—ॐ स्वस्ति।

साक्षीश्रवणकर्म—श्राद्धके अन्तमें निम्न श्लोकोंसे भगवान् गदाधरकी प्रार्थना करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

कर्मका समर्पण—गयायां ....तीर्थे कृतेनानेन पिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ तीर्थप्राप्तिनिमित्तक पिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

तीर्थप्राप्तिनिमित्तक एकपिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध

गयातीर्थमें प्रत्येक वेदियोंमें तीन पक्ष अर्थात् सत्रह दिनोंतक श्राद्ध करनेकी शास्त्रकी आज्ञा है। समय और सामर्थ्यके अनुसार पार्वण, तीर्थश्राद्ध अथवा पिण्डदानात्मक श्राद्ध श्रद्धापूर्वक विधि-विधानसे करनेकी व्यवस्था शास्त्रने दी है, परंतु एक दिनमें कई वेदियोंपर पिण्डदान होनेके कारण समयाभाव होनेपर अन्तिम वेदियोंपर एकपिण्डदानात्मक श्राद्ध भी कर सकते हैं। जो व्यक्ति आधि-व्याधिके कारण अथवा समयाभावके कारण अशक्त हो जानेसे सभी वेदियोंपर पार्वण, तीर्थ अथवा पिण्डदानात्मक श्राद्ध करनेमें असमर्थ हों, उनके लिये समय आदिके प्रतिबन्धको शिथिल करके शास्त्रमें मात्र एकपिण्डदानात्मक श्राद्ध करनेकी व्यवस्था भी है। अपनी पूरी शक्ति और सामर्थ्यके अनुसार श्राद्ध करना चाहिये। एकपिण्डदानात्मक श्राद्धमें पितरोंको उद्दिष्टकर केवल एक पिण्ड दिया जाता है। आगे एकपिण्डदानात्मक श्राद्धकी प्रक्रिया लिखी जा रही है—

स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र (धोती तथा उत्तरीय—चादर, गमछा आदि) धारण कर ले और श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन—गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन—निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के—

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण—निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले—

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥

आचमन—ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। '**ॐ हृषीकेशाय नमः**' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम—प्राणायाम कर ले।

रक्षादीप-प्रज्वालन—पिण्डासनके दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे—

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना—अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥

ॐ गयायै नमः। ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार '**ॐ श्राद्धभूम्यै नमः**' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन—श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्‌का पूजन करनेका विधान है। अतः

शालग्राम-शिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार-पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पितकर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये—

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः—कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण—अक्षतोंके ऊपर जलसे भरे एक कलशको रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, तिल, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे कलशके जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनाꣳसि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥
ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनाꣳसि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वꣳहसः॥

नीवीबन्धन—पानके पत्ते या किसी पत्र-पुटकपर तिल, त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले—

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया।
यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि॥

प्रतिज्ञा-संकल्प—दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न प्रतिज्ञा-संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....देवीनां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अद्य च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादीनां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणा-मक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थमसद्गतीनां सद्गतिप्राप्तये सद्गतीनाञ्च अपुनरावर्तिविष्णवादिलोकप्राप्तिकामनया शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च गयायां ....तीर्थे तीर्थप्राप्तिनिमित्तकं एकपिण्डदानात्मकं श्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ—पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

पिण्डवेदी-निर्माण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी एक वेदी बनाये। वेदीको जलसे सींचकर पवित्र कर दे। उस समय बोले—

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः॥

रेखाकरण—बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे

कुशोंके मूलभागको पकड़कर '**ॐ अपहता असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः**'—इस मन्त्रसे वेदीमें उत्तरसे दक्षिणकी ओर एक रेखा खींचे और उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे।

अवनेजनपात्रस्थापन—अवनेजनपात्रके रूपमें एक दोनिया वेदीके पश्चिम भागमें रख दे। दोनियेमें जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ....गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ....देव्यः अथ च द्वितीयगोत्राः सपत्नीकाः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादयः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः गयायां ....तीर्थे एकपिण्डदानात्मकश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीपर खींची गयी रेखापर गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

कुशास्तरण—वेदीपर बनी रेखाके ऊपर समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बार विभक्त करके बिछा दे।

पिण्डनिर्माण—बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर पिण्डद्रव्यमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर एक पिण्ड बना ले और उसे किसी पत्तलपर रख ले।

पिण्डदान—पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका *स्पर्श किये हुए निम्न मन्त्र पढ़ते हुए*

पिण्डदान करे—

ॐ पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः। माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही॥
मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकादयः। तेषां पिण्डो मया दत्तो ह्यक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥

यह मन्त्र पढ़कर अवनेजनस्थानपर कुशके ऊपर पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

लेपभाग—लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशोंके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए द्रव्यको '**लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्**' कहकर रख दे। अन्तमें पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

सव्य होकर आचमनकर भगवान्का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो श्वास रोकते हुए निम्न मन्त्र पढ़े—

'अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्।'

उसी क्रमसे पुनः दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजःपुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और '**अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत**' यह मन्त्र पढ़े।

प्रत्यवनेजनदान—अवनेजनदानसे बचे हुए अवनेजनपात्रसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका दान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो जल डाल ले। प्रत्यवनेजनदानका संकल्प इस प्रकार है—

ॐ अद्य ……गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ……गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ……देव्यः अथ च द्वितीयगोत्राः सपत्नीकाः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादयः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः गयायां ……तीर्थे एकपिण्डदानात्मकश्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवनेनिग्ध्वं युष्मभ्यं नमः—बोलकर प्रत्यवनेजनजल पिण्डपर गिरा दे।

नीवीविसर्जन—नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे। भगवान्‌का स्मरण कर ले। अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान—बायें हाथसे सूत्र (कच्चा धागा) पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और **'एतद्वः पितरो वासः'**—कहकर पिण्डपर सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प—तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ……गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ……गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः ……देव्यः अथ च द्वितीयगोत्राः सपत्नीकाः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादयः ……शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः गयायां ……तीर्थे एकपिण्डदानात्मकश्राद्धे पिण्डस्थाने एतद्वो वासः स्वधा—कहकर पिण्डके ऊपर संकल्पजल छोड़ दे।

पिण्डपूजन—तदनन्तर पिण्डका विविध उपचारोंसे पूजन करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्)—कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्)—कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते)—कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः)—कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः)—कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्)—कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः)—कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः)—कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले)।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्)—कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्)—कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्)—कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्)—कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा)—कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प—हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्राः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः ....गोत्राः अस्मन्मातृपितामहीप्रपितामह्यः गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाः ....देव्यः तथा द्वितीयगोत्राः सपत्नीकाः अस्मन्मातामह-प्रमातामहवृद्धप्रमातामहादयः ....शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः गयायां ....तीर्थे एकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धपिण्डे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा—कहकर संकल्पका जलादि छोड़ दे।

जलधारा—सव्य होकर दक्षिणदिशाकी ओर देखते हुए पिण्डपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे—

ॐ अघोराः पितरः सन्तु।

आशीष-प्रार्थना—पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे—

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मण बोले—**सन्त्वेताः सत्या आशिषः।**

पिण्डपर जलधारा या दुग्धधारा—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पिण्डपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे—

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन्॥

पिण्डाघ्राण—नम्र होकर पिण्डको सूँघे।

सामान्य पिण्डदान

श्राद्ध एवं पिण्डदानके अनन्तर सर्वसामान्यके लिये सामान्य पिण्ड भी देनेकी शास्त्रकी विधि है। दो पिण्ड बना ले तथा निम्न श्लोकोंको पढ़कर पिण्डासनके लिये कुश बिछाकर पिण्डदान करे। हाथमें मोटक, तिल, जल तथा एक पिण्ड लेकर निम्न मन्त्रोंको पढ़े—

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चाऽन्ये बान्धवा मृताः॥ १॥
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः। क्रियालोपगता ये च जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा॥ २॥
विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताऽज्ञाता कुले मम। तेषामुद्धरणार्थाय तेभ्यः पिण्डं ददाम्यहम्॥ ३॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे।

इसी प्रकार मोटक, तिल, जल तथा दूसरा पिण्ड लेकर निम्न मन्त्र पढ़े—

आब्रह्मणो ये पितृवंशजाता मातुस्तथा वंशभवा मदीयाः।
वंशद्वये ये मम दासभूता भृत्यास्तथैवाश्रितसेवकाश्च॥
मित्राणि सख्यः पशवश्च वृक्षा दृष्टा ह्यदृष्टाश्च कृतोपकाराः।
जन्मान्तरे ये मम सङ्गताश्च तेभ्यः स्वधा पिण्डमहं ददामि॥

—ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे कुशोंके ऊपर रख दे।

पिण्डविसर्जन—पिण्डको उठाकर किसी पत्तलपर रखकर जलमें विसर्जित कर दे।

दक्षिणादानका संकल्प—सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा अथवा तन्निष्क्रयभूतद्रव्य लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ....गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ....देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां अथ च द्वितीयगोत्राणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ....शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादीनां गयायां ....तीर्थे कृतैतदेकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थं रजतखण्डं/रजतनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे।

पितृगायत्रीका पाठ— निम्न पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार पाठ करे—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च **महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥**

रक्षादीपनिर्वापण—अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जल अथवा मिट्टीके पात्रसे ढककर दीप एक बारमें बुझा दे। सव्य होकर हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान—सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल तथा दक्षिणा हाथमें लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रः ''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं ''''गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां ''''शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ''''गोत्राणामस्मन्मातृपितामहीप्रपितामहीनां ''''देवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वतीस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां ''''शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहादीनां गयायां ''''तीर्थे एकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धसाङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

आचार्य बोले—ॐ स्वस्ति।

साक्षीश्रवणकर्म—श्राद्धके अन्तमें निम्न श्लोकोंसे भगवान् गदाधरकी प्रार्थना करे—

साक्षिणः सन्तु मे देवा ब्रह्मेशानादयस्तथा। मया गयां समासाद्य पितॄणां निष्कृतिः कृता॥

आगतोऽस्मि गयां देव पितृकार्ये गदाधर। त्वमेव साक्षी भगवन्ननृणोऽहमृणत्रयात्॥ (वायुपुराण)

कर्मका समर्पण—गयायां ''''तीर्थे कृतेनानेन एकपिण्डदानात्मकतीर्थश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्स्मरण—निम्न मन्त्रोंसे प्रार्थना करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥
ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ तीर्थप्राप्तिनिमित्तक एकपिण्डदानात्मक तीर्थश्राद्ध पूर्ण हुआ॥

श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

अष्टोत्तरशतं नाम्नां विष्णोरतुलतेजसः ।
यस्य श्रवणमात्रेण नरो नारायणो भवेत् ॥ १ ॥
विष्णुर्जिष्णुर्वषट्कारो देवदेवो वृषाकपिः ।
दामोदरो दीनबन्धुरादिदेवोऽदितेःसुतः ॥ २ ॥
पुण्डरीकः परानन्दः परमात्मा परात्परः ।
परशुधारी विश्वात्मा कृष्णः कलिमलापहः ॥ ३ ॥
कौस्तुभोद्भासितोरस्को नरो नारायणो हरिः ।
हरो हरप्रियः स्वामी वैकुण्ठो विश्वतोमुखः ॥ ४ ॥
हृषीकेशोऽप्रमेयात्मा वाराहो धरणीधरः ।
वामनो वेदवक्ता च वासुदेवः सनातनः ॥ ५ ॥
रामो विरामो विरतो रावणारी रमापतिः ।
वैकुण्ठवासी वसुमान् धनदो धरणीधरः ॥ ६ ॥
धर्मेशो धरणीनाथो ध्येयो धर्मभृतां वरः ।
सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ॥ ७ ॥

सर्वगः सर्ववित्सर्वशरण्यः साधुवल्लभः। कौसल्यानन्दनः श्रीमान् रक्षःकुलविनाशकः॥ ८ ॥
जगत्कर्ता जगद्धर्ता जगज्जेता जनार्तिहा। जानकीवल्लभो देवो जयरूपो जलेश्वरः॥ ९ ॥
क्षीराब्धिवासी क्षीराब्धितनयावल्लभस्तथा। शेषशायी पन्नगारिवाहनो विष्टरश्रवाः॥ १० ॥
माधवो मथुरानाथो मोहदो मोहनाशनः। दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षो ह्यच्युतो मधुसूदनः॥ ११ ॥
सोमः सूर्याग्निनयनो नृसिंहो भक्तवत्सलः। नित्यो निरामयः शुद्धो नरदेवो जगत्प्रभुः॥ १२ ॥
हयग्रीवो जितरिपुरुपेन्द्रो रुक्मिणीपतिः। सर्वदेवमयः श्रीशः सर्वाधारः सनातनः॥ १३ ॥
सौम्यः सौम्यप्रदः स्त्रष्टा विष्वक्सेनो जनार्दनः। यशोदातनयो योगी योगशास्त्रपरायणः॥ १४ ॥
रुद्रात्मको रुद्रमूर्ती राघवो मधुसूदनः। इति ते कथितं दिव्यं नाम्नामष्टोत्तरं शतम्॥ १५ ॥
सर्वपापहरं पुण्यं विष्णोरमिततेजसः। दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यनाशनं सुखवर्धनम्॥ १६ ॥
सर्वसम्पत्करं सौम्यं महापातकनाशनम्। प्रातरुत्थाय विप्रेन्द्र पठेदेकाग्रमानसः॥
तस्य नश्यन्ति विपदां राशयः सिद्धिमाप्नुयात्॥ १७ ॥

॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामावलिः

१ ॐ विष्णवे नमः।
२ ॐ जिष्णवे नमः।
३ ॐ वषट्काराय नमः।
४ ॐ देवदेवाय नमः।
५ ॐ वृषाकपये नमः।
६ ॐ दामोदराय नमः।
७ ॐ दीनबन्धवे नमः।
८ ॐ आदिदेवाय नमः।
९ ॐ अदितेः सुताय नमः।
१० ॐ पुण्डरीकाय नमः।
११ ॐ परानन्दाय नमः।
१२ ॐ परमात्मने नमः।
१३ ॐ परात्पराय नमः।
१४ ॐ परशुधारिणे नमः।
१५ ॐ विश्वात्मने नमः।
१६ ॐ कृष्णाय नमः।
१७ ॐ कलिमलापहाय नमः।
१८ ॐ कौस्तुभोद्भासितोरस्काय नमः।
१९ ॐ नराय नमः।
२० ॐ नारायणाय नमः।
२१ ॐ हरये नमः।
२२ ॐ हराय नमः।
२३ ॐ हरप्रियाय नमः।
२४ ॐ स्वामिने नमः।
२५ ॐ वैकुण्ठाय नमः।
२६ ॐ विश्वतोमुखाय नमः।
२७ ॐ हृषीकेशाय नमः।
२८ ॐ अप्रमेयात्मने नमः।
२९ ॐ वाराहाय नमः।
३० ॐ धरणीधराय नमः।
३१ ॐ वामनाय नमः।
३२ ॐ वेदवक्त्रे नमः।
३३ ॐ वासुदेवाय नमः।
३४ ॐ सनातनाय नमः।
३५ ॐ रामाय नमः।
३६ ॐ विरामाय नमः।
३७ ॐ विरताय नमः।
३८ ॐ रावणारये नमः।
३९ ॐ रमापतये नमः।
४० ॐ वैकुण्ठवासिने नमः।
४१ ॐ वसुमते नमः।
४२ ॐ धनदाय नमः।

४३ ॐ धरणीधराय नमः।
४४ ॐ धर्मेशाय नमः।
४५ ॐ धरणीनाथाय नमः।
४६ ॐ ध्येयाय नमः।
४७ ॐ धर्मभृतां वराय नमः।
४८ ॐ सहस्त्रशीर्ष्णो नमः।
४९ ॐ पुरुषाय नमः।
५० ॐ सहस्त्राक्षाय नमः।
५१ ॐ सहस्त्रपदे नमः।
५२ ॐ सर्वगाय नमः।
५३ ॐ सर्वविदे नमः।
५४ ॐ सर्वशरण्याय नमः।
५५ ॐ साधुवल्लभाय नमः।
५६ ॐ कौसल्यानन्दनाय नमः।
५७ ॐ श्रीमते नमः।
५८ ॐ रक्षःकुलविनाशकाय नमः।
५९ ॐ जगत्कर्त्रे नमः।
६० ॐ जगद्भर्त्रे नमः।
६१ ॐ जगज्जेत्रे नमः।
६२ ॐ जनार्तिघ्ने नमः।
६३ ॐ जानकीवल्लभाय नमः।
६४ ॐ देवाय नमः।
६५ ॐ जयरूपाय नमः।
६६ ॐ जलेश्वराय नमः।
६७ ॐ क्षीराब्धिवासिने नमः।
६८ ॐ क्षीराब्धितनयावल्लभाय नमः।
६९ ॐ शेषशायिने नमः।
७० ॐ पन्नगारिवाहनाय नमः।
७१ ॐ विष्टरश्रवसे नमः।
७२ ॐ माधवाय नमः।
७३ ॐ मथुरानाथाय नमः।
७४ ॐ मोहदाय नमः।
७५ ॐ मोहनाशनाय नमः।
७६ ॐ दैत्यारये नमः।
७७ ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः।
७८ ॐ अच्युताय नमः।
७९ ॐ मधुसूदनाय नमः।
८० ॐ सोमाय नमः।
८१ ॐ सूर्याग्निनयनाय नमः।
८२ ॐ नृसिंहाय नमः।
८३ ॐ भक्तवत्सलाय नमः।
८४ ॐ नित्याय नमः।
८५ ॐ निरामयाय नमः।
८६ ॐ शुद्धाय नमः।
८७ ॐ नरदेवाय नमः।

८८ ॐ जगत्प्रभवे नमः।
८९ ॐ हयग्रीवाय नमः।
९० ॐ जितरिपवे नमः।
९१ ॐ उपेन्द्राय नमः।
९२ ॐ रुक्मिणीपतये नमः।
९३ ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
९४ ॐ श्रीशाय नमः।
९५ ॐ सर्वाधाराय नमः।
९६ ॐ सनातनाय नमः।
९७ ॐ सौम्याय नमः।
९८ ॐ सौम्यप्रदाय नमः।
९९ ॐ स्त्रष्ट्रे नमः।
१०० ॐ विष्वक्सेनाय नमः।
१०१ ॐ जनार्दनाय नमः।
१०२ ॐ यशोदातनयाय नमः।
१०३ ॐ योगिने नमः।
१०४ ॐ योगशास्त्रपरायणाय नमः।
१०५ ॐ रुद्रात्मकाय नमः।
१०६ ॐ रुद्रमूर्तये नमः।
१०७ ॐ राघवाय नमः।
१०८ ॐ मधुसूदनाय नमः।

॥ इति श्रीविष्णोरष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

गदाधरस्तोत्र

गदाधरं गयावासं पित्रादीनां गतिप्रदम् । धर्मार्थकाममोक्षार्थं योगदं प्रणमाम्यहम् ॥
देहेन्द्रियमनोबुद्धिप्राणाहङ्कारवर्जितम् । नित्यशुद्धं बुद्धियुक्तं सत्यं ब्रह्म नमाम्यहम् ॥
आनन्दमद्वयं देवं देवदानववन्दितम् । देवदेवीवृन्दयुक्तं सर्वदा प्रणमाम्यहम् ॥
कलिकल्मषकालार्तिदमनं वनमालिनम् । पालिताखिललोकेशं कुलोद्धरणमानसम् ॥
व्यक्ताव्यक्तविभक्तात्माविभक्तात्मानमात्मनि । स्थितं स्थिरतरं सारं वन्दे घोराघमर्दनम् ॥

जो गदा धारण करनेवाले, गयाके निवासी तथा पितर आदिको सद्‌गति देनेवाले हैं, उन योगदाता भगवान् गदाधरको मैं धर्म, अर्थ, काम और मोक्षकी प्राप्तिके लिये प्रणाम करता हूँ। वे देह, इन्द्रिय, मन, बुद्धि, प्राण और अहंकारसे शून्य हैं। नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, द्वैतशून्य तथा देवता और दानवोंसे वन्दित हैं। देवताओं और देवियोंके समुदाय सदा उनकी सेवामें उपस्थित रहते हैं, मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ। वे कलिके कल्मष (पाप) और कालकी पीड़ाका नाश करनेवाले हैं। उनके कण्ठमें वनमाला सुशोभित होती है। सम्पूर्ण लोकपालोंका भी उन्हींके द्वारा पालन होता है। वे सबके कुलोंका उद्धार करनेमें मन लगाते हैं। व्यक्त और अव्यक्त—सबमें अपने स्वरूपको विभक्त करके स्थित होते हुए भी वे वास्तवमें अविभक्तात्मा ही हैं। अपने स्वरूपमें ही उनकी स्थिति है। वे अत्यन्त स्थिर और सारभूत हैं तथा भयंकर पापोंका भी मर्दन करनेवाले हैं। मैं उनके चरणोंमें मस्तक झुकाता हूँ। (अग्निपुराण)